अमृत वचन
जीवन के सिद्ध सूत्र

(युगऋषि, वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं.श्री आचार्य श्रीराम शर्मा द्वारा दिए गये उद्‌बोधन का लिपिबद्ध स्वरूप)

संकलन-सम्पादन

ब्रह्मवर्चस

शांतिकुंज, हरिद्वार

प्रकाशक

वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (TMD)

गायत्री नगर, श्रीरामपुरम् शांतिकुंज, हरिद्वार

(उत्तराखण्ड) पिन-249411

प्रथम संस्करण

वसन्त पर्व, ८ फरवरी २०११

अमृत वचन-जीवन के सिद्ध सूत्र

संकलन-संपादन
ब्रह्मवर्चस

प्रथम संस्करण:
गुरुपूर्णिमा पर्व, 2014

पुनरावृत्ति सन् 2015

प्रतियाँ:-3000

मूल्य:- 20/-

प्रकाशक

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (TMD)

गायत्री नगर, श्रीरामपुरम् शांतिकुंज, हरिद्वार

(उत्तराखण्ड) पिन-249411

फोन- 01334- 260602, 260309, 260328, फैक्स- 260866

Web: www.awgp.org, Email: shantikunj@awgp.org

शुभकामना

परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी अपने परिजनों को अपना ज्ञानामृत हृदय की गहरी भावनाओं के साथ पिलाते रहे हैं। उनके प्रवचनों में उनके गहरे भाव एवं दर्द समाया हुआ है। उन्होंने जीवन निर्माण के सार-सूत्रों को अति सरल शब्दों में समझाया है। उनके ये शब्द हमारी सब समस्याओं का समाधान करने में सक्षम हैं, हमें महामानव, देव-मानव बनाने में, आध्यात्मिकता की ऊँची भाव स्थिति में ले जाने में पूर्ण सक्षम हैं, बस पूरे हृदय से इन शब्दों का अनुपालन किया जा सके। अपने आत्म सुधार के प्रयासों में ये शब्द उत्प्रेरक बनकर हमें प्रेरित एवं प्रोत्साहित करते रहेंगे। उनके प्रवचनों के प्रायः 5-5 मिनट के सार-अंश जो शान्तिकुञ्ज के प्रांगण में नित्य प्रातः गूँजते रहते हैं, उनकी अनेकों साधकों ने पुस्तक के रूप में पाने की उत्कंठा प्रकट की है। उनके ये शब्द 'अमृत वचन- जीवन के सिद्ध सूत्र' के रूप में प्रस्तुत हैं। आशा है, आप सब पाठकगण इस पुस्तक को पसन्द करेंगे, अन्यों तक भी पहुँचाएँगे।

—डॉ० प्रणव पण्ड्या

अनुक्रमणिका

अपने व्यक्तित्व को बदलिए

अपने आपको बदल लेना, आपके हाथ की बात है। परिस्थितियों को बदलना आपके हाथ की बात नहीं, लोगों को अपनी मरजी से बदलना आपके हाथ की बात नहीं। जो आपके हाथ की बात नहीं है, उसके लिये आप प्रयत्न करेंगे तो बेकार हैरान होते रहेंगे। आपके घर वालों को आपके आज्ञानुवर्ती बनना चाहिए, यह मत सोचिए। आप यह देखिए आप उन घर वालों के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन कर सकते हैं कि नहीं, बस इतना ही काफी है और आगे बढ़िए मत। परिस्थितियाँ आपके अनुकूल बन जायेंगी, मत सोचिए। परिस्थितियाँ कहाँ बन पाती हैं, आदमी की स्थिति के अनुरूप।

श्रीकृष्ण भगवान् सारे जीवन भर पुरुषार्थ तो करते रहे, पर परिस्थितियाँ कहाँ बनीं उनके साथ में, आप बताइए? गृह-कलह हुआ और सारे परिवार के लोग मारे गये, अंततः उनको अपना जो राज-पाट बड़ी मेहनत से जमाया था, सुदामा जी के हवाले करना पड़ा, तो बताइए आपकी परिस्थितियाँ अनुकूल हो सकती हैं? भगवान् की परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं हुईं तो अगर आप ये सपना देखते हैं कि हमारी मनोकामना पूरी हो जायेगी और हमारी इच्छानुकूल परिस्थितियाँ बदल जायेंगी, ऐसा आप सोचते हैं, तो आपको नहीं विचार करना चाहिए।

यह दुनिया आपके लिये बनी हुई नहीं है। आपकी इच्छा पूर्ति के लिये पात्रता की और पूर्व संचय-कृत्यों की जरूरत है, वरना ऐसा आप क्यों सोचते हैं कि सब आपकी इच्छानुकूल हो जायेगा। आप स्वयं को बदल दीजिए। क्या बदल दें? बूढ़े से जवान हो जायें? नहीं, ये आपके हाथ की बात नहीं। ये शरीर प्रकृति का बनाया हुआ है और प्रकृति उसकी मालिक है। वो जब चाहती है, पैदा करती है और जब चाहती है, समेट लेती है। आप प्रकृति के मालिक हैं क्या? बुढ़ापे को जवानी में बदल सकते हैं क्या, न। मौत को जिन्दगी में बदल सकते हैं क्या, न। आदमी की सीमा है और जिस सीमा से आप बँधे हुए हैं, आप उसी सीमा की बात कीजिए, उसी सीमा का विचार कीजिए तो पूरा होना भी सम्भव है। असीम बातों को सोचेंगे, असंभव बातों की कल्पनाएँ-मान्यताएँ बनाकर के बैठेंगे तो सिवाय हैरानी के आपके पल्ले पड़ने वाला नहीं है। आप हैरानी में न पड़ें,

जो उचित है, उसी को विचार करें, जो सम्भव है, उसी में हाथ डालें। आपके हाथों में ये सम्भव है कि अपने मन को बदल दें। अपने ढर्रे को बदल दें, अपने रवैयों को बदल दें, अपने सोचने के तरीके को बदल दें, अपने स्वभाव को बदल दें, यह बदल देना आपके लिये बिलकुल सम्भव है।

आप यहाँ से जायें तो आप एक ऐसी जिन्दगी लेकर जायें, जो सब किसी को बदली हुई मालूम पड़े। आकृति तो नहीं बदली जा सकती आपकी, पर प्रकृति बदल जायेगी। आकृति कैसे बदली जा सकती है? आकृति नहीं बदली जा सकती है। आपके शरीर की बनावट नहीं बदली जा सकती। आपका स्वभाव बदला जा सकता है।

अब तक तो आपकी जिन्दगी में दो काम शामिल रहे हैं—एक जिन्दगी के लिये काम शामिल रहा है, उसका नाम है-पेट भरना। दूसरे शब्दों में उसे लोभ कहते हैं। दूसरा काम आपके जिम्मे रहा है-प्रजनन। शादी कर लेना, ढेरों के ढेरों बच्चे पैदा करना, ढेरों के ढेरों बच्चों के बच्चे के वजन को कंधे पे उठाना। उस भारी वजन को उठाने के लिये उचित और अनुचित काम करते रहना। दिन और रात चिंता में डूबे रहना, पेट और प्रजनन के लिये। यही तो काम रहा है और बताइये, कौन-सा काम रहा। इन दो कामों के अलावा और आपने क्या काम कर दिया? चलिये, तीसरा एक और काम भी किया होगा आपने। अपने अहंकार की पूर्ति के लिये, ठाठ-बाट बनाने के लिये, लोगों की आँखों में चकाचौंध पैदा करने के लिये, हो सकता है आपने कुछ ऐसे काम किये हों, जिससे आपको बड़प्पन का आभास होता हो। बड़प्पन का आभास होता है। है नहीं बड़प्पन। दूसरों की आँखों में चकाचौंध पैदा करके आप किस तरीके से बड़े बन पायेंगे। बड़ा बनना तो अपने व्यक्तित्व की कीमत और व्यक्तित्व के मूल्य बढ़ा देने के ऊपर है। आँखों में चमक तो कोई भी पैदा कर सकता है। आँखों में चमक से क्या है? आँखों में चमक तो तस्वीरें भी पैदा कर लेती हैं, मूर्तियाँ भी पैदा कर लेती हैं। बीमार आदमी को सजाकर बिठा दिया जाये तो वो भी चमक पैदा कर लेता है। चमक पैदा करना भी कुछ काम है क्या? उसमें अपने सिवाय अहंकार की पूर्ति के दूसरा कुछ है ही नहीं। हम बड़े आदमी हैं, बड़े आदमी हैं। अरे, आप क्या बड़े आदमी हैं? मन आपका बड़ा नहीं है, व्यक्तित्व आपका बड़ा नहीं है, संस्कार आपके बड़े नहीं हैं तो बड़प्पन का स्थायित्व कैसे रह पायेगा? सारी जिन्दगी आपकी इन कामों में खतम हो गई है।

अब आप कृपा कीजिए। अपनी जिन्दगी में कुछ नये काम शामिल करिये। हम अपने स्वभाव को बदल दें, हम अपने चिंतन को बदल दें, हम अपने आचरण को बदल दें, अपने कुटुम्ब के प्रति जो रवैया है, जो आपके सोचने का तरीका है, उसको आप आसानी से बदल सकते हैं और आपको बदल ही देना चाहिए। अपने समाज को प्रगतिशील बनाने के लिये, उन्नतिशील बनाने के लिये कुछ न कुछ योगदान देना। ऐसा निर्धारण अगर करके आप ले जायें, ऐसा कार्यक्रम यहाँ से बनाकर ले जायें, ऐसी तैयारी में जाते ही आप जुट जायें, तो मैं ये कहूँगा कि आपका भविष्य इतना शानदार होगा कि आप देखकर के स्वयं दंग रह जायेंगे और जो भी आपके सम्पर्क में आयेंगे, वे सब ये कहते रहेंगे कि इस आदमी का कायाकल्प हो गया। आप ऐसा कर पायें तो सार्थक हो जाये, आपका ये शिविर। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शान्तिः ॥

संसार के वातावरण का सुधार वे ही कर सकेंगे, जिनने अपने आप को सुधार कर यह सिद्ध कर दिया हो कि उनकी सृजन-क्षमता असन्दिग्ध है।

लोग कैसे बने? कैसे बदलें? इस प्रयोग को सर्वप्रथम अपने ऊपर ही किया जाना चाहिए और बताया जाना चाहिए कि कार्य उतना कठिन नहीं, जितना कि समझा जाता है। हाथ-पैरों की हरकतें इच्छानुसार मोड़ी-बदली जा सकती हैं, तो कोई कारण नहीं कि अपनी निज की प्रखरता को सद्‌गुणों से सुसज्जित करके चमकाया-दमकाया न जा सके।

—जीवन साधना के स्वर्णिम सूत्र-पृ0-14

देवता बनिए, स्वर्ग में रहिए

उस आदमी का नाम देवता है, जो अपनी सुविधाएँ और अपनी सम्पदाओं को मिल-बाँटकर खाता है। देवता अकेले नहीं खाते। मिल-बाँट के खाते हैं और आपके पास कोई चीज है तो आप मिल-बाँट के खाइये। ज्ञान आपके पास है, तो उसका फायदा औरों को मिलने दीजिए। आपके पास पैसा है, तो मिल-बाँट के खाइये। हरेक को फायदा उठाने दीजिए। अपनी सम्पदा को बाँट के खाइये और दूसरों की मुसीबतों को बँटा लीजिए। देवता यही काम करते हैं। देवता देखे हैं न आपने। देवता के अंदर यही गुण होता है। देवता को पुकारते हैं। हे भगवान् जी, हमारी सहायता कीजिए। गणेश जी, हमको बुद्धि दीजिए। लक्ष्मी जी, हमको पैसा दीजिए। ये उनका स्वभाव है। क्या स्वभाव है? देते रहते हैं। देते रहते हैं, क्या मतलब? देते रहने का मतलब है, अगर उनके पास कोई चीज है तो लोगों को बाँटते रहते हैं और लोगों की मुसीबतों में हिस्सा बँटाते रहते हैं। हम को बुखार आ गया है, हम बीमार हैं, हे हनुमान् जी! हमारे बुखार को दूर कर दीजिए। करते हैं कि नहीं करते, यह बात अलग है; पर आपकी मान्यता तो यही है न, आपके दुःखों में हिस्सा बँटायेंगे। आपकी मुसीबत को दूर करेंगे। आपकी कठिनाइयों को ठीक कर देंगे और उनके पास कोई ज्ञान है, विद्या है तो वो आपको देंगे। देवता इन्हीं दो वजह से देवता हैं। आपकी मुसीबतों में हिस्सा बँटाते हैं-एक ओर अगर उनके पास कोई वैभव है तो आसानी से बाँट देते हैं। बस, मिल-बाँट के खाने का मजा देखा है आपने। इक्कड़-इक्कड़ जो अकेला ही खाता रहता है, वो पाप खाता रहता है। जो अकेले ही संचय करता रहता है, वो आदमी पाप संचय करता रहता है। जो अकेले की खुशी चाहता है, वो आदमी पाप संचय करता रहता है। इसीलिये हमारे यहाँ एक संयुक्त कुटुम्ब की प्रणाली है। सब मिल-बाँट कर खायेंगे, मिल-जुल कर रहेंगे, हिल-मिल के खायेंगे।

कमाने वाला अकेला थोड़े ही खाता है, सब मिल-बाँट के खा लेते हैं। कोई बच्चा है, कोई बीमार है, कोई बूढ़ा है। बस, ये जो पारिवारिक वृत्ति है, इसमें वसुधैव कुटुम्बकम् की मान्यता जुड़ी हुई है। वसुधैव कुटुम्बकम् की मान्यता क्या

है–आत्मवत् सर्वभूतेषु। आत्मवत् सर्वभूतेषु क्या है? एक ही है, आप दूसरों की मुसीबतों में हिस्सेदार हो जाइये–एक और अपनी सुविधाओं को बाँट दीजिए। हो गया आत्मवत् सर्वभूतेषु और हो गया वसुधैव कुटुम्बकम्।

ये सारे सिद्धांतों का निर्वाह इसी तरीके से होता है। इसीलिये आपकी कार्य पद्धति में और आपके चिंतन में ये बातें जुड़ी रहनी चाहिए कि हम किस तरीके से मिल–बाँट के खायेंगे और दूसरों की मुसीबतों में किस तरीके से हाथ बँटायेंगे। इसीलिये आपको अपना स्व, संकीर्ण स्व जो आपने कूपमण्डूक के तरीके से सीमित कर रखा है। फिर आप उसको विशाल बना देंगे। आप सबके हो जायेंगे, सब आपके हो जायेंगे। देवता हो जायेंगे। आपके लिये स्वर्ग आ जायेगा। अगर आप यह स्वर्ग नहीं खरीद सकते और आपने सीमा बन्धन, सीमा बन्धन; अपना ही खाना, अपना ही पहनना, अपना ही पैसा, अपना ही बेटा, अपना ही देश, अपना ही नाम करते रहेंगे तो आप बहुत छोटे रहेंगे, जलील आदमी रहेंगे और नरक में रहने वाली आत्माएँ जो यातनाएँ भुगतती हैं, मानसिक दृष्टि से वे सारी यातनाएँ आपको भुगतनी पड़ेंगी। शारीरिक दृष्टि से ठीक है, यह हो भी सकता है कि आप खाने–पीने का सामान इकट्ठा कर लें, कुछ पैसा इकट्ठा कर लें, लेकिन आप दुःखी रहेंगे। क्या करना चाहिए आपको?

एक और काम करना चाहिए। कौन–सा? खिलाड़ी की जिन्दगी जीनी चाहिए। खिलाड़ी की जिन्दगी आप जीयें। खिलाड़ी हारते भी रहते हैं और जीतते भी रहते हैं। टीम बना के खेलते रहते हैं। हार गया, ये हार गया। हार गया तो क्या है? चेहरे पर कोई शिकन ही नहीं। आप अपने चेहरे पे शिकन मत आने दीजिए। चिंताओं को और मुसीबतों की कल्पनाएँ करके, संदेह करके और भविष्य की आशंकाएँ करके हर समय आपका दिल घुटता रहता है। आप निश्चिन्त रहिए, निर्द्वन्द्व रहिए, हँसते रहिए, मुस्कुराते रहिए। आप हँसते और मुस्कुराते रहेंगे, निश्चिन्त रहेंगे तब, खिलाड़ी की तरह जिन्दगी जीयेंगे, तब। तब फिर, आपको मैं देवता कहूँगा। ये नाटक है, आप इसके पात्र हैं। दुनिया में आपको एक नाटक अदा करना है। आप नट के तरीके से तमाशा कीजिए। लोगों को मनोरंजन करने दीजिए। लेकिन आप निश्चिन्त होकर के राजा जनक के तरीके से अपनी मनःस्थिति को बनाये रखिए। फिर, मैं आपको स्वर्ग में निवास करने वाला कहूँगा।

भूत का चिंतन मत कीजिए। पिछली जो घटनाएँ हो गईं तो ठीक है। आपने कोई अच्छे काम कर लिये तो बार–बार प्रशंसा करने की जरूरत क्या है, आपके

साथ में किसी ने कोई बुराई कर ली या दुःख भुगत लिया तो बार–बार कहने की जरूरत क्या है? भूत सो भूत, गया सो गया। आप भूत पर मत विचार कीजिए। भूत से आप अनुभव तो इकट्ठा कर सकते हैं, लेकिन चिंता भविष्य की कीजिए। करना हमको क्या है, करना हमको क्या है, ये सोचते रहेंगे तो फिर मजा आ जायेगा।

बूढ़े आदमी भूतकाल का चिन्तन करते रहते हैं। बच्चे भविष्य की बात सोचते रहते हैं, लेकिन जवान आदमी वर्तमान की बात सोचते रहते हैं। आपको वर्तमान में क्या करना चाहिए? आज का दिन आप किस तरीके से बेहतरीन बना सकते हैं? अगर ये विचार आपके जी में आ जाये तो फिर मैं आपको यह कहूँगा कि आप स्वर्ग में निवास करने वाले आदमी हैं।

भविष्य की क्यों अनावश्यक कल्पना करें। योजना बना लीजिए। योजना बनाना अलग बात है। महत्त्वाकांक्षा बात अलग है। हमको एम. ए. करना है तो आप स्कीम बनाइये। एम. ए. नहीं हुए तो मर जायेंगे, एम. ए. नहीं हुए तो नाक कट जायेगी, एम. ए. नहीं हुए तो बात बिगड़ जायेगी, क्या बात बिगड़ जायेगी? दुनिया में बिना पढ़े–लिखे लोग भी तो हैं। आप मैट्रिक पास रह गये तो क्या आफत आ गई? नहीं साहब, हमारा ये हो जायेगा, हमारा वो हो जायेगा, ऐसे विचार करते रहेंगे तो मैं आपको नरकगामी कहूँगा। स्वर्ग में रहने वाले अपने वर्तमान का ध्यान करते हैं, भविष्य की तैयारी करते हैं, भूतकाल को भूल जाते हैं और खिलाड़ी के तरीके से जिन्दगी जीते हैं। अपने जीवन के तौर–तरीकों में ऐसा मौलिक परिवर्तन आप करके जाइये यहाँ से। मेरी आशा है, आप यही करेंगे। आज की बात समाप्त ।।

॥ ॐ शान्तिः ॥

इक्कीसवीं सदी भाव-संवेदनाओं के उभरने-उभारने की अवधि है। हमें इस उपेक्षित क्षेत्र को ही हरा-भरा बनाने में निष्ठावान माली की भूमिका निभानी चाहिए। यह विश्व उद्यान इसी आधार पर हरा-भरा फला-फूला एवं सुषमा सम्पन्न बन सकेगा। आश्चर्य नहीं कि वह स्वर्ग लोक वाले नन्दन वन की समता कर सके।

—सतयुग की वापसी - (क्रान्तिधर्मी साहित्य पुस्तकमाला-05)
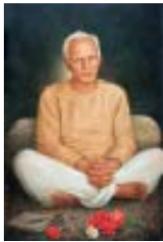
विधेयात्मक चिंतन-प्रगति का द्वार

यह दुनिया बड़ी खराब है। बहुत बड़ी जलील है। अच्छाई भी है, भगवान् का रूप भी है। ये तो मैं नहीं कहता कि भगवान् का रूप नहीं है। उसमें कमियाँ कम हैं क्या, बुराइयाँ कम हैं क्या? एक से एक दुष्ट, एक से एक बेईमान दुनिया में भरे पड़े हैं। तो क्या करें फिर! दूसरों के प्रति द्वेष? द्वेष करेंगे तो भी आप ही जल जायेंगे। ईर्ष्या? ईर्ष्या से भी आप जल जायेंगे। प्रतिशोध? प्रतिशोध से भी आप जल जायेंगे। इससे आप सामने वाले का जितना नुकसान करेंगे, उससे ज्यादा अपना नुकसान कर लेंगे। एक तो दूसरे आदमी ने आपको नुकसान पहुँचाया-नुकसान नम्बर एक। और एक आपने फिर नई बीमारियाँ और शुरू कर दीं। डाह की, ईर्ष्या की, प्रतिशोध की, घृणा की। ये सारी की सारी चीजों को आप बनाये रखेंगे, फिर आप कैसे जीयेंगे, बताइये न? बाहर से भी पिसेंगे और भीतर से भी पिसेंगे तो आप मरेंगे नहीं? आप ऐसे मत कीजिए।

आप क्या करें? आप बुराइयों को बरदाश्त करें? नहीं, यह तो मैं नहीं कहता कि बुराइयों को बरदाश्त करें। आप बुराइयों से संघर्ष जरूर कीजिए। फिर! संघर्ष करने का दूसरा तरीका है। कौन-सा? वो तरीका है, जो कि डॉक्टर अख्तियार करता है। किसके लिये? मरीज के लिये। मरीज के रोगों को मार डालने के लिये हर क्षण कोशिश करता है। रोग बचने न पाये, विषाणु बचने न पाये, रक्त का प्रदूषण बचने न पाये। लेकिन रोगी को नुकसान होने न पाये। आप रोगी को नुकसान पहुँचाये बिना उसकी बुराइयों को दूर करने के लिये बराबर जद्दोजहद करते हैं। जब आप किसी व्यक्ति विशेष को हानि पहुँचाने की बात सोचते हैं तो वो द्वेष हो जाता है और आप उसके दोषों को, दुर्गुणों को, कमियों को हटाने की बात सोचते हैं तब, तब कोई दिक्कत नहीं पड़ती तो आप ऐसे कीजिए न।

आपको एक और काम करना चाहिए। आपको आत्मनिर्भर होना चाहिए। अपने ऊपर डिपेन्ड कीजिए। क्या करें? बाहर के आदमियों से मत उम्मीदें

कीजिए, मत विश्वास कीजिए, मत अविश्वास कीजिए। आप यह मानकर चलिये कि उन्नति करेंगे तो हम ही करेंगे। किसी आदमी से आप यह आशा लगाये बैठे हैं, कि वो आदमी आपकी सहायता करेगा। क्यों आपकी सहायता करेगा?

आस बिरानी जो करै, जीयत ही मर जाये।

यह इतिहास की कहावत है। अब ठीक है, वक्त मिल जायेगा तो सहायता मिल भी सकती है, नहीं भी मिल सकती है और जो भी आप कदम उठायें, अपने पैरों पर भरोसा रख कर के उठायें। उम्मीद ये करें, ये काम हमको करना है और हम ही करेंगे। अगर आपका यह आत्मविश्वास है तब, तब फिर आपको आत्मनिर्भर व्यक्ति कहा जायेगा। सूरज किसी पर डिपेन्ड नहीं करता कि हमको कोई अर्घ्य चढ़ायेगा कि नहीं चढ़ायेगा। हवा किसी पर डिपेन्ड नहीं करती, किसी की अपेक्षा नहीं करती। चन्द्रमा किसी की अपेक्षा नहीं करता। जमीन किसी की अपेक्षा नहीं करती। आप किसी की अपेक्षा मत कीजिए, इसका अर्थ यह नहीं है कि आप सहयोगी जीवन न जीयें, परस्पर मिलना-जुलना न करें।

विधेयात्मक चिंतन, जिससे कि आदमी देवता बन जाते हैं। खराब आदमी है, उसको हम अच्छा बनायेंगे, सज्जन बनायेंगे, यह क्यों नहीं सोचते? खराब आदमी है, उसको मार डालेंगे, उसकी हत्या कर डालेंगे, यह क्यों सोचते हैं? यह मत सोचिए। आप दृष्टिकोण को बदलिये न। जो कुछ भी आपके पास मिला हुआ है, वह कम नहीं है। बहुत मिला हुआ है। आप देखिए न। जरा दूसरे जानवरों को देखिए न, कीड़े-मकोड़ों को देखिए न, पशु-पक्षियों को देखिए न। कैसी घिनौनी और कैसी गई-बीती और कैसी छोटी जिन्दगी व्यतीत करते हैं। फिर आप! आप क्यों ऐसी जिन्दगी जीयेंगे?

भगवान् ने तो आपको राजकुमार बनाया है न, आपको बुद्धि दी है न, आपको वाणी दी है न, आपको हाथ-पाँव दिये हैं न। आप तो घर में रहते हैं न। आपके पास जीविका है, पहली तारीख को तनख्वाह मिल जाती है, रोटी खा लेते हैं न। दूसरे जानवरों को देखिए। उन बेचारों को न कोई तनख्वाह है, न कोई नौकरी है, न कोई कपड़ा है, न कोई बोलने का ढंग है। इन सबकी तुलना में आपको कितना मिला हुआ है? आप इन पर खुशी नहीं मना सकते? आप प्रसन्न नहीं हो सकते? आपके चेहरे पर मुस्कुराहट नहीं आ सकती? कि जो हमारी वर्तमान परिस्थितियाँ हैं, उसमें हमको प्रसन्न रहने का हक है।

आप तो हमेशा अभावों को सोचते रहते हैं। अभावों को सोचने का अर्थ होता है–नरक। अभावों को ध्यान में नहीं रखना चाहिए, उसको दूर नहीं करना चाहिए। यह मैं नहीं कहता हूँ। मैं तो यह कहता हूँ। आप हमेशा अपने आपको अभावग्रस्त, अभावग्रस्त, दरिद्र और कंगाल मानते बैठे रहेंगे तो आप दरिद्र और कंगाल ही रह जायेंगे। आप मत अपने आपको दरिद्र मानिए और मत अपने आपको कंगाल मानिए। फिर आप ये मान के चलिये कि आप देवता हैं। देवता हुए, तो आप देने में समर्थ हैं। आपके पास देने को बहुत है। रुपया–पैसा हमारे पास कम है, तो पैसा कौन माँग रहा है आपसे? और पैसा देकर के आप क्या भला करेंगे आदमी का? आप दूसरों को प्यार दीजिए न, आप दूसरों को सम्मान दीजिए न। देखिए सम्मान की दुनियाँ कितनी प्यासी है। लोगों को प्रोत्साहन दीजिए न। देखिए आपका प्रोत्साहन पाकर के छोटे–छोटे आदमी क्या से क्या बन सकते हैं। देने के लिये कुछ कम है क्या? आप मेहनत दे दीजिए, आप लोगों के लिये सहानुभूति दे दीजिए। देने के लिये कुछ भी कम नहीं है। आपके पास देने की अगर मनोवृत्ति हो तो आप कुछ भी दे सकते हैं। आप चार रोटी खाते हैं, तीन रोटी खाइये और एक रोटी बचा दीजिए गरीबों के लिये। फिर आप देखेंगे, किस तरीके से आपको शान्ति मिलती है और किस तरीके से आप प्रसन्नता के नजदीक चले आते हैं।

भगवान् का नाम प्यार है। प्यार आप भीतर पैदा कीजिए न। जिस दिन आप प्यार पैदा करेंगे, उस दिन आपके मन में से एक ही उमंग और ऐसी हिलोरें उत्पन्न होंगी, कि हमको कैसे दूसरों की सहायता करनी चाहिए? जब दूसरों की सहायता करने के लिये आमादा होंगे तो आपको अपने में से कटौती करनी पड़ेगी, फिर साधु और ब्राह्मण का जीवन जीना पड़ेगा। ब्राह्मण किफायतसार को कहते हैं, मितव्ययी को कहते हैं, अपरिग्रही को कहते हैं, स्वल्प संतोषी को कहते हैं।

आप ब्राह्मण बनिए और भूदेव–पृथ्वी के देवताओं में अपने नाम को लगा दीजिए। और संत किसे कहते हैं? परोपकारियों को कहते हैं, लोकहित में लगे हुए आदमियों को कहते हैं। सत्प्रवृत्तियों में अपने आपको खपा देने वाले को संत कहते हैं। आप संत और ब्राह्मण के रूप में अथवा दोनों के संयुक्त जीवन–यापन करने के रूप में अगर आप जीयें तो मजा आ जायेगा। उम्मीद ऐसी है, आप यही करेंगे। आज की बात समाप्त ।।

॥ ॐ शान्तिः ॥

चिंतन का महत्त्व और स्वरूप

चिंतन उसे कहते हैं जिसमें कि भूतकाल के लिये विचार किया जाता है। भूतकाल हमारा किस तरीके से व्यतीत हुआ, इसके बारे में समीक्षा करिये। अपनी समीक्षा नहीं कर पाते आप। दूसरों की समीक्षा करना जानते हैं। पड़ोसी की समीक्षा कर सकते हैं, बीबी के दोष निकाल सकते हैं, बच्चों की नुक्ताचीनी कर सकते हैं, सारी दुनिया की गलती बता सकते हैं, भगवान् की गलती बता देंगे और हरेक की गलती बता देंगे। कोई भी ऐसा बचा हुआ नहीं है, जिसकी आप गलती बताते न हों। लेकिन अपनी गलती; अपनी गलती का आप विचार ही नहीं करते। अपनी गलतियों का हम विचार करना शुरू करें और अपनी चाल की समीक्षा लेना शुरू करें और अपने आपका हम पर्यवेक्षण शुरू करें तो ढेरों की ढेरों चीजें ऐसी हमको मालूम पड़ेंगी, जो हमको नहीं करनी चाहिए थी और ढेरों की ढेरों ऐसी चीजें मालूम पड़ेगी आपको, जो इस समय हमने जिन कामों को, जिन बातों को अपनाया हुआ है, उनको नहीं अपनाना चाहिए था।

मन की बनावट कुछ ऐसी विलक्षण है, अपना सो अच्छा, अपना सो अच्छा, बस। यही बात बनी रहती है। अपना स्वभाव भी अच्छा, अपनी आदतें भी अच्छी, अपना विचार भी अच्छा, अपना चिंतन भी अच्छा, सब अपना अच्छा, बाहर वालों का गलत। आध्यात्मिक उन्नति में इसके बराबर अड़चन डालने वाला और दूसरा कोई व्यवधान है ही नहीं। इसीलिये आप पहला काम वहाँ से शुरू कीजिए कि आत्म-समीक्षा।

एकान्त में चिंतन के लिये जब आप बैठें तो आप यह समझें कि हम अकेले हैं और कोई हमारा साथी या सहकारी है नहीं। साथी अपने स्थान पर, सहकारी अपने स्थान पर, कुटुम्बी अपने स्थान पर, पैसा अपने स्थान पर, व्यापार अपने स्थान पर, खेती-बाड़ी अपने स्थान पर; इन सबको अपने-अपने स्थानों पर रहने दीजिए। आप तो सिर्फ ये विचार किया कीजिए, हम पिछले दिनों क्या भूल करते रहे? रास्ता भटक तो नहीं गये, भूल तो नहीं गये, इसीलिये जन्म मिला था

क्या ? जिस काम के लिये जन्म मिला था, वही किया क्या ? पेट के लिये जितनी जरूरत थी, उससे ज्यादा कमाते रहे, क्या ? कुटुम्ब की जितनी जिम्मेदारियाँ पूरी करनी चाहिए थी, उसको पूरा करने के स्थान पर अनावश्यक संख्या में लोड बढ़ाते रहे क्या ? और जिन लोगों को जिस चीज की जरूरत नहीं थी, उनको प्रसन्न करने के लिये उपहार रूप में लादते रहे क्या ? क्यों ? वजह क्या है ? ये सब गलतियाँ हैं।

इसी तरीके से अपने स्वास्थ्य के लिये जो खान–पान, आहार–विहार जैसा रखना चाहिए था, वैसा रखा क्या ? चिंतन की शैली में जिस तरीके की शालीनता का समावेश होना चाहिए था, वो रखा गया क्या ? ना। न हमने अपने शरीर के प्रति कर्तव्यों का पालन किया, न अपने मस्तिष्क के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन किया, न हमने अपने कुटुम्बियों के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन किया। कर्तव्यों की दृष्टि से हम बराबर पिछड़ते हुए चले गये। जहाँ–जहाँ हम पिछड़ते हुए चले गये, उन सबको एक बारगी विचार कीजिए। क्यों ? विचार करने से क्या फायदा ? ये फायदा है कि गलतियाँ समझ में आयेंगी तो सुधार की भी गुंजाइश रहेगी। गलतियाँ समझ में नहीं आयेंगी तो आप सुधारेंगे क्यों ? इसीलिये समीक्षा जरूरी है, नाड़ी परीक्षा अपने आपकी कीजिए, भूतकाल के सम्बन्ध में।

पाप क्राइम को ही नहीं कहते। पाप उन्हें भी कहते हैं, जो कि जीवन को अस्त–व्यस्त बनाकर रखें। चोरी, डकैती, हत्या वगैरह ये तो बुरे कर्म हैं ही, लेकिन ये भी कम बुरा कर्म नहीं है कि आप आलस्य और प्रमाद में ही समय काट डालें। आप अपने स्वभाव को गुस्सेबाज बनाकर रखें, ईर्ष्या किया करें, चिंतन और मनन को अस्त–व्यस्त बनाकर रखें। ये भी कोई ढंग है। ये क्या है ? ये भी गलतियाँ हैं। व्यक्तिगत जीवन में आपको गुण, कर्म, स्वभाव सम्बन्धी गलतियाँ क्या हुईं और क्राइम, अपराध, जुल्म करने के सम्बन्ध में क्या भूलें हुईं, इन दोनों के बारे में एक बार विचार किया कीजिए। ये विचार करना बहुत जरूरी है। इससे, यह मालूम होता है कि हमारी गलतियाँ कहाँ हैं और हम कितना चूकते रहे हैं और चूक रहे हैं। इन चूकों को सुधारने वाला अगला कदम आता है— आत्म–परिष्कार।

आत्म–निरीक्षण के बाद में आत्म–परिष्कार का दूसरा नम्बर आता है। सुधार कैसे करें ? सुधार में क्या बात करनी होती है ? सुधार में रोकथाम करनी पड़ती है। मसलन, आप शराब पीते हैं तो आप बन्द कीजिए। नहीं साहब, हम

शराब नहीं पीयेंगे। आप बीड़ी पीते हैं, सिगरेट पीते हैं, अपना कलेजा जलाते हैं, तो विचार कीजिए। अब हम कलेजा नहीं जलायेंगे। आत्म–परिशोधन इसी का नाम है। जो गलतियाँ हुई हैं, उसके विरुद्ध आप बगावत खड़ी कर दें, रोकथाम के लिये आमादा हो जायें, संकल्प बल का ऐसा इस्तेमाल करें कि जो भूल होती रही हैं, अब हमसे न हों। इसकी स्कीम बनायें।

गलतियाँ न होने देने का तरीका क्या है? क्या हम करेंगे? अपने आप में जो कच्चाइयाँ आयेंगी, जब आपको कच्चाइयाँ यह मजबूर करेंगी कि जो करते रहे हैं, वही ढर्रा चलते रहना चाहिए। अपने साथ में पक्षपात और रियायत करने का जब आपका मन उठे, तब आप उस मन के विरोधी हो जाइये, मन को निग्रहीत कीजिये, मन को तोड़िए। मन से लड़ाई कीजिए। आत्म–परिष्कार इसी का नाम है। आत्म–निरीक्षण और आत्म–परिष्कार अथवा परिशोधन इन दो कार्यों को मिला देने से चिंतन की प्रक्रिया पूरी हो जाती है। यही कहना था आज आपसे।

॥ ॐ शान्तिः ॥

''बेटे! क्रान्तिधर्मी साहित्य मेरे अब तक के सभी साहित्य का मक्खन है। मेरे अब तक का साहित्य पढ़ पाओ या न पढ़ पाओ, इसे जरूर पढ़ना। इन्हें समझे बिना मिशन को न तो तुम समझ सकते हो, न ही किसी को समझा सकते हो।''.....वसंत पंचमी १९९० को वं. माताजी से - ''मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा - सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को- मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।''

—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

मनन का महत्त्व और स्वरूप

एकान्त सेवन में दूसरा वाला कदम उठाइये। उसका नाम है–मनन। मनन क्या? मनन के भी दो हिस्से हैं। चिंतन के जैसे दो हिस्से थे। ऐसे मनन के दो हिस्से हैं। एक हिस्से का नाम है–आत्म निर्माण। एक का नाम है–आत्म विकास। निर्माण में क्या? निर्माण उसे कहते हैं कि जो चीजें आपके पास नहीं हैं, चाहे जो स्वभाव, गुण और कर्म में जो बातें शामिल नहीं हैं, उसे शामिल कीजिए। मसलन, आप पढ़े नहीं हैं, विद्या नहीं है, अब आप कोशिश कीजिए। काहे को! कि आपको विद्या पढ़नी है। हम ईमानदारी से रहते हैं, बीड़ी नहीं पीते हैं, वो तो ठीक है आपकी बात, पर मैं यह पूछता हूँ, विद्या की जो कमी है, उसको आप क्यों पूरा नहीं करते? विद्या की कमी को जो पूरा नहीं करेंगे, तो उन्नति कैसे हो जायेगी? आपके ज्ञान का दायरा कैसे बढ़ेगा? आपकी बुद्धि का विकास कैसे होगा? इसीलिये यहाँ आत्म निर्माण के लिये भी ढेरों काम करने हैं। स्वास्थ्य आपका कमजोर है, इसी से तो काम नहीं चल जायेगा न, कि हम बीड़ी पीते रहें, हम बन्द कर देंगे। बन्द तो करनी चाहिए थी, पर एक और बात भी करनी पड़ेगी। आपको स्वास्थ्य संवर्धन करने के लिये आपके अपने आहार में क्रान्तिकारी परिवर्तन करना पड़ेगा। ब्रह्मचर्य धारण करना पड़ेगा। और व्यायाम का कोई नया तरीका अख्तियार करना पड़ेगा। ये जो नये तरीके अख्तियार करने हैं, किसके लिये? प्रगति के लिये। ये सब आत्म निर्माण में आते हैं।

कमी को पूरा करना है। कमी को सुधारना ही सब चीज नहीं है। कमी को पूरा भी तो कीजिए। सुधार लेंगे, इससे क्या बना? पूरा नहीं करेंगे? विद्या को आप नहीं पढ़ेंगे? स्वास्थ्य को सुधारेंगे नहीं? जन सम्पर्क बढ़ायेंगे नहीं? सेवा के लिये कदम बढ़ायेंगे नहीं? जो काम करने हैं, करेंगे नहीं। नहीं साहब! हमने गलती सुधार ली। गलती सुधारने से क्या मतलब? गलती को सुधारिए और अपनी योग्यताओं को, अपनी क्षमताओं को और अपनी भावनाओं को विकसित कीजिए। आत्म निर्माण में बराबर यह देखना पड़ेगा कि हमारे जीवन में क्या–क्या

कमी है और उस कमी को पूरा करना है। अपने स्वभाव को और आदतों को हम ठीक बनायें। अपने आपको बनाइये, अपने स्वास्थ्य को बनाइये, अपने व्यक्तित्व को बनाइये, अपने चरित्र को बनाइये, अपने स्वभाव को बनाइये, अपनी कार्यशैली को बनाइये। हर चीज बनाइये। इस बनाने के अलावा एक और भी ध्यान रखिए, आप अपने कुटुम्ब को बनाइये।

निर्माण केवल अपने आपका। हम अपने आप में सन्त बन जायेंगे और रामायण पढ़ेंगे और हम मिठाई नहीं खायेंगे। आपका कहना तो ठीक है, पर वो भी तो आपका अंग है। आप अकेले थोड़े हैं कोई। जो कुटुम्ब है, वो भी आपके साथ जुड़ा हुआ है। इसीलिये निर्माण उसका भी करना पड़ेगा। अगर आप उसका निर्माण नहीं कर सकते, सारे के सारे आपके घर वाले कमीने, उजड्ड, मूर्ख, दुष्ट बनकर रहेंगे तो फिर आपकी शान्ति कैसे स्थिर रहेगी, फिर आप भजन कैसे कर लेंगे, फिर आप अच्छी जिन्दगी कैसे जी लेंगे, फिर आप मीठे वचन का अभ्यास कैसे कर लेंगे ? जब हर आदमी हैरान होगा तो आपको गुस्सा क्यों नहीं आयेगा ? इसीलिये क्या करना चाहिए कि अपना व्यक्तिगत जीवन सुख और शान्तिमय बनाने के लिये अपने कुटुम्ब और परिवार के बारे में ठीक वो ही नीति निर्धारित कीजिए, जो अपने बारे में है।

वो भी तो अपने अंग हैं न। इन सबको बनाइये। क्या बनायें उनको ? एक ही बात बनाइये। उनके अंदर भलमनसाहत पैदा कीजिए, चरित्र निष्ठा पैदा कीजिए। आदर्श पैदा कीजिए, सत्प्रवृत्तियाँ पैदा कीजिए। सम्पन्न बन जाते हैं तो, न बन जाते हैं तो कुछ बनता-बिगड़ता नहीं है। गरीबी में भी लोगों ने शानदार जिन्दगियाँ जी हैं और अमीर रहते हुए भी आदमी ने इतने कलह उत्पन्न किये हैं कि स्वयं मर गया है और दूसरों को मार डाला है। इसीलिये सम्पन्नता की बात मैं नहीं कहता आपसे। निर्माण के लिये मेरा मतलब गुण, कर्म और स्वभाव से है। आप इन विशेषताओं को, आप आदमी की शालीनता को, आदतों को और चिंतन की शैली को बदलने के लिये जो कुछ कर सकते हैं, वो सब कीजिए।

परिवार के पंचशीलों में श्रमशीलता का नाम आता है, सुव्यवस्था का नाम आता है, मितव्ययिता का नाम आता है, सहकारिता का नाम आता है। ये सब बातें उसमें आती हैं। आप इन गुणों को स्वयं भी धारण कीजिए और घरवालों को भी दीजिये। यह व्यक्तित्व के और चरित्र के निर्माण करने का, चिंतन के निर्माण करने का एक शानदार तरीका है। आप उसको किस तरीके से कार्यान्वित कर

सकते हैं। उसके बारे में चिंतन और मनन के समय पर जब आप बैठें एकान्त में, तब ये विचार किया कीजिए।

एक और धारा है, जिसे मनन का दूसरा हिस्सा कह सकते हैं। उसका नाम है–आत्म विकास। आत्म विकास का क्या मतलब? आत्म विकास का मतलब ये है कि अपने आपका, अपने अहं के दायरे को बढ़ा देना। लोगों का दायरा बहुत छोटा है कूपमण्डूक के तरीके से। अपने शरीर को ही अपना मानते हैं। ये नहीं मानते कि हम समस्त समाज के घटक मात्र हैं। रक्त के एक कण की क्या कीमत हो सकती है? आप बताइये। रक्त के सारे कणों का समूह जब मिल जाता है, तो ही तो खून का संचार होता है। एक कण जरा सा निकाल दें, क्या इकाई है बिचारे की? संयुक्त होने पर ही बात बनती है। इसीलिये अपने आपके दायरे को सीमित मत कीजिए। आप संकीर्ण स्वार्थपरता से ऊँचा उठने की कोशिश कीजिए। अपने ''मैं'' के स्थान पर ''हम'' कहना सीखिए। ''हम सब'', ''वी'', ''हम सब''। अगर आप यही कहेंगे ''मैं'', ''मैं'', ''मैं'' तो आप बकरे के तरीके से सीमाबद्ध हो जायेंगे और कूपमण्डूक के तरीके से एक ऐसे छोटे दायरे में घिरे रहेंगे जिसमें कि आप और आपका कुटुम्ब बस इतने ही आदमी रह जायेंगे। आपका समाज से और शायद भगवान् से कोई सम्बन्ध नहीं रह पायेगा। इसलिये अपने आपका दायरा विकसित कीजिए।

''हम सबके'', ''सब हमारे'' इस तरीके से विचार कीजिए। आप इस तरीके से विचार कीजिए—''आत्मवत् सर्वभूतेषु''। यह सारा संसार हमारे ही समान है। सबके सहयोग से हम जिन्दा हैं और हमारा सहयोग सबको मिलना चाहिए। ये अगर आप विचार करेंगे तो आप समाजनिष्ठ होते चले जायेंगे। चरित्रवान् नागरिक होते हुए चले जायेंगे। देश, धर्म और समाज एवं संस्कृति के प्रति आप अपना लगाव व्यक्त करने लगेंगे और उनकी समस्याओं को भी अपनी समस्याएँ मानने लगेंगे। तो ये क्या हो गया? ये आत्मा का विस्तार। जो चीजें आपको अपनी मालूम पड़ती हैं, उनमें प्रसन्नता होती है और उनको आप अपना समझते हैं। लेकिन अगर आप सबको अपना मान लें तब, आपको कितना गर्व और गौरव अनुभव होगा। सूरज भी आपका, चाँद भी आपका, सितारे भी आपके, नदी भी आपकी, पहाड़ भी आपका, जमीन भी आपकी, सारे इन्सान भी आपके, सारा कुटुम्ब भी आपका, सारा संसार आपका। जिस दिन आप सबको अपना मानने लगेंगे और अपने को सबका मानने लगेंगे, तब फिर आप जरा देखना तो

सही कैसा मजा आता है, कैसा आनन्द आता है? जीवन में, गतिविधियों में कैसा हेर–फेर होता है और आपकी प्रसन्नता किस तरीके से जमीन से आसमान तक छूने लगती है? ऐसी शक्ति पैदा कीजिए। बस, यही कहना था, आज आपसे।

॥ ॐ शान्तिः ॥

प.पू. गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का कहना था- ‘‘हमारे विचार, क्रान्ति के बीज हैं। ये थोड़े भी दुनियाँ में फैल गए, तो अगले दिनों धमाका कर देंगे। सारे विश्व का नक्शा बदल देंगे।..... मेरे अभी तक के सारे साहित्य का सार हैं।..... सारे जीवन का लेखा-जोखा हैं।..... जीवन और चिंतन को बदलने के सूत्र हैं इनमें।..... हमारे उत्तराधिकारियों के लिए वसीयत हैं।..... अभी तक का साहित्य पढ़ पाओ या न पढ़ पाओ, इसे जरूर पढ़ना। इन्हें समझे बिना भगवान के इस मिशन को न तो तुम समझ सकते हो, न ही किसी को समझा सकते हो।..... प्रत्येक कार्यकर्ता को नियमित रूप से इसे पढ़ना और जीवन में उतारना युग-निर्माण के लिए जरूरी है। तभी अगले चरण में वे प्रवेश कर सकेंगे। ..... यह इस युग की गीता है। एक बार पढ़ने से न समझ आए तो सौ बार पढ़ना और सौ लोगों को पढ़ाना। उनसे भी कहना कि आगे वे 100 लोगों को पढ़ाएँ। हम लिखें तो असर न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता। जैसे अर्जुन का मोह गीता से भंग हुआ था, वैसे ही तुम्हारा मोह इस युग-गीता से भंग होगा।..... मेरे जीवन भर के साहित्य इस शरीर के वजन से भी ज्यादा भारी है। मेरे जीवन भर के साहित्य को तराजू के एक पलड़े पर रखें और क्रान्तिधर्मी साहित्य को दूसरे पलड़े पर, तो इनका वजन ज्यादा होगा।..... महाकाल ने स्वयं मेरी उँगलियाँ पकड़कर ये साहित्य लिखवाया है।..... इन्हें लागत मूल्य पर छपवाकर प्रचारित-प्रसारित शब्दशः-अक्षरशः करने की सभी को छूट है, कोई कापीराइट नहीं है।..... मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’’

उपासना का महत्त्व

व्यक्ति की उन्नति वास्तव में बाहर से नहीं होती है। जड़ें पेड़ की जमीन के नीचे होती हैं, दिखाई नहीं पड़तीं। जड़ अगर छोटी है, तो पेड़ बढ़ नहीं सकता। आदमी का जितना विस्तार आपको दिखाई पड़ता है, वास्तव में उसके शरीर का विस्तार नहीं है। वास्तव में उसके पैसे का विस्तार नहीं है। वास्तव में उसकी अकल का विस्तार नहीं है। पर आदमी का विस्तार है, आदमी की अंत:चेतना का विस्तार। अंत:चेतना जिसकी छोटे स्तर की हो गई तो आदमी घटिया का घटिया ही रह जायेगा। कमीने का कमीना ही रह जायेगा। छोटे का छोटा ही रह जायेगा। कोई और आदमी, दूर से उसकी सहायता भी करना चाहे तो कर नहीं सकेगा, अगर भीतर वाला अंतरंग आदमी का विकसित न हो सका तो।

गायत्री मंत्र के चार चरणों में इसी रहस्य का उद्घाटन किया गया है कि हमारी अन्त:चेतना विकसित होनी चाहिए। उपासना का अर्थ मैं आपको समझा चुका, पास बैठ जाना। किसके पास बैठ जाना? जिसके हम पास हम बैठ जाते हैं, उसके रंग में हम रंग जाते हैं। खराब लोगों की संगति में हम बैठते हैं, खराब लोगों के रंग में रंग जाते हैं। हमारे बच्चे वाहियात और निकम्मे हो जाते हैं। पड़ोस के लड़के, वाहियात लड़के हमारे भोले-भाले लड़के को बहका ले जाते हैं। सिनेमा दिखाते हैं, बीड़ी पिलाते हैं, और थोड़े दिनों बाद ऐसा बना देते हैं कि सबसे वाहियात और सबसे निकम्मा लड़का हो जाता है हमारा। संगति का प्रभाव! हाँ, संगति का प्रभाव होता है। बुरी संगति का भी प्रभाव हो सकता है और अच्छी संगति का भी। रामायण में एक चौपाई आती है—

''काक होहिं पिक बकहु मराला।''

संगति का प्रभाव देखिए—कौआ कोयल हो जाते हैं, और बगुले मराल-हंस हो जाते हैं। उपासना मीन्स संगति। किसकी संगति, भगवान् की संगति। भगवान् की कैसी संगति? भगवान् की ऐसी संगति कि भगवान् की विशेषताएँ,

हमारे जीवन में आयें। भगवान् की अगर विशेषताएँ हमारे जीवन में न आ सकीं और हमने ये कोशिश न की, कि भगवान् की विशेषताएँ हमारे भीतर में आयें और हमने उल्टी कोशिश की। क्या उल्टी कोशिश? जैसे कि हम और आप करते हैं। हमारा कमीनापन, हमारा घटियापन, भगवान् पर हावी जो जाए। जैसा हम चाहते हैं, वैसा ही भगवान् बन जाए। जैसे निकम्मे हम हैं, जैसे पाजी हम हैं, जैसे दुष्ट हम हैं, जैसे अनाचारी हम हैं, ठीक उसी तरह का भगवान् बन जाए और जो हम चाहते हैं, वो पूरा करे। आप ये चाहते हैं? भगवान् पूरा करे आपकी मर्जी। आप इसी लायक हैं, कि आपकी मर्जी भगवान् को पूरा करनी चाहिए।

आप धूप बत्ती खिलाते हैं, इसके बदले में ये हिमाकत करेंगे कि भगवान् को हमारी मर्जी पर चलना चाहिए। आप धूप बत्ती की रिश्वत देकर के जैसा भी मर्जी चाहे, वैसा भगवान् को चलाना चाहते हैं। ये नहीं हो सकता। ये गलतफहमी है। लोगों के दिमाग पर न जाने कहाँ से यह गलतफहमी हो गयी कि बच्चे के तरीके से भगवान् को बहकाया जा सकता है और बच्चे के तरीके से भगवान् को फुसलाया जा सकता है। जो भी हम चाहते हैं, अपनी मर्जी की बात कराने के लिये रजामन्द कराया जा सकता है। ये सम्भव है? ये बेटे, सम्भव नहीं है। मान लीजिए, हम सब हनुमान् जी के भक्त हैं, और हम ये हनुमान् जी से प्रार्थना करते हैं कि हमारा पड़ोसी मर जाये, ये हमको बहुत दुःख देता है और दूसरा पड़ोसी कहे, ये हमारा पड़ोसी मर जाये, क्योंकि हमको बहुत दुःख देता है। दोनों भगत हैं न। हनुमान् को तो इस बात की तमीज नहीं है कि हमको मनोकामना पूरी करते समय पे ये विचार करना चाहिए कि कौन मुनासिब माँग रहा है, कौन गैर मुनासिब माँग रहा है? कौन ड्यू माँग रहा है, कौन अनड्यू माँग रहा है? अब बताइये। हमारी मनोकामना पूरी करके पड़ोसी को मारेगा कि पड़ोसी की मनोकामना पूरी करके हमको मारेगा। क्या करेगा हनुमान्? बताइये आप। परेशान करते हैं हनुमान् को आप? ऐसा नहीं हो सकता। मनोकामना के लिये पूजा नहीं, बेटे। अगर मनोकामना के लिये पूजा है तो बन्द कीजिए।

मित्रो! सारे के सारे देश में अज्ञान? अध्यात्म के नाम पर अज्ञान? अध्यात्म तो अज्ञान के निवारण करने के लिये बनाया गया था। ये क्या आफत आ गई, ये क्या हो गया? उलटा अज्ञान! उलटा अज्ञान अध्यात्म में समाविष्ट हो गया। ऐसा नहीं होना चाहिए था। तो क्या होना चाहिए?

मित्रो! पानी बरसता है, हर चीज मुलायम हो जाती है और गीली हो जाती है, तो मैं ये पूछता हूँ कि चट्टान गीला होता है कि नहीं होता? नहीं साहब, नहीं होता और चट्टान में से पत्ता पैदा होता है? नहीं होता। उनको पानी से फायदा उठाने के लिये अपने आपको अनुकूल बनाना पड़ेगा। ये सिद्धान्त अगर समझ में आ गया तो बात आगे बढ़े और अगर आपने ये ख्याल कर रखा है कि हम जैसे भी कुछ हैं, उसी तरह से बने रहना चाहते हैं और हमको अपने आप में बदलने की कोई जरूरत नहीं है। भगवान् को बदलना चाहिए। भगवान् को अपने कायदे बदलने चाहिए। भगवान् को अपने कानून बदलने चाहिए। भगवान् को अपने नियम बदलने चाहिए। भगवान् को अपनी मर्यादा बदलनी चाहिए। क्यों? क्योंकि हम चलाते हैं—हुकुम।

हुकुम मीन्स मनोकामना। मनोकामना मीन्स हुकुम। आप हुकुम चलाते हैं? आप भगवान् के बॉस हैं? आप भगवान् पर हुकुम चलाना चाहते हैं? आप भगवान् को अपनी मर्जी पर चलाना चाहते हैं? क्योंकि आप हनुमान् चालीसा का पाठ करते हैं और आप धूप बत्ती दिखाते हैं। इसीलिये आप चाहते हैं कि भगवान् को आपकी मर्जी पर चलना चाहिए। ऐसा नहीं हो सकता। अध्यात्म क्या है? अध्यात्म ये है कि भगवान् की मर्जी के मुताबिक़ हमको ढलने के लिये कोशिश करनी चाहिए। हमको अपने आपकी पात्रता का ऐसा विकास करना चाहिए ताकि भगवान् का अनुग्रह, भगवान् की कृपा प्राप्त करने में हम समर्थ हो सकें।

॥ ॐ शान्तिः ॥

अपने अनन्य आत्मीय प्रज्ञा परिजनों में से प्रत्येक के नाम हमारी यही वसीयत और विरासत है कि हमारे जीवन से कुछ सीखें। कदमों की यथार्थता खोजें, सफलता जाँचें और जिससे जितना बन पड़े अनुकरण का, अनुगमन का प्रयास करें। यह नफे का सौदा है, घाटे का नहीं।

—हमारी वसीयत और विरासत

हंस बनिए

अपने यहाँ गायत्री माता का प्रशिक्षण दिया जाता है। गायत्री की उपासना में भी लगे हुए हैं। लेकिन आप भूल जाते हैं, गायत्री किसके कंधे पर सवार होती है और कौन गायत्री को अपने इशारे पर नचाये-नचाये फिरता है। गायत्री माता की तसवीर का आप रोज ध्यान करते हैं। इस तसवीर में उसका वाहन देखा है न आपने। इस वाहन का नाम है-हंस। हंस के ऊपर गायत्री माता सवारी करती हैं, ये बात शायद आपको समझ में न आये। क्योंकि, इन्सान के बराबर शरीर जिसका है, वो एक जानवर पर, पशुओं पर तो सवारी कर सकते हैं, लेकिन पक्षियों पे सवारी नहीं कर सकते। घोड़े पे आप बैठ सकते हैं, गधे पे आप बैठ सकते हैं, हाथी पे बैठ सकते हैं, ऊँट पर बैठ सकते हैं, भैंसे पर बैठ सकते हैं। इन पे तो बैठ सकते हैं। लेकिन आप बताइये किसी पक्षी पे जिसका वजन, बेचारे का नहीं के बराबर होता है, उसके ऊपर कैसे आदमी बैठ पायेगा?

ये एक अलंकार है। इसमें यह बताया गया है कि हंस उस व्यक्ति का नाम है, जो उचित और अनुचित का फर्क करना जानता है। आपको उचित और अनुचित का फर्क करना चाहिए। लोगों के रास्ते पर चलने के बनिस्बत आपको अलग खड़े होकर देखना चाहिए कि मुनासिब रास्ता क्या है, मुनासिब तरीके क्या हैं, मुनासिब क्या है? लोग गलती करें, तो आप क्या कर सकते हैं? आज तो गलतियों का ही जमाना है। आप पानी के बहाव में तिनके के तरीके से बहते हुए चले जायें। भला ये भी कोई समझदारी है? आप हवा में उड़ते हुए पत्तों के तरीके से उड़ते हुए चले जायें, भला ये भी कोई समझदारी हुई। आपको वजनदार होना चाहिए। आपको अपनी जिन्दगी के बारे में फैसले स्वयं करने चाहिए। अपने रास्ते का चुनाव करने वालों में आपकी हिम्मत आपकी सहायक होनी चाहिए।

ईमान और भगवान् दो चीजें ऐसी हैं, जिनकी सहायता से आप बड़े से बड़े फैसले कर सकते हैं। दुनिया में तो आमतौर से गलत काम होते हैं। लोग आमतौर से अपने आपको शरीर समझते हैं और शरीर की खुशहाली के लिये जो भी बुरे से बुरा काम हो सकता है, सब करते हैं। लोग तो ऐसे बेअकल हैं कि लोगों को

आज का फायदा दिखाई पड़ता है, कल का नुकसान कहाँ दिखाई पड़ता है? जितनी भी सामाजिक कुरीतियाँ हैं, इसमें क्या बात है? जरा आप बताइये। आज का फायदा, कल का नुकसान। आप भी यही करेंगे? ना। लोगों के रास्ते से हटिए। लोगों के रास्ते से हटकर के, अलग खड़े होकर के नये ढंग से विचार करना शुरू कीजिए कि क्या मुनासिब है और क्या मुनासिब नहीं है? आपका भविष्य किन बातों से बनता है और किन बातों से बनता नहीं है? अगर आप यह बात तय करने लगेंगे, तो मैं आपको ज्ञानवान् कहूँगा। ज्ञानवानों की आपने तवारीख पढ़ी है न।

भगवान् बुद्ध का नाम सुना है? भगवान् बुद्ध में क्या विशेषता हुई, भगवान् से क्या वरदान मिला, इनको क्या विशेष सम्पदा मिली? आप उनके जीवन को पढ़िए। बोधि वृक्ष के नीचे, एक पेड़ के नीचे, जिसके नीचे उन्होंने तप किया था, उनको एक खास चीज मिल गई थी। उस खास चीज का नाम था—विवेक। दूर की बात समझने का उनको माद्दा मिल गया। उन्होंने कहा, 'सारी दुनिया से प्रभावित होना नहीं है। हमको दूसरों को प्रभावित करना है। दूसरों की मुनासिब मान भी सकते हैं, लेकिन अधिकांश बातें—खासतौर से जीवनयापन करने के सम्बन्ध में, जीवन की सम्पदाओं का उपयोग करने के सम्बन्ध में अधिकांश लोगों की राहें गलत हैं, लोगों के ढर्रे गलत हैं।' अपने आपको भगवान् बुद्ध ने अलग से खड़ा करके देखना शुरू किया और जमाने की ओर से आँखें बन्द कर लीं और स्वयं अपने भीतर देखा और अपनी जिम्मेदारियों को देखा, अपने भविष्य को देखा, अपने कर्तव्यों को देखा और उन्होंने वो फैसले किये, जिसके आधार पर एक सामान्य राजकुमार भगवान् का अवतार कहलाने में समर्थ हुआ।

उस जमाने में क्या होता था, उन्होंने जरा भी विचार नहीं किया। उन्होंने यह कहा कि मुनासिब क्या है? जो मुनासिब था, वह इन लोगों से कहा। यज्ञों में हिंसा होती है, ना। हम हिंसा नहीं करेंगे। यज्ञ की बात वेदों में लिखी है तब। भगवान् बुद्ध वेदों के बारे में जानकार नहीं थे। तो उन्होंने कहा, "वेद में ऐसा लिखा है तो वेद को आपको नहीं मानना चाहिए।" फिर लोगों ने कहा, 'वेद तो भगवान् ने बनाये हैं।' तो उन्होंने ये कहा, "अगर भगवान् ने ऐसे वेद बनाये हैं, जिसमें कि नैतिक सिद्धान्तों का परिपालन नहीं हुआ है, तो फिर ऐसे भगवान् को मानने की आवश्यकता क्या है? तो उन्होंने भगवान् को मानने से इन्कार कर दिया। कहने

का अर्थ ये है कि उन्होंने विवेक को, बुद्ध का अर्थ है—विवेक, ठीक बात, वास्तविकता। वास्तविकता को उन्होंने अंगीकार कर लिया और उन्होंने यह फैसला कर लिया कि जो वास्तविकता होगी, सच्चाई होगी, हम सिर्फ उसी बात को मानेंगे। इसी का नाम है—आत्मज्ञान। इसी का नाम है—ब्रह्मविद्या। इसी का नाम है—प्रज्ञा। इसी का नाम है—ऋतम्भरा।

मैं आपसे यही निवेदन कर रहा था। गायत्री की महत्ता आपने जानी है तो उसका वाहन बनना शुरू कीजिए। उसके वाहन की दो ही तो विशेषता है। एक तो यह है कि नीर और क्षीर को अलग कर देता है। पानी और दूध को अलग कर देता है। इस दुनिया में जो कुछ भी मिला हुआ है, घपला है। सब गुड़-गोबर मिला हुआ है। कहीं सच्चाई की झलक दिखाई पड़ती है और उसी के साथ में झूठ और बेईमानी का कितना गहरा पुट दिखाई पड़ता है। आप अलग किस तरीके से करेंगे? आपकी विवेकशीलता के माध्यम से यह सम्भव है कि आप दोनों को अलग कर दें। राजहंस के बारे में ये बताया गया है कि "या हंसा मोती चरे, या लंघन मर जाये"। लंघन मरना ठीक है।

अगर आप ईमानदारी से नहीं कमा सकते, मुनासिब जिन्दगी नहीं जी सकते तो ऐसी जिन्दगी जीने से क्या फायदा? आप नहीं जीयें। नहीं जीने से मेरा मतलब ये है, आप गरीबी में गुजारा कर लें। कंगाली में गुजारा कर लें। तकलीफ में गुजारा कर लें। तकलीफ में गुजारा ढेरों आदमी करते हैं। कोई हारी-बीमारी से मरता है, कोई जेल-खाने चला जाता है, किसी के बाल-बच्चे खराब हो जाते हैं, किसी के ऊपर और मुसीबतें आ जाती हैं। ढेरों आदमी इस दुनिया में ऐसे हैं, जो किसी तरह ऐसी मुसीबतें उठाते हैं। आप सच्चाई की वजह से, ईमानदारी की वजह से और दानतदारी की वजह से अगर मुसीबत उठा लें तो क्या हर्ज की बात है? सच्चाई की थोड़ी सी झलक और बेईमानी का अधिक से अधिक माद्दा, यही तो लोक व्यवहार है। दुनिया यही तो है। आप अलग कीजिए और हंस बनने की कोशिश कीजिए।

॥ ॐ शान्तिः ॥

संकल्प जगाएँ-ऊँचे उठें

सृष्टि का कुछ ऐसा विलक्षण नियम है, कि पतन स्वाभाविक है और उत्थान कष्टसाध्य बनाया गया है। पानी को आप छोड़ दीजिए, नीचे बहता हुआ चला जायेगा। इसके लिये और आपको कुछ नहीं करना पड़ेगा। नीचे गिरने में कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती है और कोई प्रयास नहीं करना पड़ता है। ऐसा ही संसार का कुछ विलक्षण नियम है। पतन के लिये, बुरे कर्मों के लिये आपको ढेरों के ढेरों साधन मिल जायेंगे, सहकारी मिल जायेंगे, किताबें मिल जायेंगी और कोई नहीं मिलेगा तो आपके पिछले जन्म-जन्मांतरों के संग्रह किये हुए कुसंस्कार ही इस मामले में आपकी बहुत मदद करेंगे। वो आपको गिराने के लिये बराबर प्रोत्साहित करते रहेंगे। पाप-पंक में घसीटने के लिये बराबर आपका मन चलता रहेगा। इसके लिये न किसी अध्यापक की जरूरत है, न किसी और की कोई सहायता की जरूरत है। ये तो अपनी नेचर जैसी हो गई है। पीछे की तरफ गिराने वाली कोशिश इस संसार में इतनी भरी हुई पड़ी है, जिससे बचाव अगर आप न करें, उसका विरोध आप न करें, उसका मुकाबला आप न करें तो आप विश्वास रखिए, आप निरन्तर गिरेंगे, पतन की ओर गिरेंगे। सारा समाज इसी तरफ चल रहा है।

आप निगाह उठा के देखिए। आपको कहाँ ऐसे आदमी मिलेंगे जो सिद्धान्तों को ग्रहण करते हों और आदर्शों को अपनाते हों? आप जिन्हें भी देखिए, अधिकांश लोगों में से कई बुराई की ओर चलते हुए दिखाई पड़ेंगे आपको। पाप और पतन के रास्ते पर उनका चिंतन और मनन काम कर रहा हुआ होगा। उनका चरित्र भी गिरावट की ओर और उनका चिंतन भी गिरावट की ओर। फिर आपको क्या करना चाहिए? अगर आपको ऊँचा उठना है तो आपको भीतर से हिम्मत इकट्ठी करनी चाहिए। क्या हिम्मत करें? ये हिम्मत करें कि ऊँचे उठने वाले जिस तरीके से संकल्पबल का सहारा लेते रहे और हिम्मत से काम लेते रहे, व्रतशील बनते रहे, आपको उस तरीके से व्रतशील बनना चाहिए। देखा है न आपने। जब जमीन पे से ऊपर की तरफ चढ़ना होता है तो जीने का इन्तजाम

करते हैं, सीढ़ी का इन्तजाम करते हैं। तब मुश्किल से धीरे-धीरे चढ़ते हैं। गिरने में क्या देर लगेगी? अंतरिक्ष में उल्काएँ अपने आप गिरती रहती हैं। जब जमीन से रॉकेट अन्तरिक्ष की ओर फेंकने पड़ते हैं, तब करोड़ों-अरबों रुपया खर्च करते हैं, तब एक रॉकेट का ऊपर अंतरिक्ष में उछालना सम्भव होता है। तो क्या करना चाहिए? आपको यही करना पड़ेगा कि चौरासी लाख योनियों में भटकते हुए जो कुसंस्कार ढेरों के ढेरों इकट्ठे कर लिये हैं, अब इन कुसंस्कारों के खिलाफ बगावत शुरू कर दीजिए। कैसे करें? अपने को मजबूत बनाइये। मजबूत नहीं बनायेंगे तब। तब फिर आपके पुराने कुसंस्कार फिर आ जायेंगे। मन को समझायें। जरा सी देर में समझ जायेगा, फिर उसी रास्ते पर आ जायेगा। क्या करना चाहिए?

'संकल्प शक्ति' का विकास करना चाहिए। 'संकल्प शक्ति' किसे कहते हैं? 'संकल्प शक्ति' उसे कहते हैं, जिसमें कि ये फैसला कर लिया जाता है कि हमको ये तो करना ही है। ये हर हाल में करना है। करेंगे या मरेंगे। इस तरीके से संकल्प अगर आप किसी बात का कर लें तो आप विश्वास रखिए, फिर आपका जो मानसिक निश्चय है, वो आपको आगे बढ़ा देगा। अगर आपका मनोबल नहीं है और निश्चय बल नहीं है, ऐसे ही ख्वाब देखते रहते हैं कि 'ये करेंगे', विद्या पढ़ेंगे, व्यायाम करना शुरू करेंगे, फलाना काम करेंगे। आप कल्पना करते रहिए। कभी कुछ नहीं कर सकते। कल्पनाएँ आज तक किसी की सफल नहीं हुईं और संकल्प किसी के असफल नहीं हुए।

इसीलिये आपको संकल्प शक्ति का सहारा लेने के लिये व्रतशील बनना चाहिए। आप व्रतशील बनिए। श्रेष्ठ काम करने के लिये, उन्नति की दिशा में आगे बढ़ने के लिये आपको कोई न कोई संकल्प मन में लेना चाहिए कि ये काम करेंगे।

काम करने तक के लिये कई आदमी ऐसा कर लेते हैं कि जब तक ये अच्छा काम न कर लेंगे, ये काम नहीं करेंगे। जैसे नमक नहीं खायेंगे, घी नहीं खायेंगे वगैरह-वगैरह। ये क्या है? इसको देखने में तो कोई खास बात नहीं है। आपको अमुक काम करने से नमक का क्या ताल्लुक और आपने घी खाना बन्द कर दिया तो कौन-सी ऐसी बड़ी बात हो गई जिससे कि आपको काम में सफलता मिल जायेगी। इन चीजों में तो नहीं है दम। लेकिन दम इस बात में है कि आपने इतना कठोर निश्चय कर लिया है और आपने सुनिश्चित योजना बना

ली है कि हमको ये करना ही करना है। तब फिर आप विश्वास रखिये, आपका काम पूरा हो करके रहेगा। चाणक्य ने निश्चय कर लिया था कि जब तक मैं नन्द वंश का नाश न कर लूँगा, तब तक बाल नहीं बाधूँगा। ये अपना व्रत और प्रतिज्ञा को याद रखने का एक प्रतीक है, सिम्बल है। प्रतिज्ञाएँ तो भूल जाते हैं, लेकिन अगर कोई ऐसा बहिरंग अनुशासन भीतर लगा लें तो आदमी भूलता नहीं है।

आदमी का संकल्प मजबूत होना चाहिए। अध्यात्म का प्राण ही वह संकल्प है। संकल्प बल न हो तब। हिम्मत न हो तब। तब फिर आदमी बेपेंदी के लोटे के तरीके से इधर-उधर भटकता रहता है। संकल्प कर लेने के बाद तो आदमी की आधी मंजिल पूरी हो जाती है।

संकल्प बल एक लाठी के तरीके से है, जो आपको गिरने से बचा लेता है और आपको ऊँचा चलने के लिये, आगे बढ़ने के लिये हिम्मत प्रदान करता है। आपको भी अपने मनोबल की वृद्धि के लिये आत्मानुशासन स्थापित करना चाहिए। ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में, खान-पान के सम्बन्ध में, समयदान और अंशदान के सम्बन्ध में आपको कोई न कोई, कोई न कोई काम ऐसे जरूर करने चाहिए, जिसमें कि ये प्रतीत होता हो कि आपने छोटा-सा संकल्प लिया है, उसे पूरा करने में सफल रहे हैं। ये मनोबल बढ़ाने का तरीका है। संकल्प शक्ति, मनोबल से ज्यादा बढ़ कर के आदमी के व्यक्तित्व को उभारने वाली, प्रतिभा को उभारने वाली, उसके चरित्र को उभारने वाली और कोई वस्तु है ही नहीं और ये संकल्प बल की वृद्धि के लिये ये आवश्यक है कि आप छोटे-छोटे, छोटे-छोटे ऐसे कुछ नियम लिया कीजिए थोड़े समय के लिये। ये काम न कर लेंगे, तब तक हम ये नहीं करेंगे। मसलन शाम को इतने किताब के पन्ने न पढ़ लेंगे, सोयेंगे नहीं। मसलन हम सबेरे का भजन जब तक पूरा न कर लेंगे, खायेंगे नहीं। ये क्या है? ये व्रतशीलता के साथ में जुड़ा हुआ अनुशासन है।

व्रत और संकल्प आदमी की जिन्दगी के लिये बहुत बड़ी कीमती वस्तु है। आप ऐसे ही किया कीजिए। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शान्तिः ॥

बोना और काटना

भाइयो! लगभग 60 वर्ष हो गये। 60 वर्ष पहले हमारे गुरुदेव घर पर आये थे और उन्होंने कई बातें कहीं। शुरू में तो कुछ डर जैसा मालूम पड़ा। पीछे जब मालूम पड़ा कि ये हमारे तीन जन्मों में हमारे साथ रहे हैं। जो उन्होंने पहले जन्मों का दृश्य दिखा दिया तो हमारा भय दूर हो गया और फिर बातचीत शुरू हो गई। उन्होंने कहा, ''अपनी पात्रता को विकसित करने के लिये तुम्हें चौबीस लक्ष के चौबीस साल तक चौबीस पुरश्चरण करने चाहिए।'' एक साल में एक, जौ की रोटी और छाछ पर रह करके किस तरीके से चौबीस साल काटने पड़ेंगे? ये पूरी विधि बताने के बाद में एक और नई बात बताई। ''बोना और काटना।'' तुम्हारे पास जो कुछ भी चीज है, बोना शुरू करो भगवान् के खेत में और वो सौ गुना होकर के तुम्हें मिल जायेगा। ऋद्धि और सिद्धि का तरीका यही है। फोकट में नहीं मिलती कहीं से। कोई ऐसा नियम नहीं है कि कोई ऋद्धि बाँट रहा हो, सिद्धि बाँट रहा हो, कहीं से मिल रहा हो, इस तरह का नहीं है।

किसान बोता है और काटता है, ठीक इसी तरीके से तुमको भी ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ बोनी पड़ेंगी और काटनी पड़ेगी। उन्होंने कहा-''तुम्हारे पास क्या-क्या वस्तुएँ हैं?'' मालूम नहीं, क्या वस्तुएँ हैं? तो उन्होंने कहा देखो, समय और श्रम तुम्हारे पास है, यह भगवान् के खेत में बोओ। कौन-सा भगवान्? ये विराट् भगवान् जो चारों ओर समाज के रूप में विद्यमान है। इसके लिये तुम अपना श्रम और शरीर को सब खर्च कर डालो और तुम्हें सौ गुना होकर के मिल जायेगा, एक नम्बर। नम्बर दो, बुद्धि तुम्हारे पास है, भगवान् की दी हुई सम्पदाओं में। अकल से बजाय इसका चिंतन करने के, उसका चिंतन करने के, अहंकार का चिंतन करने के, वासनाओं का चिंतन करने के, बेकार की बातों का चिंतन करने की अपेक्षा अपने चिंतन करने की जो सामर्थ्य है, उसको सारी की सारी को भगवान् के निमित्त लगा दो। उनके खेत में बोओ। ये तुम्हारी शक्ति सौ गुनी होकर के तुमको मिल जायेगी, दो। तीसरी चीज, तुम्हारे पास हैं, भावनाएँ। भावनाएँ हमारे पास हैं? हाँ! आपके पास भी हैं। तीन शरीर हैं—स्थूल, सूक्ष्म और

कारण। जिसमें से स्थूल शरीर में श्रम होता है, सूक्ष्म शरीर में बुद्धि होती है और कारण शरीर में भावनाएँ होती हैं। ये तीन चीजें वो हैं, जो भगवान् ने हमको दी हैं।

श्रम और शरीर भगवान् ने हमको दिया है। बुद्धि किसी आदमी ने नहीं दी है, भगवान् ने दी है। और भावनाएँ जो हैं, भगवान् ने दी हैं, इसीलिये भगवान् की दी हुई चीजों को बोना चाहिए और एक चीज इस तरह की है, जो तुम्हारी कमाई हुई है। या पहले जन्म से कमाया हुआ हो या इस जन्म में कमाया हो। बहरहाल वो तुम्हारा कमाया हुआ है। भगवान् का दिया हुआ नहीं है। वो क्या? धन। धन, भगवान् किसी को नहीं देता। जो कोई चाहे ईमानदारी से, बेईमानी से, मेहनत से, हरामखोरी से चाहे कमा लो, चाहे मत कमा लो। भगवान् को इससे कोई लेना-देना नहीं है। धन जो तुम्हें मिला है, तुम्हारा कमाया हुआ तो शायद नहीं है। मैंने कहा-''मेरा कमाया हुआ कहाँ से हो सकता है? चौदह-पन्द्रह वर्ष का बच्चा कहाँ से धन कमा के लायेगा। पिता जी का दिया हुआ धन है।'' इस सारे के सारे धन को भगवान् के खेत में बो दो, और यह सौ गुना होकर मिल जायेगा। बस मैंने गाँठ बाँध ली और वो 60 वर्ष से बँधी हुई गाँठ मेरे पास ज्यों की त्यों चली आ रही है।

जो कुछ भी कमाया था, हमने सब बो दिया। हमारे पास जो जमीन थी। उसकी जब जमींदारियाँ खतम हुईं तो उसका जो पैसा आया, गायत्री तपोभूमि बनाने के लिये हमने दान दे दिया। हमारी बीबी के पास सोना था, 60 तोले के करीब, वो भी हमने बेच कर उसी को दे दिया। जो कुछ भी हमारे पास था, सब खाली कर दिया और वो गायत्री तपोभूमि के बनाने में, भगवान् का घर बनाने में, भगवान् का मन्दिर बनाने में हमने खर्च कर दिया। फिर 80 बीघा जमीन कुल काश्त की हमारे पास रह गई थी, फिर उसको भी खर्च कर डाला। उसको काहे में खर्च किया? उसको जहाँ हमारा जन्म हुआ है, उस गाँव में हमने एक हायर सेकन्डरी स्कूल बना दिया। कभी आप जायें तो देखना, आपकी तबियत बाग-बाग हो जायेगी और फिर वहाँ पर दूर-दूर तक कोई अच्छा अस्पताल नहीं है। सैकड़ों आदमी बीमार हो जाते हैं। उनकी मृत्यु हो जाती है। स्त्रियों की मृत्यु हो जाती है, गर्भवतियों की मृत्यु हो जाती है। तो वहाँ एक अच्छा अस्पताल बने तो अच्छी बात है। वहाँ शानदार अस्पताल हमने बना दिया है।

ये कहाँ से बनाया? जो पैसा पिताजी का छोड़ा हुआ था, उसको हमने खाया नहीं। छोटी उमर में खा लिया होगा तो हम नहीं कह सकते। लेकिन इसके

बाद में हमने किसी का दिया हुआ धन खाया नहीं है। सब खर्च कर डाला। एक-एक पाई खर्च कर डाली। हमारे पास उनका दिया हुआ कुछ भी नहीं। आपके पास कितना धन है? हमारे पास कुछ भी नहीं है। तो फिर, तो आप तो नुकसान में रहे। अरे! आप नुकसान की बात कहते हो?

हमारे गाँव कभी आप जायें तो हमारा कच्चा मकान था, सारे गाँव के कच्चे मकान थे, हमारा भी कच्चा मकान था। टूट-फूट के बराबर हो गया। लेकिन यहाँ जहाँ कहीं भी हम रहते हैं, पक्के मकानों में रहते हैं। बड़े शानदार मकानों में रहते हैं।

गायत्री तपोभूमि हमने बनाया, आप जरा देखिए न, कैसा शानदार मकान है? लाखों रुपया उसमें लग गया और हमारा मकान देखिए न, अखण्ड ज्योति कार्यालय देखिए, उसका प्रेस देखिये और आप यहाँ आइए, शान्तिकुञ्ज देखिए, गायत्री नगर देखिए, ब्रह्मवर्चस देखिए, चौबीस सौ गायत्री शक्तिपीठों को देखिये। ये मैं बिल्डिंगों का किस्सा सुना रहा हूँ। ये तो बिल्डिंग हैं और बिल्डिंगों के अलावा इनमें जो आदमी रहते हैं, उन पे जो खर्च होता है वो, गायत्री तपोभूमि में कितने आदमी काम करते हैं? दो सौ आदमी वहाँ काम करते हैं। दो सौ आदमी (इस समय लगभग दो हजार) करीब यहाँ भी रहते हैं। इन सबका खाने का, पीने का, कपड़े का, रोटी का जो खर्चा निकलता है, ये कहाँ से आ जाता है? जाने कहाँ से आ जाता है।

धन हमारे पास कुछ कम नहीं पड़ता। जरूरत होती है, तो भगवान् की तरफ इशारा कर देते हैं और वो हमारे लिये जो कुछ भी चीजें हैं, सब ज्यों का त्यों भेज देते हैं। भगवान् के लिये सब आदमी एक से हैं। जो नियम हमारे ऊपर लागू हैं, वही आपके ऊपर भी लागू हो सकते हैं। भगवान् न हमारे साथ में रियायत करने वाले हैं और न आपके साथ में उनका कोई वैर-विरोध है। तरीके वो ही हैं, जो हमारे जीवन में हमको बताये गये। हमारे गुरु ने हमको तरीका बताया था और हमने अख्तियार कर लिया और गुरु को हम बहुत धन्यवाद देते हैं और आपको हम सिखाते हैं, समझाते हैं और बताते हैं कि आप भी उसी रास्ते पर चलिये, जिस रास्ते पर हम चले हैं। आप भी निहाल हो जायेंगे, धन्य हो जायेंगे। और क्या कहूँ मैं आपसे? बस। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शान्तिः ॥

समयदान का महत्त्व

यह ऐसा समय है कि जिसमें किसी आदमी को किसी आदमी पर विश्वास रह नहीं गया है। आतंक का वातावरण चारों ओर घिरा हुआ पड़ा है। सड़क पर आप निकलते हैं, मालूम नहीं आपके साथ में, पड़ोस में चलने वाला जो व्यक्ति है, चाकू आपको भोंक करके और आपकी घड़ी नहीं छीन ले जायेगा, इसका क्या विश्वास है? इंसान का चाल-चलन, इंसान का विचार इतना गंदा और इतना घटिया हो गया है, कि अगर स्थिति यही बनी रहेगी तो कोई किसी पर विश्वास नहीं करेगा। न भाई, भाई पर विश्वास करेगा; न स्त्री, पुरुष पर विश्वास करेगी; न पुरुष, स्त्री पर विश्वास करेगा; न बाप, बेटे पर विश्वास करेगा; न बेटा, बाप पर विश्वास करेगा; ऐसा गंदा, ऐसा घटिया, ऐसा वाहियात समय है ये। और ये इसलिये भी घटिया, वाहियात समय है कि नेचर, हमसे नाराज हो गई है, प्रकृति हमसे नाराज हो गई है। पानी बरसाने में कहीं उसकी मौज आती है तो अंधा-धुंध बरसा देती है। कहीं उसकी मौज आती है, तो चाहे जितना सूखा-सूखा पड़ता हुआ चला जाता है। कहीं मौसम का ठिकाना नहीं, मौसम पे पानी बरसेगा कि नहीं, कोई नहीं कह सकता और ठण्ड के समय में ठण्ड पड़ेगी, गर्मी के समय में गर्मी पड़ेगी, कोई नहीं कह सकता। भूकम्प कब आ जायेंगे? कोई नहीं कह सकता। ज्वालामुखी कब फटने लगेंगे? कोई नहीं कह सकता; बाढ़ कब आ जायेगी? इसका कोई ठिकाना नहीं है। नेचर हमसे बिलकुल नाराज हो गई है, इसलिये उसने अपना ठीक तरीके से काम करना बंद कर दिया है।

ये ऐसा भयंकर समय है, ऐसे भयंकर समय में क्या आपके लिये कोई जिम्मेदारियाँ नहीं हैं? क्या आपके लिये कोई कर्तव्य नहीं हैं? क्या आपके अंदर भावनाएँ नहीं हैं? क्या आप भावना शून्य हो गये हैं? क्या आपका हृदय पत्थर का और लोहे का हो गया है? नहीं, मेरा ख्याल है कि सब आदमियों का ऐसा नहीं हुआ होगा। ज्यादातर लोगों का तो ऐसा ही हो गया है कि ये घटते-घटते जानवर के तरीके से बनते जाते हैं। हमें आपसे यही उम्मीद है कि ऐसे भयंकर समय में आप अपना सारा वक्त केवल पेट पालने के लिये और संतान पैदा करने के लिये खर्च नहीं करेंगे।

अगर आप चाहें तो आप ढेरों समय बचा सकते हैं। एक आदमी के लिये 8 घण्टा काम करने के लिये काफी होना चाहिए, जिसमें कि अपने और अपने बच्चों का गुजारा मजे में कर ले। और 7 घण्टे एक आदमी को विश्राम करने के लिये पर्याप्त होने चाहिए और पाँच घण्टे घरेलू काम-काज के लिये पर्याप्त होने चाहिए।

इस तरीके से आप 20 घण्टे में अपने शरीर का और अपने कुटुम्ब का गुजारा कर सकते हैं। चार घण्टे तो आप बड़ी आसानी से निकाल सकते हैं। ये आपकी इच्छा के ऊपर है कि आप अपने उस समय को आलस्य में, प्रमाद में, आवारागर्दी में किसी तरह से खर्च कर डालें, ये आपकी मर्जी है। कौन रोकता है आपको? लेकिन अगर आप चाहें तो समाज के लिये, गिरी हुई परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिये, समय को ऊँचा उठाने के लिये, इंसान का भाग्य और भविष्य शानदार बनाने के लिये आप कुछ कर सकते हैं, करना ही चाहिए आपको। इसमें तो नुकसान पड़ेगा हमारा? नहीं, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि नुकसान नहीं पड़ेगा। जिन्होंने लोकसेवा का काम किया है, अपने समय को लोकसेवा में लगाया है, वो चाहे गाँधी जी रहे हों, जवाहरलाल नेहरू रहे हों, विनोबा भावे रहे हों या कोई भी क्यों न रहे हों, स्वामी विवेकानन्द रहे हों, लेकिन जिन लोगों ने अपने समय को समाज के लिये खर्च किया है, वे किसी तरीके से नुकसान में नहीं रहे हैं, वो ऊँचे उठे हैं, आगे बढ़े हैं और हजारों आदमियों को ऊँचा उठाया है और आगे बढ़ाया है और स्वयं भी नफे में रहे हैं। स्वयं नुकसान में रहे? क्या नुकसान में रहे? आप बताइये न। किसी एक का नाम बताइए। गाँधी जी ने वकालत की होती तो वकालत में कितना कमा लेते? लेकिन जब उन्होंने अपना समय सेवा में लगा दिया। सेवा के कार्यों में अपना समय खर्च करने लगे तो आप बताइये क्या कमी रह गई उनके पास? किसी चीज की कमी नहीं थी। गाँधी जी बड़े शानदार आदमी थे और शानदार आदमी सिर्फ इसलिये हुए कि उन्होंने अपने समय को पेट और सन्तान, पेट और सन्तान, जानवर के तरीके से खर्च नहीं किया, बल्कि इन्सान के तरीके से खर्च किया है।

ये समय ठीक ऐसा ही है। इस समय में मेरी आप लोगों में से प्रत्येक से प्रार्थना है कि आप समय का थोड़ा-सा अंश निकाल दें। हमने कितनी बार कहा और कितनी बार छापा है कि आप समयदान कीजिए, समयदान कीजिए। आपने सूर्य-ग्रहण और चन्द्र-ग्रहण के समय पर देखा है। चिल्लाते हैं, चन्द्रमा पर ग्रहण

पड़ा हुआ है–दान कीजिए, दान कीजिए। इस समय में हमारी भी एक ही पुकार है, समय की भी एक ही पुकार है, महाकाल की भी एक ही पुकार है कि आप समय दीजिए, समय खर्च कीजिए। किस काम के लिये खर्च करना चाहिए? आपको इस काम के लिये खर्च करना चाहिए कि लोगों के दिमाग और लोगों के विचारों को आप ठीक कर सकें। अगर विचारशीलता और दूरदर्शिता, विवेकशीलता लोगों के अन्दर आई होती, तो दुनिया खुशहाल रही होती।

इन्सान, इन्सान नहीं रहा होता, देवता हो गया होता और जमीन का वातावरण स्वर्ग जैसा हो गया होता; पर विचारशीलता कहाँ है? समझदारी कहाँ है? हमको समझदारी आदमी के अन्दर बढ़ानी चाहिए। अगर समझदारी बढ़ेगी, तो आदमी के अन्दर ईमानदारी बढ़ेगी। ईमानदारी बढ़ेगी तो आदमी के अन्दर जिम्मेदारी बढ़ेगी। जिम्मेदारी बढ़ेगी तो आदमी के अन्दर बहादुरी बढ़ेगी। चारों ही चीजें एक साथ जुड़ी हुई हैं। इसलिये समझदारी इसका मूल है और ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी ये इसके पत्ते हैं, डालियाँ हैं, फल और फूल हैं। इसलिये हमको समझदारी बढ़ाने के लिये लोगों की, जी और जान से कोशिश करनी चाहिए।

आप लोगों से भी मेरी यही प्रार्थना है कि लोगों की समझदारी बढ़ाने के लिये अपने समय का जितना अंश आप लगा सकते हों, उतना अंश लगायें।

॥ ॐ शान्तिः ॥

वसंत पंचमी 1990 को वं. माताजी से पू0गुरुदेव - ''मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा - सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को - मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।....''

ज्ञान सम्पदा

मनुष्य की विशेषता है–ज्ञान। ज्ञान न हो तब, ज्ञान विहीन होने की वजह से चेतन होते हुए भी सब प्राणियों को नीचे दर्जे में गिना जाता है। जीवन तो वनस्पतियों में भी है, पर ज्ञान नहीं। दूसरे भी हैं, मक्खी है, मच्छर हैं, कीड़े हैं, मकोड़े हैं। उनमें भी जिन्दगी है। मेंढक में भी जिन्दगी है। मछली में भी जिन्दगी है। कछुए में भी जिन्दगी है। चिड़िया में भी जिन्दगी है। फिर, उनको क्यों हम घटिया दर्जे का मानते हैं? उनकी एक ही कमी है कि उनको ज्ञान की कमी है।

मनुष्य ज्ञान का देवता माना गया है। ज्ञान की वजह से, मननशील होने की वजह से, विचारशील होने की वजह से मनुष्य का स्तर ऊँचा उठा है। कल्पना कीजिए, प्राचीन काल में जब मनुष्य वनमानुष रहा होगा, जब उनको ज्ञान नहीं रहा होगा। सामाजिकता का ज्ञान नहीं रहा होगा और जीवन की जिम्मेदारियों का ज्ञान नहीं रहा होगा। अपने गौरव–गरिमा और गुण, कर्म और स्वभाव की विशेषताओं के बारे में कोई जानकारी न रही होगी तब, तब वो भी जैसे कि डार्विन साहब कहते थे–बंदर की औलाद। वास्तव में बंदर की औलाद के तरीके से इन्सान भी रहा होगा। लेकिन आज सृष्टि का स्वामी बना हुआ है, किस वजह से? प्राचीन काल की तुलना में आज आदमी का ज्ञान बढ़ता हुआ चला गया है।

ज्ञान की दो धाराएँ हैं और दोनों को ही बढ़ाना चाहिए। एक धारा वो है, जो हमारी जीविका को पैदा करने के लिये काम आती है उसको शिक्षा कहते हैं। लोक व्यवहार उसी के आधार पर सीखा जाता है। बच्चों को स्कूल में जब पढ़ाते हैं, शिक्षा पढ़ाते हैं। शिक्षा का क्या मतलब? शिक्षा का मतलब है, उनको लोकाचार आए। उनको यह मालूम पड़े कि संसार की बनावट क्या है, भूगोल क्या है, इतिहास क्या है, दुनियाँ में इनसानों के चाल–चलन क्या रहे हैं? दुनिया में किस तरीके से उतार–चढ़ाव आते रहे हैं? पेड़ कैसे पैदा होते हैं? यह सृष्टि क्या है? राजनीति क्या है? समाज क्या है? एक नागरिक कर्तव्य क्या है? जीविका उपार्जन कैसे करनी चाहिए? अर्थशास्त्र क्या है? वगैरह। लोक व्यवहार में प्रवीण बनने के सम्बन्ध में एक । जीविकोपार्जन के सम्बन्ध में दो। जो जानकारियाँ हमको मिलती हैं, उसका

नाम शिक्षा है। आवश्यक है? शिक्षा आवश्यक है। शिक्षा न होगी तो आदमी अपने शरीर को सम्भाल किस तरीके से पायेगा? समाज के साथ में तालमेल बिठा किस तरीके से पायेगा? अपनी अकल का उपयोग किस तरीके से कर पायेगा? ये सब जानकारियों के लिये शिक्षा तो आवश्यक है।

शरीर के लिए, जीवन के लिये, भौतिक जीवन को ठीक बनाये रखने के लिये शिक्षा बेहद जरूरी है। लेकिन ये केवल भौतिक जीवन ही तो नहीं है। एक और भी तो हमारा जीवन है। जिसको हम आध्यात्मिक जीवन कहते हैं। चेतना भी तो कोई हमारे भीतर है, आत्मा भी तो कोई हमारे भीतर है, विवेक भी तो कोई हमारे भीतर है, संवेदनाएँ भी तो कोई हमारे भीतर हैं। इन सबको ठीक रखने के लिये एक और चीज की जरूरत है, जिसका नाम है–विद्या। ज्ञान की धारा उसी को कहते हैं, जिसको विद्या कहा गया है।

विद्या का पूरा नाम अध्यात्म विद्या आप मानें तो भी हर्ज नहीं है। ऋतम्भरा प्रज्ञा इसको कहें तो भी कोई हर्ज नहीं है। विवेक आप इसको कहें तो भी हर्ज नहीं है। इसको आप गायत्री कहें–प्रज्ञा कहें तो भी हर्ज नहीं है। वास्तव में महत्त्व उसी का है। दुनिया की जानकारियों के बारे में तो ढेरों आदमी ऐसे हैं, जिनकी जानकारियाँ बहुत हैं। प्रचार बहुत हैं। आदमी विद्यावान् कम हैं क्या दुनिया में, कलाकार कम हैं क्या दुनिया में, चतुर आदमी दुनियाँ में कम हैं क्या? क्रिया–कुशल लोगों की कमी है क्या? आप बताइए न, जेलखानों में पड़े हुए लोगों को आपने नहीं देखा है। एक से एक होशियार आदमी। एक से एक समझदार आदमी। जालसाजों में पढ़े–लिखे ही आदमी ज्यादा होते हैं। नासमझ आदमी जेब–कटी कर सकते हैं और छोटे–मोटे काम कर सकते हैं। पर दुनिया में जो बड़ी–बड़ी जालसाजियाँ हुई हैं, ये पढ़े–लिखे लोगों ने की हैं। पर शिक्षा की बात मैं नहीं कहता। शिक्षा अपनी जगह पर मुबारक, मुझे कुछ लेना–देना नहीं है। लेकिन जहाँ आप लोगों की सेवा में मैं कुछ बात कह रहा हूँ, विद्या के बारे में कह रहा हूँ। आपको विद्या का महत्त्व समझना चाहिए। विद्या का अगर महत्त्व समझ सकें तो मजा आ जायेगा।

विद्या से क्या मतलब? विद्या से मतलब ये है कि आप अपने विचारों का इस्तेमाल किस तरीके से करें? आप अपने शरीर का इस्तेमाल किस तरीके से करें? साधनों का इस्तेमाल कैसे करें? परिस्थितियों का उपयोग किस तरीके से करें? अपने पास जो साधन और सामान मिला हुआ है या मिल सकता है, आप उसका ठीक तरीके से इस्तेमाल किस तरीके से कर पायेंगे बस, इसी का नाम विद्या है।

इसके लिये सामान्य लोक-ज्ञान से काम नहीं चलता। इसके लिये आदमी को थोड़ा ऊँचे स्तर पे बैठ करके विचार करना होता है और यह देखना पड़ता है कि इन्सान की गरिमा और इन्सान की महत्ता की सुरक्षा किस तरीके से की जाय ? इसके लिये क्या करना चाहिए, बस इसी का नाम विद्या है।

अगर विद्या किसी को मिल जाये तब, तब फिर वे धन्य हो जाते हैं। शास्त्रों में विद्या की महत्ता के लिये न जाने क्या से क्या कहा गया है—'विद्या अमृतमश्नुते' विद्या को अमृत कहा गया है। जिसने विद्या प्राप्त कर ली, उसको अमृत मिल गया। जो ठीक तरीके से उचित और अनुचित का फर्क जानता है, उसके लिये फिर कोई चीज मुश्किल नहीं रह जाती। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शान्तिः ॥

यह पूछिए कि क्या बनें ?

आप साँचा बनने की कोशिश करें।

साधकों में से कई व्यक्ति हमसे यह पूछते रहते हैं कि हम क्या करें? मैं उनमें से हर एक से कहता हूँ कि यह मत पूछिए, बल्कि **यह पूछिए कि क्या बनें? अगर आप कुछ बन जाते हैं तो करने में भी ज्यादा कीमती है वह।** फिर जो कुछ भी आप कर रहे होंगे, वह सब सही हो रहा होगा। आप साँचा बनने की कोशिश करें। अगर आप साँचा बनेंगे तो जो भी गीली मिट्टी आपके सम्पर्क में आएगी, आपके ही तरीके के, आपके ही ढंग के, शक्ल के खिलौने बनते हुए चले जाएँगे। आप सूरज बनें तो आप चमकेंगे और चलेंगे। उसका परिणाम क्या होगा? जिन लोगों के लिए आप करना चाहते हैं, वे आपके साथ-साथ चमकेंगे और चलेंगे।..... हम चलें, हम प्रकाशवान हों, फिर देखेंगे कि जिस जनता के लिए आप चाहते थे कि वह हमारी अनुगामी बने और हमारी नकल करे तो वह ऐसा ही करेगी। आप देखेंगे कि आप चलते हैं तो दूसरे लोग भी चलते हैं।..... हमको बीजों की जरूरत है। आप बीज बनिए, गलिए, वृक्ष बनिए और अपने भीतर से ही फल पैदा करिए और प्रत्येक फल में से ढेरों के बीज पैदा कीजिए। आप अपने भीतर से ही बीज क्यों नहीं बनाएँ?

व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण

अपनी जिन्दगी में कुछ नये काम शामिल करिये। क्या काम शामिल करें? व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण। एक काम आपका है–व्यक्ति निर्माण। अपने आपके निर्माण की कसम खा के जाइए। हम अपने स्वभाव को बदल दें। हम अपने चिंतन को बदल दें। हम अपने आचरण को बदल दें, एक। दूसरा परिवर्तन जो आपको यहाँ से ले के जाना चाहिए वो ये परिवर्तन ले के जाना चाहिए कि आपकी परिवार के सम्बन्ध में जो मान्यताएँ हैं, जो आधार हैं, उनको बदल दें। परिवार के व्यक्ति तो नहीं बदले जा सकते। पुराने परिवार के व्यक्तियों को बरखास्त कर दें और नये व्यक्तियों को उसमें शामिल कर दें या उनका रवैया बदल दें, मकान बदल दें या शिक्षा बदल दें या उनका स्वरूप बदल दें। यह तो नहीं हो सकता। पर आपका अपने कुटुम्ब के प्रति जो रवैया है। जो आपके सोचने का तरीका है, उसको आप आसानी से बदल सकते हैं।

समाज के प्रति आपके कुछ कर्तव्य हैं, दायित्व हैं। समाज के प्रति अपने कर्तव्यों और दायित्वों से आप छुटकारा पा नहीं सकेंगे। समाज की उपेक्षा करते रहेंगे, तो फिर आप विश्वास रखिए, समाज आपकी उपेक्षा करेगा और आपको कोई वजन नहीं मिलेगा। आप सम्मान नहीं पा सकेंगे। आप सहयोग नहीं पा सकेंगे। उपेक्षा करते रहिए, अपने आप में सीमाबद्ध हो जाइए, इक्कड़ हो जाइए, अकेले रहिए, खुद ही खाइए और खुद ही मजा उड़ाइए। फिर, फिर आप ये और भूल जाइए। फिर हमको समाज में सहयोग नहीं मिल सकेगा। न ही सम्मान मिल सकेगा।

सम्मान और सहयोग ही मनुष्य की जीवात्मा की भूख और प्यास है। अगर आप उनको खरीदना चाहते हों तो कृपा करके यह विश्वास कीजिए कि जो समाज के प्रति आपके दायित्व हैं, जो कर्तव्य हैं, वो आपको निभाने चाहिए। आप उन कर्तव्यों और दायित्वों को निभा लेंगे तो बदले में सम्मान और सहयोग

खरीद लेंगे। जिससे आपकी खुशी, आपकी प्रशंसा और आपकी प्रगति में चार चाँद लग जायेंगे। दो काम हुए न। अपने आपका निर्माण करना, अपने परिवार का निर्माण करना, दो और अपने समाज को प्रगतिशील बनाने के लिये, उन्नतिशील बनाने के लिये कुछ न कुछ योगदान देना, तीन।

तीन काम अगर आप कर पायें तो आपको समझना चाहिए कि आपने आत्मा की भूख को बुझाने के लिये और आत्मिक जीवन को समुन्नत बनाने के लिये कुछ कदम बढ़ाना शुरू कर दिया। अन्यथा ठीक है, आप शरीर के लिये तो मरे ही हैं और शरीर के लिये तो जीये ही हैं। शरीर ही तो आपका इष्ट देव है। इन्द्रियों के सुख ही तो आपकी आकांक्षाएँ हैं। वासना और तृष्णा ही तो आपको सबसे प्यारे मालूम पड़ते हैं। इनमें ही तो आपका जीवन खर्च हो गया और किस काम में खर्च हुआ?

अब कृपा कीजिए। 'सादा जीवन-उच्च विचार' के सिद्धान्तों का परिपालन कीजिए। सादगी, सादगी, सादगी, किफायतसारी, मितव्ययिता। अगर आपने ये अपना सिद्धान्त बना लिया हो तो आप विश्वास रखिए, आपका बहुत कुछ काम हो जायेगा। बहुत समय बच जायेगा आपके पास। और उन तीनों कर्तव्यों को पूरा करने के लिये आप विचार भी निकाल सकेंगे। श्रम भी निकाल सकेंगे, पसीना भी निकाल सकेंगे, पैसा भी निकाल सकेंगे। और अगर आपने व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा को जमीन-आसमान के तरीके से ऊँचा उठाकर के रखा होगा तो आपको स्वयं का ही पूरा नहीं पड़ेगा। इसके लिये आपको अपनी कमाई से गुजारा नहीं हो सकता आपका। फिर आपको बेईमानी करनी पड़ेगी। रिश्वत लेनी ही चाहिए, कम तौलना ही चाहिए, फिर दूसरों के साथ में दगाबाजी करनी ही चाहिए, फिर आपको कर्ज लेना ही चाहिए। जो भी आप बुरे से बुरे कर्म कर सकते हैं, वो करने चाहिए। अगर आप अपनी हविश को कम नहीं कर सकते और अपनी भौतिक खर्च की महत्त्वाकांक्षा को और बड़प्पन की महत्त्वाकांक्षा को काबू में नहीं कर सकते, फिर आत्मा की बात कहाँ चलती है? आत्मा की उन्नति की बात का सवाल कहाँ उठता है? आत्मा को भी मान्यता दीजिए।

शरीर ही सब कुछ नहीं है। शरीर की आकांक्षाएँ ही सब कुछ नहीं हैं। इन्द्रियाँ ही सब कुछ नहीं हैं। मन की लिप्सा और लालसा ही सब कुछ नहीं है। कहीं आत्मा भी आपके भीतर है और आत्मा अगर आपके भीतर है, तो आप ये भी विश्वास रखिए उसकी भी भूख और प्यास है। आत्मा के अनुदान भी असीम

और असंख्य हैं, लेकिन उसकी भूख और प्यास भी है। पौधों के द्वारा, पेड़ों के द्वारा हरियाली भी मिलती है, छाया भी मिलती है, फल–फूल भी मिलते हैं, प्राणवायु भी मिलती है; पर उनकी जरूरत भी तो है न। आप जरूरत को क्यों भूल जाते हैं? खाद की जरूरत नहीं है? पानी की जरूरत नहीं है उनकी? रखवाली की जरूरत नहीं है उनकी। आप रखवाली नहीं करेंगे, खाद–पानी न देंगे तो पेड़ों से और पौधों से आप क्या आशा रखेंगे? इसी तरीके से जीवात्मा का पेड़ और वृक्ष तो है, पर अपनी खुराक माँगता है। और खुराक क्या माँगता है?

मैंने निवेदन किया न, व्यक्ति–निर्माण, परिवार–निर्माण और समाज–निर्माण के लिये आपकी गतिविधियाँ चलनी चाहिए और आपके प्रयत्नों को अग्रगामी होना चाहिए। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शान्तिः ॥

अब हमने सारे के सारे शान्तिकुञ्ज को विश्वविद्यालय के रूप में परिणत कर दिया है।...**आज मनुष्य को जीना कहाँ आता है? जीना भी एक कला है।** सब आदमी खाते हैं, पीते हैं, सोते हैं और मौत के मुँह में चले जाते हैं, किन्तु जीना नहीं जानते। जीना बड़ी शानदार चीज है। **इसको संजीवनी-विद्या कहते हैं—जीवन जीने की कला।** यहाँ हम अपने विश्वविद्यालय में-शान्तिकुंज में जीवन जीने की कला सिखाते हैं और यह सिखाते हैं कि आज गए-बीते जमाने में आप अपनी नाव पार करने के साथ-साथ सैकड़ों आदमियों को बिठाकर पार किस तरह से लगा पाते हैं?...हमने अपने जीवन के इस अन्तिम समय में सारी हिम्मत और शक्ति इस बात में लगा दी है कि शान्तिकुञ्ज को हम एक विश्वविद्यालय बना देंगे।...**हमने स्वयं का महान् और शानदार जीवन जीने के लिए शिक्षण देने का प्रबन्ध किया है। न केवल स्वयं का जीवन बल्कि समाज की सेवा का शिक्षण।**

जन्मदिन का महत्त्व

मनुष्य का जीवन भगवान् का दिया हुआ सबसे बड़ा उपहार है। भगवान् के खजाने में इससे मूल्यवान् वस्तु कोई भी नहीं है जैसे कि मनुष्य को मानव जीवन के रूप में दी गई है। इस मूल्यवान् वस्तु का लाभ तब है, जब इसकी उपयोगिता समझी जाए और उपयोगिता समझ कर के उसका ठीक तरीके से सदुपयोग किया जाए। हम सदुपयोग कर नहीं पाते क्योंकि उसका मूल्य नहीं समझ पाते। जिस चीज का मूल्य समझ में न आए, भला उसके सदुपयोग का सवाल कहाँ उत्पन्न होता है?

जीवन को हम निरर्थक वस्तु मानते हैं और ये मानते रहते हैं, ये कोई भार हमारे ऊपर टँगा हुआ है, और हमको भार वहन करना पड़ रहा है। असंख्य मनुष्य ऐसे हैं, जिन्दगी जीते तो हैं, पर ऐसी जिन्दगी जीते हैं, मानो किसी ने उनके ऊपर वजन लाद दिया हो, जबकि सही बात ये है, इतनी बड़ी सम्पदा पाकर मनुष्य के लिये ये गुंजाइश है कि अपना जीवन सफल और सार्थक बनायें। साथ-साथ भगवान् ने जिस विशेष प्रयोजन के लिये ये मनुष्य जीवन दिया है, उसको भी पूरा करें। इस विश्व उद्यान को सुंदर और समुन्नत बनाने के लिये भगवान् ने बड़ी आकांक्षाओं के साथ, बड़े अरमानों के साथ ये सम्पदा मनुष्य को सौंपी है और यह अपेक्षा की है कि इस धरोहर का और अमानत का अच्छे से अच्छा उपयोग कर के दिखायेगा। लेकिन हम कुछ कर नहीं पाते; क्योंकि उसका मूल्य ही नहीं समझते।

मनुष्य जीवन की सम्भावनाएँ इतनी बड़ी हैं कि इस सम्पदा का ठीक तरीके से उपयोग किया जा सके तो मनुष्य भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही क्षेत्रों में उच्चस्तरीय सफलताएँ प्राप्त कर सकता है। सफलताओं के सभी द्वार उसके लिये खुले हुए हैं। शर्त ये है कि आदमी अपनी सत्ता की महत्ता को समझे और यह जाने कि हमारे पास कितनी बड़ी मूल्यवान् चीजें हैं। हमारा शरीर कितना मूल्यवान् है। हमारा मस्तिष्क कितना मूल्यवान् है। इसके भीतर जो अन्यान्य गुण, कर्म और स्वभाव की विशेषताएँ भरी पड़ी हैं, वो कितनी कीमती हैं। अगर

उनका ठीक इस्तेमाल कर सकें तब। न कर सके, तब तो हीरा भी हो, कोई भी चीज हो, तो बेकार ही रखी होगी और बेकार ही साबित होगी।

मनुष्य जीवन की महिमा और गरिमा हरेक को समझाना आवश्यक है; ताकि उसके ठीक तरीके से उपयोग करने की उमंग उसके मन में से उठे। इसके लिये आवश्यक समझा गया कि परिवार के प्रत्येक सदस्यों को जन्मदिन मनाना चाहिए और जन्मदिन मनाने के माध्यम से उसको यह प्रकाश दिया जाना चाहिए कि अपने मूल्यवान् मानव जीवन का महत्त्व समझ सके। इसकी गरिमा को जान सके। इसकी उपयोगिता का अंदाज लगा सके और उसका ठीक तरीके से इस्तेमाल कैसे किया जा सकता है, इसके सम्बन्ध में कुछ महत्त्वपूर्ण निर्णय कर सके। इन सब उद्देश्यों की पूर्ति के लिये जन्मदिन उत्सव मनाना आवश्यक समझा गया और यह अनिवार्य कर दिया गया है कि अपने परिवार के किसी भी सदस्य को अपना जन्मदिन मनाये बिना नहीं रहना चाहिए। जो चालाक ये समझें और कहें, क्यों ऐसा अनिवार्य नियम बनाया गया ? ऐसा अनिवार्य नियम इसलिये बनाया गया है कि आदमी को एक भावनात्मक वातावरण में, एक उत्साहवर्धक वातावरण में कुछ महत्त्वपूर्ण बातें समझायी जा सकें।

कुछ महत्त्वपूर्ण अवसर ऐसे होते हैं, जिनमें किसी आदमी को उत्साहित किया जाता है और उत्तेजित किया जाता है। उत्साहित हुए मनुष्य के दिन आदमी को विशेष प्रसन्नता भी होती है और उस गरमा-गरम वातावरण में अगर उसने कुछ नियम लिये हैं, कुछ प्रतिज्ञा ली हैं तो उसको निभाने के लिये तैयार भी रहता है। और आदमी को ये विचार अनुगामिता अपनाने के लिये बाधित किया जाता है कि वह 'स्व' की महत्ता को समझे। 'स्व' के गौरव गरिमा को स्वीकार करे और जीवन को इस तरीके से बिताये, जिसमें कि इस महिमा और गरिमा को अक्षुण्ण बने रहने का मौका मिले। कुछ मनुष्य के जीवन में अवसर ऐसे होते हैं, जो आदमी को खुशी प्रदान करते हैं। जब खुशी प्रदान करते हैं तो आदमी के लिये वो दिन बहुत महत्त्वपूर्ण बन जाते हैं। आदमी कभी कुश्ती जीत करके आये या खिलौने या कोई उपहार लेकर के आये या जीत के आये तो उनके चेहरे की खुशी देखी जा सकती है। कितना खुश-प्रसन्न मालूम पड़ता है और ऐसी खुशी से उसकी शारीरिक और मानसिक शक्तियों का विकास होता है। खुशी और उत्तेजना दे करके हम आदमी को आंतरिक और बहिरंग दोनों ही जीवनों में विकसित और उत्तेजित कर सकते हैं। सामान्य नीरसता के जीवन से छूट कर के

कुछ ऐसे प्रकाशपूर्ण जीवन में प्रवेश करता है, जो उसके लिये आगे चलकर के उस समय महत्त्वपूर्ण साबित हो।

ऐसा ही अवसर जन्मदिन के आधार पर हरेक को मिले। अपने सम्बन्ध में गौरव-गरिमा को समझने के लिये, खुशी हासिल करने के लिये और आत्मबोध का आधार खड़ा करने के लिये। आत्मबोध मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा ज्ञान है। अपने बारे में जान लेना, अपने को देख लेना। भगवान् ने गीता में बार-बार कहा- "अपने आपको जानो। अपने आपको देखो। अपने आपको समझो। अपना उद्धार करो और अपने आपको गिराओ मत।" ये आत्मबोध मनुष्य को हो जाये तो समझना चाहिए कि आध्यात्मिक उन्नति का द्वार खुल गया। अपने सम्बन्ध में गहराई से विचार करने के लिये आत्मबोध का दिन, जन्मदिन का दिन बहुत ही महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शान्तिः ॥

मित्रो! जिन लोगों ने अपने आपको बनाया है, उनको यह पूछने की जरूरत नहीं पड़ी कि क्या करेंगे? उनकी प्रत्येक क्रिया इस लायक बन गई कि उनकी क्रिया ही सब कुछ करा सकने में समर्थ हो गई। उनका व्यक्तित्व ही इतना आकर्षक रहा कि प्रत्येक सफलता को और प्रत्येक महानता को सम्पन्न करने के लिए काफी था।..... **गाँधी जी ने अपने आपको बनाया था तभी हजारों आदमी उसके पीछे चले। बुद्ध ने अपने आपको बनाया, हजारों आदमी उनके पीछे चले।**..... समाज की सेवा भी करनी चाहिए, पर मैं यह कहता हूँ कि समाज-सेवा से भी पहले ज्यादा महत्त्वपूर्ण इस बात को आप समझें कि हमको अपनी 'क्वालिटी' बढ़ानी है।..... हम अपने आपको फौलाद बनाएँ। अपने आपकी सफाई करें। अपने आपको धोएँ। अपने आपको परिष्कृत करें। इतना कर सकना यदि हमारे लिए सम्भव हो जाए तो समझना चाहिए कि आपका यह सवाल पूरा हो गया कि हम क्या करें? क्या न करें? आप अच्छे बनें। समाज-सेवा करने से पहले यह आवश्यक है कि हम समाज-सेवा के लायक हथियार तो अपने आपको बना लें। यह ज्यादा अच्छा है कि हम अपने आपकी सफाई करें।

—पूज्यवर की अमृतवाणी वाङ्मय ६८ पृ०सं० ५.२७-२८

मेरे जीवन का अध्यात्म

हमारे इतने ऊँचे संस्कार और मनुष्य का जीवन किस खास काम के लिये मिला हुआ है और तुम्हें भगवान् ने किस खास समय पर भेजा? अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिये भेजा। यह पिछड़ा हुआ देश, पिछड़ा हुआ राष्ट्र, पिछड़ी हुई सभ्यता, पिछड़ी हुई संस्कृति, पिछड़ी हुई कौम सारी की सारी कराह रही थी, त्राहि-त्राहि कर रही थी और तुम्हारी सहायता की जरूरत थी और मानवता तुमसे हाथ पसारे खड़ी थी और तुम इन्कार करते हुए चले गये और तुमने कहा—हमको बाल-बच्चे पैदा करने हैं, हमको धंधा करना है, हमको नौकरी करनी है और हमको पैसे कमाने हैं और हमको पैसा जमा करना है। आपने ये कहा और इंसानियत ने आपसे कहा-आपके पैसे की जरूरत है हमको। इंसानियत ने कहा-आपके वक्त की जरूरत है हमको। इंसानियत ने कहा-आपके पसीने की जरूरत है हमको और आपने इन्कार कर दिया। आप गुनहगार हैं और आप गुनहगार को चाहे वराह भगवान् क्यों न हों, माफ नहीं करता।

मैंने कहा कि मैं अब चलता हूँ और मैं अब गया। अब मैं हिमालय को चला और मैं अपने मित्रों को इस तरीके से पाप के पंक में कराहते हुए नहीं रहने दूँगा। मैं आपको उठाऊँगा, उठा करके ले जाऊँगा और पेट फाड़ना होगा तो मैं फाड़ डालूँगा आपको। बेरहमी से फाड़ूँगा आपके पेटों को। खाली आशीर्वाद देना मेरा काम नहीं है, पेट फाड़ना भी मेरा काम है।

आशीर्वाद तो हर उदार आदमी दिया करता है और देना चाहिए। जिन्होंने ये अपना धर्म और अपना ईमान कायम रखा, कि दिया जाना हर आदमी का कर्तव्य है और देना आदमी का फर्ज है। आध्यात्मिकता का तकाजा है ये। आपके ऊपर एहसान नहीं करता मैं। किसी पर नहीं एहसान करता। ये मेरी आध्यात्मिकता है और किसी की भी आध्यात्मिकता उसको चैन से रहने देगी नहीं। उसको हर वक्त कोसती रहेगी, घायल करती रहेगी और ये कहती रहेगी "इंसान! खाने के लिये तू नहीं पैदा हुआ है, देने के लिये पैदा हुआ है।" देने का तेरा अधिकार है, तैंने क्या दुनिया में दिया? आध्यात्मिकता कहती है, काटती है, भगवान् पूछता है,

भगवान् जवाब–तलब करता है हर इन्सान से और जब भगवान् आता है किसी आदमी के पास तो यही कहता हुआ चला आता है ''मैंने तुझे दुनिया की सबसे बड़ी नियामत और सबसे बड़ी दौलत इन्सान की जिन्दगी दी और इन्सान की जिन्दगी का तैंने किस तरीके से इस्तेमाल किया, जवाब दे, गुनहगार! जवाब दे? गुनहगार! मुझे जवाब दे।'' भगवान् यही सवाल करता हुआ चला आता है। भगवान् एक ओर से पूछता चला आता है ''तैंने मुझे क्या दिया?'' और हम भगवान् से तकाजा करते हुए चले जाते हैं। हमारे तीन लड़कियाँ हैं, चौथा लड़का कहाँ है? और हमको तो ढाई सौ रुपये मिलते हैं, साढ़े चार सौ रुपये की तरक्की कहाँ हुई? और हमारे पास अस्सी बीघा खेत है, सवा सौ बीघा खेत कहाँ है? हम भगवान् से शिकायत करते चले जाते हैं कि हमको नहीं दिया गया और भगवान् कहता रहता है, हमको नहीं दिया गया। इन्सान! जब भगवान् आयेगा आदमी के भीतर तो यह कहता हुआ चला जायेगा कि इन्सान को उदार होना चाहिए, इन्सान को दयालु होना चाहिए, इन्सान को देने वाला होना चाहिए। आदमी के पास जो है, उसको दोनों हाथों से देना चाहिए।

मित्रो! ये मैं इंसानियत के तकाजे से, अपनी आध्यात्मिकता के तकाजे से, अपनी आत्मा के तकाजे से और अपने भगवान् के तकाजे से अगर मैं आप लोगों की सहायता करता हूँ, मदद करता हूँ तो आप जान लीजिए आपके ऊपर मेरा कोई एहसान नहीं है। मेरा एहसान मेरे अन्तरात्मा के ऊपर है, जो मुझे हर वक्त कोसती रहती है कि–''बेहूदे! दुनिया को देकर के जा, खा करके मत जा। कर्जदार होकर के मत जा। यहाँ देने के लिये इन्सान पैदा किया गया है।''

मित्रो! आप में से हर आदमी की हालत ये हो जायेगी, जब आपके पास भगवान् आयेगा। गायत्री मंत्र जिस दिन आपके पास आयेगा, आप में से हर आदमी की हालत ये होगी, जिस तरह की मेरी है। जब कभी भी राम आपके पास आयेगा, आप इसी तरीके से होकर के रहेंगे, जैसे हनुमान् होकर के रह रहा था और कृष्ण जिस दिन आपके पास आयेगा, उस दिन आप उस तरीके से होकर के रहेंगे, जैसे कि अर्जुन होकर के रहा था।

मित्रो! ये शिक्षण, ये शिक्षण आध्यात्मिकता का है। ये गायत्री मंत्र का शिक्षण है। आप कहेंगे, गुरुजी! हम तो गायत्री मंत्र का चमत्कार सीखने और आपकी ऋद्धियाँ सीखने आये थे। बेटा! कोई चमत्कार दुनिया में नहीं है और कर्मकाण्ड, कर्मकाण्डों का कोई मूल्य, कोई महत्त्व दुनिया में नहीं है। वाल्मीकि

डाकू का मरा-मरा उच्चारण करना सार्थक हो गया और शबरी का राम-राम कहना सार्थक हो गया और आपका विष्णु सहस्रनाम का पाठ करना धूल में चला गया और आपका भागवत् का पाठ करना जहन्नुम में चला गया और आपकी गीता और रामायण के पाठ दोहराने भाड़ में चले गये। लेकिन शबरी, शबरी का राम का नाम चमत्कार दिखाता रहा। भंगिन के थूक का सड़ा हुआ और गंदा वाला बेर, सूखा वाला बेर, सड़ा हुआ बेर खाते हुए चले गये भगवान्। क्यों, क्यों खाया उसने बेर? उन्होंने कहा-शबरी मैं बेर नहीं खाता, मैं मोहब्बत खाता रहता हूँ, मैं आत्मा खाता रहता हूँ, मैं ईमान खाता रहता हूँ, मैं दृष्टिकोण खाता रहता हूँ, मैं महानता खाता रहता हूँ। मेरी खुराक सिर्फ ये है। जो कोई आदमी ये खुराक मुझे खिला देता है, उसको खाकर के मैं धन्य हो जाता हूँ। मैं तो मोहब्बत पीता रहता हूँ, प्यार पीता रहता हूँ।

इन्सानों के पास मोहब्बत कहाँ? स्वार्थों से डूबे हुए, कामनाओं से डूबे हुए, तृष्णाओं से डूबे हुए, लोभ से डूबे हुए, इन सब पाप पंकों में जलते हुए इंसान के पास पानी कहाँ है? पानी रहा होता तो उनकी आत्मा शान्त हो गई होती, तृप्त हो गयी होती। शीतलता का अनुभव जीवन में किया होता। उल्लास उनके जीवन में आया होता। दूसरों को उल्लास दिया होता। ए अभागे! आग में जलते हुए इन्सान! पानी इनके पास कहाँ? बृज की छोकरियों ने एक कटोरी भर छाछ पिलाया और उसको (कृष्ण को) सारे आँगन में नाच नचाकर के दिखाया।

मित्रो! यही मेरे जीवन की कहानी है, यही मेरे जीवन का अध्यात्म है। यही है मेरी उपासना की विधि। यही है मेरे साधना के संस्कार। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शान्तिः ॥

वाणी और लेखनी के माध्यम से लोगों को किसी बात की, अध्यात्मवाद की भी जानकारी कराई जा सकती है। इससे अधिक भाषणों का कोई उपयोग नहीं। दूसरों को यदि कुछ सिखाना हो, तो उसका एक मात्र तरीका अपना उदाहरण प्रस्तुत करना है। यही ठोस, वास्तविक और प्रभावशाली पद्धति है।
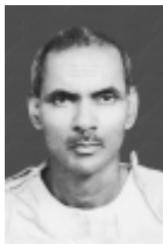
मेरा जीवन - अखण्ड दीपक

दीपक मैंने जलाये, अखण्ड दीपक मैंने जलाया और अखण्ड दीपक के सामने बैठा रहा, गायत्री मंत्र का जप करता रहा और भाव-विभोर साँप जैसे लहराते हैं, ऐसे ही मैं लहराता रहा और मैं अपने आपसे पूछता रहा कि "दीपक के तरीके से तू जल सकता है, दूसरों को रोशनी देने के लिये"। छदाम का दीपक, कानी-कौड़ी का तेल, एक कानी-कौड़ी का इसमें रूई, इन सबको मिलाकर के अगर ये नन्हा सा दीपक दूसरों को रास्ता दिखा सकता है, दूसरों को रोशनी दे सकता है, अपने आपको जला सकता है, दूसरों को रोशनी देने के लिये। "इन्सान! क्या तू अपने जीवन को दीपक जैसा नहीं बना सकता?" अखण्ड दीपक मेरा जलता रहा। केवल मैं घी जलाने वाले लोगों में से नहीं हूँ। मैं तेल जलाने वाले लोगों में से नहीं हूँ। मैं चीजों को बरबाद करने वाले लोगों में से नहीं हूँ।

मैं उन लोगों में से हूँ जो कर्मकाण्डों के माध्यम से अपनी भावनाओं का परिष्कार करने पर यकीन करते हैं और अपनी भावनाओं को परिष्कृत करता रहा। दीपक के तरीके से मेरा जीवन, जलता हुआ मेरा जीवन, दूसरों को रोशनी देता हुआ जीवन, लाखों आदमियों को रास्ता बताता हुआ जीवन, लाखों आदमियों के लिये द्वार खोलता हुआ जीवन। मेरा जीवन है, दीपक जैसा। जला हूँ मैं। शुरू से लेकर के आखिर तक मैं जलता रहा।

15 वर्ष की उम्र से मुझे जलाया गया। 60 साल तक मैं सिर्फ जलना जानता हूँ। दूसरा कुछ नहीं जानता और अगले वाले दिन जो मुझे हिमालय पर जाकर के व्यतीत करने हैं। हिमालय पर क्या होता है? सिनेमा होता है क्या, नहीं बेटा। हिमालय पे क्या होता है, मिठाइयाँ बिकती हैं क्या? नहीं। हिमालय पे कचौड़ियाँ बिकती हैं क्या? क्या होता है हिमालय पे। रात भर जंगली जानवर चिल्लाते हैं और रात भर बड़े-बड़े अजगर निकलते हैं। पेड़ों के नीचे साँय-साँय होती रहती है और ठण्ड जब पड़ती है, तो आदमी का खून जम जाता है और आदमी को चलना-फिरना मुश्किल हो जाता है। ऐसे कष्टसाध्य

जो कि जेलखानों से भी लाख गुनी ज्यादा मुसीबत की जगह है। मैं जा रहा हूँ। किसलिए जा रहा हूँ, जलने के लिये? मुझे जलना है, इसीलिये जलना है कि लोगों के अन्दर वो आग और वो गरमी पैदा कर सकूँ, जो लोगों के अन्दर आग और गरमी सो गयी है।

आदमी का ईमान सो गया, आदमी की आत्मा सो गई, आदमी का दृष्टिकोण सो गया, आदमी का आदर्श सो गया। आदमी सिर्फ हैवान के तरीके से जिन्दा है–पेट पालने के लिये और बच्चे पैदा करने के लिये। इसके अन्दर आत्मा सो गई। आत्मा सो गई, मैं जलने के लिये जा रहा हूँ। गरमी पैदा कर रहा हूँ। मुर्दे को या फिर जल जाना चाहिए या जीवित हो जाना चाहिए। अपनी आग पैदा करने के लिये जा रहा हूँ। अपने आपको मैं रगड़ने जा रहा हूँ और रगड़ करके फिर मैं चाहता हूँ आग पैदा करूँ, रोशनी पैदा करूँ, गरमी पैदा करूँ, रफ्तार पैदा करूँ, दृष्टिकोण पैदा करूँ और आत्मा का बोध और आत्मा का ज्ञान, जिसको मैंने पहले दिन आपको प्रकाश के रूप में उल्लेख किया था कि मेरे गुरु ने मुझे प्रकाश दिया, ऊँचे दृष्टिकोण के रूप में। मैं उसके लिये जा रहा हूँ फिर, मैं अब चला। लेकिन, मैं जहाँ कहीं भी जाऊँगा, आपको यकीन दिलाता हूँ, आपको मैं दिखूँगा नहीं, पर आप मुझे दिखाई पक्का पड़ते रहेंगे। मेरी आँख से आप दूर नहीं रह सकते।

मेरे पाँच शरीर हैं, आप जानते नहीं क्या? पर पचासों लोग जानते हैं, एक जगह मैं एक काम करता रहता हूँ, दूसरी जगह पर मैं दूसरा काम करता रहता हूँ। एक समय में, मैं बराबर लेख लिखता रहता हूँ और बराबर मेरी पुस्तकें बन छपती रहती हैं। एक शरीर से आप यहीं बैठा हुआ मुझे देखते हैं न। बराबर यहाँ सबेरे से आता हूँ, शाम तक बैठा रहता हूँ। रात को फिर पूजा करता हूँ, उठ जाता हूँ, फिर सायंकाल को पूजा करता हूँ, आप खाली देखते हैं मुझे। कौन से वक्त में मैं लिखा करता हूँ, आपको मालूम है क्या? मेरे पास पूरा समय है, आठ घण्टे का। मैं आठ घण्टे लिखता हूँ बराबर। आठ घण्टे मेरे गुरु को दिये जाते हैं, पत्रिकाएँ लिखी जाती हैं, दूसरी चीजें लिखी जाती हैं, शास्त्र लिखे जाते हैं, पूरा आठ घण्टे मैं लिखता हूँ, पर आठ घण्टे का वक्त, आप नहीं जानते मैं कहाँ से वक्त लाता हूँ। एक आदमी नहीं हूँ, मैं बहुत आदमी हूँ। एक घोंसले के अन्दर हम पाँच आदमी रहते हैं, पाँच कोष बताये जाते हैं, लेकिन पाँच कोष इस कलेवर के अन्दर रहते हैं और हम पाँच आदमी का काम करते हैं।

मैं आप लोगों की देख-भाल रखूँगा। मेरा प्यार आपके ऊपर बरसता रहेगा। मैं आपको विदाई आज दे रहा हूँ। लेकिन ये विदाई अन्तिम विदाई नहीं है। ये विदाई शारीरिक दृष्टि से विदाई हो, लेकिन आत्मा की दृष्टि से ये विदाई नहीं हो सकती। आत्माएँ मरा नहीं करतीं, आत्माओं की बनी हुई मुहब्बत दूर नहीं हो सकती। आप लोगों को मैंने मुद्दतों से अपनी मोहब्बत के जाल में जकड़ के रखा था और मैं उस समय तक जकड़ के रखूँगा, जब तक हमारा और आपका कोई न कोई एक फैसला नहीं हो जाता। या तो मुझे ही नरक में जाना पड़ेगा या तो आपको भी स्वर्ग में चलना पड़ेगा। या तो कुत्ते के साथ युधिष्ठिर को भी जमीन पर रहना पड़ेगा या तो युधिष्ठिर के साथ कुत्ते को भी जाना पड़ेगा। कुत्ता और युधिष्ठिर की उपमा तो बहुत बड़ी हो गई। लेकिन मैं आपको उतनी बड़ी उपमा का अधिकारी तो नहीं मानता। लेकिन ये मानता हूँ कि मेरे साथ आप न जाने कितने जन्मों के साथ जुड़े हुए थे और उसी जुड़े हुए की वजह से मैंने खींच करके आपको बुलाया। अपना सारा मोहब्बत-प्यार आपके ऊपर उड़ेलने के लिये, आपके ऊपर सारी मुहब्बत उड़ेलने के लिये मैंने खींच करके आपको बुलाया है। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शान्तिः ॥

हृदय में विस्तृत प्रेम, वाणी में माधुर्य, व्यवहार में सरलता, नारी मात्र में मातृत्व की भावना, कर्म में कला और सौन्दर्य की अभिव्यक्ति, सभी के प्रति उदारता और सेवा भावना, गुरुजनों का सम्मान और उनके आदेश का पालन, सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय, सत्संग, साधना में रुचि, शरीर, वस्त्र, घर व स्थान की स्वच्छता एवं शोभावर्धन, कुसंग व आलस्य का परित्याग और श्रमशीलता, ब्राह्मण (ब्राह्मणत्व सम्पन्न व्यक्तित्व) के सदैव स्वभाव और अभ्यास के अंग बन जाते हैं।

—वाङ्मय- 33 - 9.13

त्याग और समर्पण

मैंने अपना ज्ञान जो दुनियाँ से सीखा था, वास्तव में मैं बराबर आपसे बोलता रहा हूँ, रात भर आपसे बात करता रहा हूँ। आप सोये रहे हैं और मैं आपके सिरहाने बैठा-बैठा आपको थपकियाँ लगाता रहा हूँ, लोरियाँ सुनाता रहा हूँ, मोहब्बत के गीत सुनाता रहा हूँ। न जाने क्या से क्या कहता रहा हूँ और मैंने बहुत खुशामद की है आपकी। इन्सानो! मेरे मित्रो! तुम मुझे देख नहीं पाओगे क्या? तुम मुझे केवल गुरुजी, आशीर्वाद देने वाले ही मानते रहोगे क्या? मैं जलता हुआ इन्सान हूँ और मैं सही इन्सान हूँ। क्या तुम जलते हुए इन्सान नहीं बन सकते? क्या भगवान् की लौ में समाने के लिये, लोगों के अन्दर लौ की आग, ज्ञान की आग पैदा नहीं कर सकते। न जाने मैं क्या से क्या कहता रहा हूँ? मेरी चारों वाणियाँ (परा, पश्यन्ति, मध्यमा और बैखरी) बोलती रही हैं। आपके हृदय से मैं बोलता रहा हूँ, आत्मा से बोलता रहा हूँ, कानों से बोलता रहा हूँ, मस्तिष्क से बोलता रहा हूँ। आप जाइए और आप मेरी आवाज को आज बाँध कर के चले जाइए। मैं आपको छोड़ने वाला नहीं। जहाँ कहीं भी रहूँगा, बोलता रहूँगा और आपसे लड़ता रहूँगा, कहता रहूँगा। जैसे अभी इन चादरों में आप सोये रहे हैं, तब मैंने आपको बहुत कुछ कहा है। यह कहना उस वक्त बन्द हो जायेगा, जब आप मेरी राह पर चलेंगे। उस राह पर, जिस राह पर मैं अपने गुरु के इशारे पर चला और मैंने अपनी जिन्दगी सारी की सारी उनके कहने के मुताबिक़ ही खर्च कर डाली।

मैं चाहता हूँ आपका वक्त, उन कामों में खर्च हो। मैं चाहता हूँ आपका पसीना, उन कामों में खर्च हो। मैं चाहता हूँ आपका पैसा, उन कामों में खर्च हो। जिन कामों के लिये मैं जीया, जिन कामों के लिये मैं पैदा हुआ। जिन कामों में मैं ये कल्याण चाहता हूँ, संसार का कल्याण देखता हूँ और मानवता का उत्थान। इसीलिये छोटी साधना के रूप में मैं आपको दस पैसा रोज खर्च करने की बात कहता रहा, एक घण्टे समय खर्च करने की बात कहता रहा।

छोटी-छोटी बातें थी शुरुआत की। लेकिन ये तो शुरुआत है, जो मैं बहुत चाहता हूँ, हर वक्त कहता हूँ। अगले दिन आयेंगे, जब आपको मेरे तरीके से अपना सर्वस्व भगवान् के चरणों पर समर्पित करना होगा और अपनी सारी की सारी चीजें समेट करके भगवान् के पाँवों पे लाकर रखनी पड़ेंगी, ताकि भगवान् के पास जो कुछ है, उन सबको पाने के हकदार आप बन जायें।

रवीन्द्रनाथ टैगोर की एक छोटी वाली कहानी। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने एक गीत गाया, कविता गायी, ''मैं गया दरवाजे-दरवाजे भीख माँगने के लिये, अनाज की भर ली मैंने झोली। एक आया भिखारी मेरे सामने, उसने कहा, तेरी झोली में से कुछ हमको भी दे।'' रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उस महत्त्वपूर्ण कविता में लिखा है, ''मैंने बड़ी हिम्मत की और एक दाना झोली में से निकाला और उसकी हथेली पर रख दिया और भिखारी मुस्कुराता हुआ चला गया एक दाना लेकर। मैं आया अपने घर।'' रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गाया ''मैंने अपनी झोली को पलट दिया और उस अनाज की झोली में से एक बड़ा वाला सोने का दाना रखा हुआ मैंने देखा। फूट-फूट करके रोया, मैंने कहा, क्यों न मैंने अपनी झोली के सारे के सारे दाने उस भिखारी को सौंप दिये; ताकि झोली सारे के सारे सोने के दानों से भर जाती।'' यही है, मेरे सारे के सारे जीवन का निचोड़। यही है, मेरी उपासनाओं का निचोड़। यही है, मेरी साधना का निचोड़। यही है, मेरे जीवन का निचोड़। मैंने अपनी सारी झोली, सारा वक्त, सारा पैसा, सारी शक्ति, सारा अकल, सारा दिमाग अपने भगवान् के चरणों पर रख दिया और भगवान् के पास जो कुछ भी चीजें थीं, जो कुछ भी उसके पास करामातें थीं, जो कुछ भी सिद्धियाँ थीं। जो कुछ भी चमत्कार थे। जो कुछ भी विभूतियाँ थीं। वो सारी की सारी लाकर के मुझे दे दिया। मैं कहता रहा ''मुझे नहीं चाहिये, तेरी ऋद्धियाँ'', वो कहता रहा ''मुझे नहीं चाहिये, तेरा धन'', मैं कहता रहा ''मुझे नहीं चाहिये, तेरी सिद्धियाँ'' वो कहता रहा ''मुझे नहीं चाहिये, तेरा वैभव''।

मित्रो! हम तो इसी तरीके से धक्का-मुक्की करते रहे और हमारी धक्का-मुक्की दूसरे तरह की होती तो कहते ''भगवान् तेरी जेब काट करके रहूँगा'' और भगवान् कहता ''जरा भी नहीं दूँगा।'' ऐसी धक्का-मुक्की रही होती तो आपके तरीके से मैं भी भगवान् से लड़ाई लड़ता, लेकिन मेरी लड़ाई बड़ी महत्त्वपूर्ण लड़ाई है।

मैं चाहता हूँ, ऐसी लड़ाई आपके और भगवान् के बीच में खड़ी हो तो आप लोग भी मेरे तरीके से आध्यात्मिकता का आनन्द उठायें, आध्यात्मिकता का लाभ लें और अपने इसी जीवन में धन्य होकर के जायें। जैसा मैं धन्य होकर के अपने 60 वर्ष के जीवन को पूर्ण करता हुआ विदाई आप लोगों से ले रहा हूँ। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शान्तिः ॥

आज की समस्याएँ क्या हैं? गुत्थियों का हल और समाधान निकालने के लिए क्या कदम बढ़ाए जाने चाहिए और किस तरीके से काम करना चाहिए? यह सिखाने का प्रबन्ध किया है।...हमने यह हिम्मत की है कि कानी कौड़ी की भी फीस किसी के ऊपर लागू नहीं की जाएगी। यही विशेषता नालन्दा-तक्षशिला विश्वविद्यालय में भी थी। वही हमने भी की है, लेकिन बुलाया केवल उन्हीं को है, जो समर्थ हों, शरीर या मन से बूढ़े न हो गए हों, जिनमें क्षमता हो, जो पढ़े-लिखे हों। इस तरह के लोग आयेंगे तो ठीक है।...जो लायक हों वे यहाँ की ट्रेनिंग प्राप्त करने आएँ और हमारे प्राण, हमारे जीवट से लाभ उठाना चाहें, चाहे हम रहें या न रहें, वे लोग आएँ। प्रतिभावानों के लिए निमन्त्रण है, बुड्ढों, अशिक्षितों, उजड्डों के लिए निमन्त्रण नहीं है।...**यह धर्मशाला नहीं है। यह कॉलेज है, विश्वविद्यालय है। कायाकल्प के लिए बनी एक अकादमी है। हमारे सतयुगी सपनों का महल है।** आपमें से जिन्हें आदमी बनना हो, इस विद्यालय की संजीवनी-विद्या सीखने के लिए आमन्त्रण है। **कैसे जीवन को ऊँचा उठाया जाता है, समाज की समस्याओं का कैसे हल किया जाता है? यह आप लोगों को सिखाया जाएगा।** दावत है आप सबको। आप सबमें जो विचारशील हों, भावनाशील हों, हमारे इस कार्यक्रम का लाभ उठाएँ। अपने को धन्य बनाएँ और हमको भी।

—वाङ्मय-नं-68 पेज-1.40-41
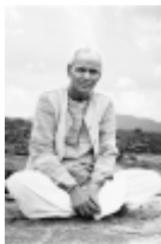
पूजा-उपासना के लाभ

अब मैंने लोगों को बताया कि भगवान् की पूजा-उपासना करने की प्रक्रिया अगर सही हो तो आदमी के पास वो सारे चमत्कार आ जायेंगे और सारी सिद्धियाँ आ जायेंगी, सारा प्रभाव उत्पन्न हो जायेगा, जो पुराणों में-ब्रह्मग्रन्थों में लिखा हुआ है। शर्त केवल एक ही है कि पूजा-उपासना सही हो। सही किस तरीके से हो, ये मैंने उदाहरण बताकर के लोगों को दिखाया। दिखाया कि हमारा दैनिक जीवन, तपस्वी का जीवन होना चाहिए और साधक का जीवन होना चाहिए। हम काम-धंधा करें, व्यापार करें, उसमें हमारी ईमानदारी जुड़ी रहनी चाहिए। पूजा-उपासना मैंने की और पूजा-उपासना जो मैंने की, अपने आप में साबुन लगाने के लिये की। अपनी-अपनी मर्जी का हमें साबुन जिस तरीके से बराबर घिसा जाता है, उस तरीके से मैंने बार-बार राम का नाम लिया साबुन के तरीके से।

भगवान् की खुशामद करने के लिये मुझे कोई खुशामद नहीं करनी है। मुझे खुशामद से बहुत नफरत है। मैं खुशामद भगवान् की भी नहीं करूँगा। क्यों करूँ मैं भगवान् की खुशामद? नाक मैं किसी के सामने भी नहीं रगड़ सकता। भगवान् के सामने भी नहीं। भगवान् अपने घर के हैं, तो मैं अपने घर का हूँ। मैं नाक रगड़ूँ, क्यों रगड़ूँ भगवान् के सामने नाक? मैं गिड़गिड़ाऊँ, क्यों गिड़गिड़ाऊँ भगवान् के सामने? मैं किसी के सामने नहीं गिड़गिड़ा सकता। मैं गिड़गिड़ाऊँगा, तो अपनी आत्मा के सामने गिड़गिड़ाऊँगा और अपने मन के सामने गिड़गिड़ाऊँगा, अपने पुरुषार्थ के सामने गिड़गिड़ाऊँगा। मैं कहूँगा कि मेरे पुरुषार्थ, मैं तेरे सामने गिड़गिड़ाता हूँ, तू अपने रास्ते चला जा और मैं अपने मन के सामने गिड़गिड़ाऊँगा; अभागे, तू मेरा सत्यानाश करने के लिये जा रहा है। तू कहाँ भटकता है, जो तेरा सही रास्ता है, वहाँ चल न। भटकता क्यों है? मुझे गिड़गिड़ाना होगा, तो वहाँ गिड़गिड़ाऊँगा। मुझे गिड़गिड़ाना होगा तो मेरी आत्मा के सामने गिड़गिड़ाऊँगा और मैं यह कहूँगा कि 'तू है शक्ति की पुञ्ज और मुझे अशक्त बनाये क्यों फिर रही है? मुझे दरवाजे-दरवाजे भटकने के लिये कह रही है और मुझे पत्थरों के टुकड़ों के

सामने नाक रगड़ने के लिये क्यों मजबूर करती है? तेरे पास सब कुछ है और मैं बाहर किससे माँगने जाऊँ, किसके सामने हाथ पसारूँ? तेरे पास सब कुछ है। तू मुझे देती नहीं है।' मैं लडूँगा तो अपनी आत्मा से लडूँगा। मैं खुशामद करूँगा तो अपनी आत्मा की करूँगा। मैं भीख माँगूँगा तो अपनी आत्मा से माँगूँगा। पूजा-उपासना मैंने की, इस तरह की भावना के साथ। जैसे आम तौर से लोगों में पाई जाती है, गरीब और भिखमंगे लोगों की मनोवृत्ति के साथ, मैं गरीब और भिखमंगे के तरीके से कभी नहीं गया, भगवान् के पास।

आज तक मैंने अपने साबुन के तरीके से अपने राम का नाम लिया और मैंने बुहारी के तरीके से राम का नाम लिया। अपने मकान को साफ करने के लिये और मैंने धोबी के पत्थर के तरीके से राम का नाम लिया, अपनी पिटाई करने के लिये और मैंने रूई धुनने वाले धुनिये के रूप में राम का नाम लिया, अपने आपकी धुनाई करने के लिये। बार-बार रूई को धुनिया धुनता है न। एक ही पात्र के ऊपर बार-बार मारता है चोट, तो जैसे धुनिये के हाथ में हथौड़ी लगी रहती है, जो टाट के ऊपर बजाता है। मैंने राम के नाम को धुनिये के तरीके से काम में लिया और जो आदमी भिखमंगे के तरीके से केवल गिड़गिड़ाते हुए, अपनी मनोकामना पूरी करने के तरीके से काहिलों, बुजदिलों, कमीनों के तरीके से, छोटी हरकत की वजह से भगवान् के सामने जायें। क्या भगवान् का प्यार पायेगा? क्या भगवान् के सामने उसकी इज्जत रह जायेगी? कोई नहीं रह जायेगी।

मैं एक इज्जतदार आदमी हूँ अपने भगवान् के सामने। और उसने मेरी इज्जत को रखा है और मैंने भगवान् की इज्जत को रखा है। मैंने कहा-तेरी इज्जत और तेरी शान, इस बात में है, तेरा बेटा और तेरा बच्चा, शान की जिन्दगी जीये। मेरी शान के साथ तेरी शान जुड़ी हुई है। मैंने भगवान् की शान को रखा और ये बताया कि इन्सान का जीवन देकर के मुझे, कोई गलती भगवान् ने नहीं की। इसका प्रतिफल मिलकर के रह गया। भगवान् की शान और मेरी शान को भगवान् ने रखा। भगवान् ने कहा कि जा, तेरी शान में कोई बट्टा आने वाला नहीं है। मैं एक शानदार आदमी हूँ। मेरी शान में कोई बट्टा नहीं लग सकता और किसी ने बट्टा नहीं लगाया। किसी ने ऊँगली नहीं उठाई और मैंने कोई दाग-धब्बा लगने नहीं दिया।

न जाने मैं क्या से क्या सिखाता रहा लोगों को, आध्यात्मिकता की शिक्षा और प्रक्रिया के द्वारा और लोगों को ये बताता रहा कि शान और इज्जत के साथ में अगर कोई आदमी उपासना करने के लिये, भगवान् का पल्ला पकड़ने के लिये खड़ा हो जाये तो किसी बात की कमी नहीं रहेगी। तब कोई काम रुका नहीं रह सकता।

इतने बड़े-बड़े काम मैंने किये हैं-कोई काम रुका रहा क्या? भगवान् ने मुझे कहा-साहित्य के माध्यम से लोगों के दिलों और दिमागों को बदल। मैंने कहा-मेरे पास सामर्थ्य कहाँ है? उसने कहा-''बेटा! सामर्थ्य तो आत्मा के भीतर रहती है।'' बस, मैंने आत्मा की सामर्थ्य को तलाश किया और न जाने क्या से क्या, कितना बड़ा साहित्य भण्डार दिया, जो दुनिया को बदल डालने के लिये काफी होना चाहिए और इसकी वजह से लाखों मनुष्यों के दिलों और दिमागों में छाया हुआ हूँ मैं। पचास लाख मनुष्यों को दीक्षा दे चुका हूँ और करोड़ों मनुष्यों के दिल और दिमाग के ऊपर सारे विश्व भर में छाया हुआ हूँ, ये चमत्कार नहीं है, क्या?

हाँ, मुझ जैसा साधनहीन व्यक्ति जिसके पास कोई पैसे की सहायता करने वाला नहीं, जिसको कोई समर्थन देने वाला नहीं, जिसको कोई सहयोग देने वाला नहीं था। अकेला आदमी, अकेला हूँ, ऐसा करता रहता है। अकेला आदमी दुनिया को किस तरीके से हिलाता है और अभी मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। जरा ठहरिए तो सही। जब मूल्यांकन किया जायेगा कि किस तरीके से मैंने समाज को हिला करके रखा, साहित्य के द्वारा, शिक्षण के द्वारा, वाणी के द्वारा। वाणी को जब मैंने खोला मुँह में से, तो लोगों के दिलों को चीरती और कलेजों को फाड़ करके और लोगों के दिमागों को फोड़ती पार निकल गई, जिस तरीके से बंदूक की गोलियाँ पार सीने में से निकल जाती हैं, उस तरीके से मेरे हलूक और मेरे शब्द जो मुँह में से निकलते ही वो लोगों को छेदती रही है और छेदती रहेगी। अभी मैं जा रहा हूँ क्या? हाँ। अभी मैं बैखरी वाणी को बन्द कर रहा हूँ और परा, पश्यन्ति और मध्यमा वाणी को फिर काम में ला रहा हूँ। लोगों के दिलों को चीरूँगा और लोगों के कलेजों को हिलाऊँगा और आदमी के दिमागों को कूटकर के, तोड़कर के जगाऊँगा।

इस तरह की सामर्थ्य लोगों में दिखनी ही चाहिए। हाँ, ये प्रभाव किसका है? ये प्रभाव विशुद्ध आध्यात्मिकता का है। मेरे जैसे छोटे और मामूली और साधनहीन व्यक्ति का नहीं है। मैंने लोगों को ये बताया और दिखाया जीवन के क्रिया-कलाप के द्वारा और मैंने अपने जीवन के क्रिया-कलाप के द्वारा सर्वसाधारण को यह समझाया कि जब कोई आदमी आध्यात्मिकता का सही रास्ता जान सकता हो और सही रास्ते से उसको पकड़ सकता हो तो उसमें से हर आदमी को वही लाभ उठाने की गुंजाइश है, जो मेरे लिये लाभ उठाने की गुंजाइश थी। आज की बात समाप्त।

।। ॐ शान्तिः ।।

मित्रो ! **तुम्हीं को कुम्हार व तुम्हीं को चाक बनना है।** हमने तो अनगढ़ सोना, चाँदी ढेरों लगाकर रखा है, तुम्हीं को साँचा बनकर सही सिक्के ढालना है। साँचा सही होगा तो सिक्के भी ठीक आकार के बनेंगे। आज दुनिया में पार्टियाँ तो बहुत हैं, पर किसी के पास कार्यकर्त्ता नहीं हैं। 'लेबर' सबके पास है, पर समर्पित कार्यकर्त्ता जो साँचा बनता है व कई को बना देता है अपने जैसा, कहीं भी नहीं है। हमारी यह दिली ख्वाहिश है कि हम अपने पीछे समर्पित कार्यकर्त्ता छोड़कर जाएँ। इन सभी को सही अर्थों में 'डाई' - एक साँचा बनना पड़ेगा तथा वही सबसे मुश्किल काम है। रॉ मेटेरियल तो ढेरों कहीं भी मिल सकता है। पर 'डाई' कहीं-कहीं मिल पाती है। श्रेष्ठ कार्यकर्त्ता, श्रेष्ठ 'डाई' बनता है। तुम सबसे अपेक्षा है कि अपने गुरु की तरह एक श्रेष्ठ साँचा बनोगे।

–अपने ब्राह्मण एवं संत को जिन्दा कीजिए पृष्ठ-२३

पूजा-उपासना के मर्म

पात्रता का विकास अगर आदमी न कर सका। केवल उसके दिमाग पर ये वहम और ये ख्वाब और ये ख्वाहिश जमा हुआ बैठा रहा कि लकड़ी की माला और जबान की नोंक से उच्चारण किया जाने वाला मंत्र राम-राम, राम-राम चिल्लाता रहा, तोते के तरीके से टें-टें, टें-टें चिल्लाता रहता है और हम राम-राम जबान में से चिल्लाते रहते हैं। राम नाम जबान के कोने में से चिल्लाया गया हो तो बेकार है ऐसा राम का नाम, कुछ फायदा नहीं हो सकता, राम के नाम का। लकड़ी के माला के ऊपर जो गायत्री मंत्र घुमाया गया है, मैं नहीं जानता उसमें से कुछ फायदा ले सकता है कि नहीं। मैं लाखों बच्चों को जानता हूँ, जो शिकायत करते हुए आते हैं और कहते हैं राम का नाम जपा था, हमको कोई फायदा नहीं हुआ और लाखों मनुष्य मेरे पास आते रहते हैं और कहते हैं, हमने गायत्री मंत्र जपा था, पर हमको कोई फायदा नहीं हुआ। और मैं इस बात की तस्दीक करता हूँ, कोई फायदा न हुआ है और न आगे होगा।

लेकिन मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि यह गायत्री मंत्र अगर सही तरीके से जपा गया हो और सही तरीके से जीवन में धारण किया गया हो और जीवन की नसों-नाड़ियों में, भावनाओं में, विचारणा में ओत-प्रोत किया गया हो, तो आदमी को चमत्कार दिखा सकता है और चमत्कार का सबूत और चमत्कार का नमूना हूँ मैं, जो आपके सामने बैठा हुआ हूँ। मैं एक नमूना हूँ और मैं एक सबूत हूँ। मेरी जिन्दगी के सैकड़ों पन्नों के अध्याय हैं और वह सब बन्द हैं, मैंने सील बन्द कर दिया है और मैंने इसलिये सील करके रखे हैं कि मेरे मरने तक के लिये उनको खोल के नहीं रखा जाये। इतने लोगों की मैंने सेवाएँ की, इतने लोगों की सहायताएँ की। उनकी सेवा और सहायता का ब्यौरा इतना बड़ा है कि आपको यह मालूम पड़ेगा कि जो एक आदमी अपनी समस्याओं को पूरा नहीं कर सकता, एक आदमी अपनी ख्वाहिशों को पूरा नहीं कर सकता। लेकिन एक आदमी इतने ज्यादा मनुष्यों के, इतने ज्यादा किस्म की सहायता करने में समर्थ है। हाँ! मैं कहता हूँ, समर्थ हूँ।

मित्रो! यह सिंहासन है और इस पर हर आदमी को बैठने का हक नहीं। उस सिंहासन पर बैठने का हक उस आदमी को है, जिसने केवल अपनी जबान से, जबान तक सीमित नहीं रखा गायत्री मंत्र को। उँगलियों तक सीमित नहीं रखा गायत्री मंत्र को, बल्कि इस अमृत को पीता हुआ चला गया और अपने हृदय के अन्तरंग से लेकर के रोम-रोम में जिसने परिप्लावित कर लिया। उसको ये चमत्कार देखने का हक है और वो आदमी ये कह सकता है कि हमने गायत्री मंत्र जपा था और हमको फायदा नहीं हुआ, ऐसा आदमी आये मेरे पास और मैं कहूँगा आपको फायदा दिलाने की मेरी जिम्मेदारी है और मैं अपना तप, अपने पुण्य के अंश काटकर के आपको दूँगा और आपको ये यकीन और ये विश्वास करा करके जाऊँगा।

गायत्री मंत्र के माने है भावनाओं का परिष्कार। भावनाओं का परिष्कार, जो मुझे मेरे गुरु ने सिखाया था। मित्रो! मेरे रोम-रोम में समाया हुआ है गायत्री महामंत्र, बुद्धि का संशोधन करने का मंत्र। मैंने सारा का सारा दिमाग इस मार्ग पर खर्च किया कि मेरी अकल, मेरी विचारणाएँ, मेरी इच्छाएँ, मेरी आकांक्षाएँ, मेरा दृष्टिकोण और मेरे विचार करने के ढंग, मेरी आकांक्षाएँ और मेरी ख्वाहिशें, क्या उस तरह की हैं, जैसे कि एक गायत्री भक्त की होनी चाहिए। मैं अपने आपको बराबर कसता रहा और अपने आपकी परख बराबर करता रहा। खोटे होने की परख, खरे होने की परख। पुराने जमाने के रुपये को कसौटी लगायी जाती थी, पुराने जमाने में जो रुपये चला करते थे, कसौटी लगाई जाती थी। वो खोटा अलग फेंक देते थे, खरा अलग फेंक देते थे। मैंने अपने आपकी कसौटी लगाई और कसौटी बता देती थी कि ये खोटा पैसा है, खरा पैसा है। अपनी हर मनोवृत्ति के ऊपर कसौटी लगाता चला गया और मैं यह देखता हुआ चला गया कि मैं कहाँ खोटा सिक्का हूँ, कहाँ खरा? जहाँ खोटा था, अपने आपको सँभालता रहा; जहाँ खरापन था, वहाँ सुधारता रहा।

मेरी उपासना का क्रम पूजा-उपासना तक सीमित नहीं है। 24 घण्टे मैंने उपासना की है, 24 घण्टे अपने आपको परिशोधन और संशोधन करने के लिये आग में तपाया है। मैंने हर बार अपनी मनोवृत्तियों की परख की है और मैंने हर बार मन की सफाई की है। इस लायक अपने मन को बनाया है कि अगर भगवान् अपने भीतर आये तो नाखुश होकर के नहीं चला जाये, परेशान होकर के नहीं चला जाये। यहाँ से नफरत लेकर के नहीं चला जाये। मन की सफाई करने की जरूरत है।

भगवान् को आदमी की मक्कारियों और आदमी की लिप्साओं से बहुत नफरत है। भगवान् खुशामद से मानने वाले नहीं हैं। भगवान् को नाम के-अक्षर के उच्चारण करने की जरूरत नहीं है। भगवान् की औकात और भगवान् ऐसे नहीं हैं कि आप उसकी तारीफ करें, खुशामद करें, बार-बार नाम लें, बार-बार उसके गुणों को गायें, उसके बाद में उसको अपने काबू में कर लें, कब्जे में कर लें। इतना कमजोर दिल, इतना कमजोर प्रकृति का भगवान् नहीं हो सकता। हम इन्सान उनको इतना कमजोर समझते हैं कि कोई आदमी खुशामद करके जो कुछ चाहे, चाहे जब उनसे वसूल कर ले जाये वह भगवान् कैसे हो सकता है?

जो व्यक्ति खुशामद करें, तारीफ करें, जो कुछ भी चाहें, वही हमको मिल जाये। ये मुमकिन है? ये नामुमकिन है। भगवान् तुम बड़े अच्छे हो, तुम्हारी नाक बड़ी अच्छी है, तुमने महिषासुर को मार डाला, तुमने फलाने को मार डाला, तुमने कंस को मार डाला, तुमने वृत्रासुर को मार डाला, अब लाओ। उल्लू कहीं का। आज इसी का नाम पूजा, इसी का नाम उपासना, इसी का नाम ध्यान, इसी का नाम जप। सारा विश्व अज्ञान के अंधकार में डूबा हुआ; भ्रम के जंजाल में फँसता हुआ और अपना वक्त और अपना समय बरबाद करता हुआ; अध्यात्म को बदनाम करता चला जाता है और शिकायत करता हुआ चला जाता है कि हमने भगवान् का नाम लिया था, पूजा की थी, खुशामद की थी, मिठाई खिलायी थी, चावल खिलाया था, धूपबत्ती खिलायी थी, आरती जलायी थी, और हमें कोई फायदा नहीं हुआ, कैसे हो सकता है फायदा?

फायदा होना चाहिए। उसका लाभ उठाने के लिये आदमी को अपने जीवन में आध्यात्मिकता का समावेश करना होगा। जीवन में आध्यात्मिकता का समावेश है—पूजा-उपासना का शिक्षण। आज की बात समाप्त।

।। ॐ शान्तिः ।।

संसार में हम हैं। संसार में रह करके हम अपने कर्तव्य पूरे करें। हँसी–खुशी से रहें, अच्छे तरीके से रहें, लेकिन इसमें इस कदर हम व्यस्त न हो जायें, इस कदर फँस न जायें कि हमको अपने जीवन के उद्देश्यों का ध्यान ही न रहे। अगर हम फँसेंगे तो मरेंगे।

आपने उस बन्दर का किस्सा सुना होगा जो अफ्रीका में पाया जाता है– सिम्बून और जिसके बारे में ये कहा जाता है कि शिकारी लोग उसको चने, मुट्ठी भर चने का लालच देकर के उसकी जान ले लेते हैं। लोहे के घड़े में चने भर दिये जाते हैं और सिम्बून उन चनों को खाने के लिये आता है, मुट्ठी बाँध लेता है, मुट्ठी को निकालना चाहता है तो मुट्ठी निकलती नहीं है। जोर लगाता है तो भी नहीं निकलती, इतनी हिम्मत नहीं होती कि मुट्ठी को खाली कर दे, छोड़ दे और हाथ को खींचे। लेकिन वो मुट्ठी को छोड़ना नहीं चाहता है। छोड़ने के न चाहने का परिणाम ये होता है कि हाथ बाहर निकलता नहीं और शिकारी आता है, उसको मार–काट के खतम कर देता है, फिर उसकी चमड़ी को उखाड़ लेता है। हम और आपकी स्थिति ऐसी है, जैसे अफ्रीका के सिम्बून बन्दरों जैसी।

हम लिप्साओं के लिये, लालसाओं के लिये, वासनाओं के लिये, तृष्णा के लिये, अहंकार की पूर्ति के तरीके से मुट्ठी पकड़ करके बन्दरों के तरीके से फँसे रहते हैं और अपनी जीवन सम्पदा का विनाश कर देते हैं, जिससे हमको बाज आना चाहिए और हमें अपने आपको इससे बचाने के लिये कोशिश करनी चाहिए। हमको अपनी क्षुद्रता का त्याग करना है। क्षुद्रता का अगर हम त्याग कर देते हैं, तो हम कुछ खोते नहीं हैं, हम कमाते ही कमाते हैं।

कार्लमार्क्स मजदूरों से ये कहते थे कि ''मजदूरो! एक हो जाओ, तुम्हें गरीबी के अलावा कुछ खोना नहीं है'' और मैं ये कहता हूँ कि ''अध्यात्म मार्ग पर चलने वाले विद्यार्थियो! तुम्हें अपनी क्षुद्रता के अलावा और कुछ नहीं खोना है। पाना ही पाना है। आध्यात्मिकता के मार्ग पर पाने के अलावा कुछ नहीं है। इसमें एक ही चीज हाथ से गुम जाती है, उसका नाम है, आदमी की क्षुद्रता और

संकीर्णता।'' क्षुद्रता और संकीर्णता को त्यागने में अगर आपको कोई बहुत कष्ट न होता हो तो मेरी प्रार्थना है कि आप इसको छोड़ दें और आप महानता के रास्ते पर चलें। जीवन में भगवान् को अपना हिस्सेदार बना लें। भगवान् के साथ आप नाता जोड़ लें। जोड़ लेंगे तो ये मुलाकात की हिस्सेदारी आपके बहुत काम आयेगी।

गंगा ने अपने आपको हिमालय के साथ में जोड़े रखा। गंगा का और हिमालय का तालमेल और उसका रिश्ता-नाता ठीक बना रहा और हमेशा गंगा अपना पानी खर्च करती रही, लेकिन पानी की कमी कभी नहीं पड़ने पाई। हिमालय के साथ रिश्ता हम जोड़ें, भगवान् के साथ रिश्ता हम जोड़ें तो हमारे लिये जीवन में कभी अभावों का, कभी उस तरह के संकटों का अनुभव न करना पड़ेगा, जैसे कि सामान्य लोग पग-पग पर जीया करते हैं। गंगा का पानी सूखा नहीं, लेकिन नाली का सूख गया। उसने किसी महान् सत्ता के साथ सम्बन्ध मिलाया नहीं। बाढ़ का पानी आया और नाला उछलने लगा। बाढ़ का पानी सूखा और नाला सूख गया। नौ महीने सूखा पड़ा रहा। बरसाती नाला नौ महीने सूखा पड़ा रहा। लेकिन गंगा युगों से बहती चली आ रही है, कभी भी सूखने का नाम नहीं लिया।

हम हिमालय के साथ जुड़ें, हम भगवान् के साथ जुड़ें तो हमारा भी सूखने का कभी मौका न आयेगा। फिर हम इतनी हिम्मत कर पायें तब। आप-हम भगवान् को समर्पित कर सकें अपने आपको, तो भगवान् को हम पायें। हम भगवान् की कला का सारा लाभ उठा सकते हैं। शर्त ये है कि हम अपने आपको, अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को, अपनी कामनाओं को और अपनी विष-वृत्तियों को भगवान् के सुपुर्द कर दें। हम भगवान् के साथ में अपने आपको उसी तरीके से जोड़ें जैसे कठपुतली, जैसे पतंग और जैसे बाँसुरी। न कि हम इस तरीके से करें कि पग-पग पर हुकूमत चलायें। भगवान् के पास हम अपनी मनोकामना पेश करें। ये भक्ति की निशानी नहीं है।

भगवान् की आज्ञा पर चलना हमारा काम है। भगवान् पर हुकूमत करना और भगवान् के सामने तरह-तरह के फरमाइश पेश करना, ये सब वेश्यावृत्ति का काम है। हममें से किसी की उपासना लौकिक कामनाओं के लिये नहीं; बल्कि भगवान् की साझेदारी के लिये, भगवान् को स्मरण रखने के लिये, भगवान् का आज्ञानुवर्ती होने के लिये और भगवान् को अपना समर्पण करने के उद्देश्य से

उपासना होनी चाहिए। अगर आप ऐसी उपासना करेंगे तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि उपासना सफल होगी। आपको आंतरिक संतोष मिलेगा। न केवल आंतरिक संतोष मिलेगा; पर आपके व्यक्तित्व का विकास होगा और व्यक्तित्व के विकास करने का निश्चित परिणाम ये है कि आदमी भौतिक और आत्मिक, दोनों तरीके की सफलताएँ भरपूर मात्रा में प्राप्त करता है।

मेरा आपसे अनुरोध ये है कि आप हँसती-हँसाती जिन्दगी जीयें, खिलती-खिलाती जिन्दगी जीयें, हलकी-फुलकी जिन्दगी जीयें। हलकी-फुलकी जिन्दगी जीयेंगे तो आप जीवन का सारे का सारा आनन्द पायेंगे। अगर आप घुसेंगे (सेंध मारेंगे) तो आप नुकसान पायेंगे। आप अपने कर्तव्यों को पूरा करने के लिये जिन्दगी को जीयें। हँसी-खुशी से जीयें। हमें माली की जिन्दगी जीनी चाहिये, मालिक की नहीं। मालिक की जिन्दगी में बहुत भारीपन है और बहुत कष्ट है। माली की जिन्दगी केवल रखवाली के तरीके से, चौकीदार के तरीके से अगर आप जीयें तो हम पायेंगे जो कुछ भी कर लिया, हमारा कर्तव्य काफी था। मालिक को चिंता रहती है। सफलता मिली, कि नहीं मिली। माली को इतनी चिंता रहती है कि अपने कर्तव्यों और अपने फर्ज पूरे किये कि नहीं किये?

दुनिया में रहें, काम दुनिया में करें, पर अपना मन भगवान् में रखें अर्थात् उच्च उद्देश्यों और उच्च आदर्शों के साथ जोड़कर रखें। हम दुनिया में डूबें नहीं। हम खिलाड़ी के तरीके से जीयें। हार-जीत के बारे में बहुत ज्यादा चिंता न करें। हम अभिनेता के तरीके से जीयें। हमने अपना पाठ प्ले ठीक तरीके से किया कि नहीं किया; हमारे लिये इतना ही संतोष बहुत है। ठीक है, परिणाम नहीं मिला तो हम क्या कर सकते हैं? बहुत सी बातें परिस्थितियों पर निर्भर रहती है। परिस्थितियाँ हमारे अनुकूल नहीं रहीं तो हम क्या कर सकते थे? कर्तव्य हमने हमारा पूरा किया, बहुत है, हमारे लिये बहुत है; इस दृष्टि से आप जीयेंगे तो आपकी खुशी को कोई छीन नहीं सकता और आपको इस बात की परवाह नहीं होगी कि जब कभी सफलता मिले, तब आपको प्रसन्नता हो। 24 घण्टे आप खुशी से जीवन जी सकते हैं। जीवन की सार्थकता और सफलता का यही तरीका है।

॥ ॐ शान्तिः ॥

साधक कैसे बनें?

साधकों में से कई व्यक्ति हमसे ये पूछते रहते हैं–क्या करें? क्या करें? मैं उनमें से हरेक से ये कहता हूँ, ये मत पूछो, बल्कि ये पूछो कि क्या बनें? क्या बनें? अगर आप कुछ बन जाते हैं तो करने से भी ज्यादा कीमती है, पर जो कुछ भी आप कर रहे होंगे, वो सब सही हो रहा होगा। आप साँचा बनने की कोशिश करें। अगर आप साँचा बनेंगे, तो जो भी गीली मिट्टी आपके सम्पर्क में आयेगी, आपके तरीके से आपके ढंग की शकल के खिलौने बनते हुए चले जायेंगे। आप सूरज बनें। आप चमकेंगे और चलेंगे। उसका परिणाम क्या होगा? जिन लोगों के लिये आप करना चाहते हैं वो आपके साथ–साथ चलेंगे और चमकेंगे। सूरज के साथ में नवग्रह और बत्तीस उपग्रह हैं, ये सबके सब लोग चमकते हैं और साथ–साथ चलते हैं, क्योंकि सूरज चलता है।

हम चलें। हम प्रकाशवान् हों। हम देखेंगे, जिस जनता के लिये हम चाहते थे कि ये हमारी अनुगामी बने और हमारी ये नकल करे, आप देखेंगे कि आप चलते हैं तो दूसरे लोग भी चलते हैं। आप स्वयं भी नहीं चलेंगे और ये अपेक्षा करेंगे कि दूसरे आदमी हमारा कहना मानें, ये मुश्किल बात है। आप गलें और वृक्ष बनें और वृक्ष बनकर के अपने जैसे असंख्य बीज आप पायें, अपने भीतर से आप पैदा कर डालें। हमको बीज की जरूरत है, बीज लाइये, बीज बनिए, कहाँ से बीज लायेंगे? आप गलिए, वृक्ष बनिए और अपने भीतर से ही फल पैदा कीजिए और प्रत्येक फल में से ढेरों के ढेरों बीज पैदा कीजिए, लीजिए बन गये तैयार। अपने भीतर से ही क्यों न बीज बनायें?

मित्रो! जिन लोगों ने अपने आपको बनाया है, उनको ये पूछने की जरूरत न पड़ी 'क्या करेंगे?', उनकी प्रत्येक क्रिया इस लायक बन गई, कि वो सब कुछ कर सकने में समर्थ हो गई। उनका व्यक्तित्व ही इतना आकर्षक रहा कि प्रत्येक सफलता को और प्रत्येक महानता को सम्पन्न करने के लिये काफी था। अर्जुनदेव जी थाली, बरतन साफ करते थे। उन्होंने अपने आपको गुरु के अनुशासन में ढालने का प्रयत्न किया था और जब उनके गुरु तलाश करने लगे कि कौन–से

शिष्य को उत्तराधिकारी बनाया जाय? सारे विद्वानों की अपेक्षा, सारे नेता और दूसरे गुण वालों की अपेक्षा उन्होंने अर्जुनदेव को चुना। उनके गुरु रामदास जी ने ये कहा, कि अर्जुनदेव ने अपने आपको बनाया है और बाकी आदमी इस कोशिश में लगे रहे कि हम दूसरों से क्या करायें और स्वयं क्या करें, बल्कि होना ये चाहिए था कि अपने आपको बनाना चाहिए था।

अर्जुनदेव ने न कुछ किया था, न कराया था, केवल अपने आपको बना लिया था। इसीलिये उनके गुरु ने ये माना कि ये सबसे अच्छा आदमी है। सप्तऋषियों ने अपने आपको बनाया। उनके अन्दर तप की सम्पदा थी, ज्ञान की सम्पदा थी। हरिद्वार या जहाँ कहीं भी रहते चले, जो कुछ भी काम उन्होंने कर लिया, वो एक महानतम् श्रेणी का उच्चस्तरीय काम कहलाया। अगर उनका व्यक्तित्व घटिया होता तो फिर बात कैसे बनती?

गाँधीजी ने अपने आपको बनाया, हजारों आदमी उनके पीछे चले। बुद्ध ने अपने आपको बनाया, हजारों आदमी उनके पीछे चले। हम अपने भीतर चुम्बकत्व पैदा करें। खदानों के अन्दर जो लोहे के कण, धातु के कण जमा हो जाते हैं, उसका कारण ये है कि जहाँ कहीं भी खदान होती है, वहाँ चुम्बकत्व रहता है। चुम्बकत्व से खदान छोटी-छोटी चीजों को खींचता रहता है। हम अपनी क्वॉलिटी बढ़ायें। हम अपना चुम्बकत्व बढ़ायें। हम अपना व्यक्तित्व बढ़ायें; चूँकि ये सबसे बड़ा करने के लिये काम है।

समाज की सेवा करें। हाँ! ठीक है। वो भी आपको करनी चाहिए, पर मैं ये कहता हूँ समाज सेवा से भी पहले ज्यादा महत्त्वपूर्ण इस बात को समझें कि हमको अपनी क्वॉलिटी बढ़ानी चाहिये। खनिज में से जो धातु निकलती हैं, वो कच्ची होती हैं, लेकिन जब पकाकर के ठीक कर ली जाती हैं, साफ-सुथरी बना दी जाती हैं, तो उन्हीं धातुओं का नाम-स्वर्ण, शुद्ध स्वर्ण हो जाता है। उसी का नाम फौलाद हो जाता है। हम अपने आपको फौलाद बनायें। अपने आपकी सफाई करें, अपने आपको धोयें, अपने आपको परिष्कृत करें। इतना कर सकना, अगर हमारे लिये सम्भव हो जाये तो समझना चाहिए आपका ये सवाल पूरा हो गया, अब हम क्या करें? नहीं, ये करें कि हम अच्छे बनें। समाज सेवा भी करना, पर समाज सेवा करने से पहले आवश्यक है कि समाज सेवा के लायक हथियार अपने आपको बना लें। ये ज्यादा अच्छा है। हम अपने आपकी सफाई करें। समाज सेवा भी करें, पर अपने आपकी सफाई को भूल नहीं जायें। मित्रो! एक और बात कह करके हम अपनी बात समाप्त करना चाहते हैं।

एक हमारा आमंत्रण अगर आप स्वीकार कर सकें तो बड़ी मजेदार बात होगी। आप हमारी दुकान में शामिल हो जायें। आप दुकान में शामिल हो जायें। हमारी दुकान में बहुत फायदा है। इसमें से हर आदमी को मुनाफेदार शेयर मिल सकता है। माँगने से तो हम थोड़ा सा ही दें पायेंगे। ज्यादा हम कहाँ तक दे पायेंगे? भीख माँगने वाले को कहाँ, किसी ने क्या, कितना दिया है? थोड़ा सा ही दे पाते हैं। लेकिन आप हिस्सेदार क्यों नहीं बन जाते हमारी दुकान में? अन्धे और पंगे का योग क्यों नहीं बना लेते। हमारे गुरु और हमने साझेदारी की है। शंकराचार्य ने और मान्धाता ने साझेदारी की थी। सम्राट अशोक और बुद्ध ने साझेदारी की थी। समर्थ गुरु रामदास और शिवाजी ने साझेदारी की थी। रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द ने साझेदारी की थी। क्या आप ऐसा नहीं कर सकते? आप हमारे साथ शामिल हो जायें और हम और आप मिलकर के बड़ा काम करें। उसमें से जो मुनाफा आये, वो बाँट लें। अगर आप इतनी हिम्मत कर सकते हों और ये विश्वास कर सकते हों कि हम प्रामाणिक आदमी हैं तो जिस तरीके से हमने अपने गुरु की दुकान में साझा कर लिया है, आप आयें और हमारे साथ साझा करने की कोशिश करें। अपनी पूँजी उसमें लगायें। समय की पूँजी, श्रम की पूँजी, बुद्धि की पूँजी हमारी दुकान में शामिल करें और इतना मुनाफा कमायें जिससे कि आप निहाल हो जायें।

हमारी जिन्दगी के मुनाफे का यही तरीका है कि हमने अपनी पूँजी को अपने गुरुदेव के साथ में मिला दिया और उनकी कम्पनी में शामिल हो गये। हमारे गुरुदेव हमारे भगवान् की कम्पनी में शामिल हैं। हम अपने गुरुदेव की कम्पनी में शामिल हैं। आप में से हरेक को आवाहन करते हैं कि अगर आपकी हिम्मत है तो आप आयें और हमारे साथ जुड़ जायें और जुड़ करके हम जो लाभ कमायेंगे, भौतिक और आध्यात्मिक, उनका इतना हिस्सा आपके हिस्से में मिलेगा कि आप धन्य हो सकते हैं और निहाल हो सकते हैं, उसी तरीके से जैसे कि हम धन्य हो गये, निहाल हो गये। यही है साधकों से हमारा विनम्र अनुरोध। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शान्तिः ॥

सामाजिक क्रान्ति

धर्मतंत्र का तीसरा कार्य जो करने का है, जिससे कि मनुष्य की अन्तःचेतना विकसित होती हो, वो है 'सामाजिक क्रान्ति'। समाज की छुट-पुट बुराइयाँ जो सामने दिखाई पड़ती हैं, इनको दूर करने के लिये विरोध और आंदोलन करने की तो जरूरत है ही, लेकिन श्रेष्ठ समाज बनाने के लिये जिन रचनात्मक वस्तुओं को जीवन में धारण करने की जरूरत है, वो उच्चस्तरीय सिद्धान्त हैं, जो व्यक्ति को समाजपरक बनाते हैं। "आत्मवत् सर्वभूतेषु" की मान्यता जन-जन के अन्तःकरण में जगायी जानी चाहिए। हरेक के मन में ये विश्वास होना चाहिये कि जो हम दूसरों से अपेक्षा करते हैं, वही हमें दूसरों के साथ में व्यवहार करना चाहिए। सामाजिक क्रान्ति के लिये ये सिद्धान्त आवश्यक है कि हर आदमी के मन में गहराई तक प्रवेश कर जाए।

हममें से हर आदमी के मन में एक विचार उत्पन्न किया जाना चाहिये कि "वसुधैव कुटुम्बकम्" 'सारा विश्व ही हमारा कुटुम्ब है'। दो-पाँच आदमी नहीं, बल्कि यह सारी वसुधा ही हमारा कुटुम्ब है और जिस तरीके से अपने घर का और बाल-बच्चों का हम ध्यान रखते हैं, उसी तरीके से समस्त विश्व में सुख और शान्ति के लिये ध्यान रखना और प्रयत्न करना आवश्यक है। सामाजिक क्रान्ति के लिये उन आध्यात्मिक सिद्धान्तों को पुनर्जीवित किया जाना चाहिए, जिसमें कि महत्त्वपूर्ण ऐसे सिद्धान्त बने हुए हैं, जिसमें व्यक्ति अपने व्यक्तिवाद के ऊपर अंकुश करके समाजपरक बनता चला जाये। 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषाम् नः समाचरेत्' का सिद्धान्त अगर हम अपने जीवन में धारण कर लें तो हमारे सामाजिक जीवन में श्रेष्ठता का आ जाना स्वाभाविक है। मिल-बाँट कर खाने की वृत्ति अगर हमारे भीतर हो तो जो आज हम सबके पास है, उसी से सबका गुजारा बड़े मजे से हो सकता है। हम उदारता से उपार्जन करें। उपार्जन का उपयोग करना सीखें, उपभोग नहीं।

समता हमारे जीवन का अंग रहनी चाहिए। सर्व समाजों में समता। जिसमें नर-नारी की समता और आर्थिक समता का भी ऊँचा स्थान होना चाहिये। हममें से प्रत्येक व्यक्ति को श्रेष्ठ नागरिक बनना चाहिये और सहकारिता के सिद्धान्तों को अपनाकर पारिवारिक जीवन में और सामाजिक जीवन में हर काम की व्यवस्था बनानी चाहिए। अनीति और अन्याय जहाँ कहीं भी दिखाई पड़े, उससे लड़ने के लिये हमको जटायु जैसा साहस एकत्रित करना चाहिए।

भगवान् का अवतार जहाँ कहीं भी होता है, वहाँ ये मान्यता निश्चित रूप से रहती है कि भगवान् के अवतार जितने भी हुए हैं, अधर्म का विनाश और धर्म की स्थापना करने के लिये, हमारे भीतर भगवान् की प्रेरणा आये तो दोनों ही क्रियाकलाप हमको समान रूप से अपनाने पड़ेंगे। श्रेष्ठ आचरण अपने में और दूसरों में स्थापित करना, साथ ही साथ में अवांछनीयता और अनैतिकताएँ अपने भीतर अथवा अपने आस-पास के वातावरण में अगर हमको दिखाई पड़ती हैं तो उनसे संघर्ष करने के लिये डट जाना चाहिये। अनीति के सामने हम सिर न झुकायें। जहाँ कहीं भी अनाचार हमको दिखाई पड़ता हो उससे लोहा लेने के लिये अपनी परिस्थिति के अनुसार असहयोग, विरोध अथवा जो भी सम्भव हो, उसे करने के लिये साहस एकत्रित करें। समाज की सुव्यवस्था इसी प्रकार से सम्भव है।

डरपोक आदमी, कायर आदमी और मुसीबत से डरने वाले आदमी, पाप से भयभीत होने वाले आदमी, गुंडागर्दी से अपना मुँह छिपाने वाले आदमी कभी उन बुराइयों को दूर न कर सकेंगे और समाज में जहाँ सुव्यवस्था की आवश्यकता है और जहाँ अनीति के निराकरण की आवश्यकता है, वो पूरी न हो सकेगी। सामाजिक क्रान्ति के लिये हमको ऐसा शौर्य और साहस जन-मानस में जगाने की आवश्यकता है, भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिये।

मनुष्य जाति सामूहिक आत्महत्या के लिये बढ़ती सी मालूम पड़ती है, उसको रोकने के लिये हमको धर्मतंत्र को पुनर्जीवंत करना चाहिए। बड़ा काम बड़े साधनों से ही होता है और बड़े साधन केवल बड़े व्यक्तित्व ही जुटा सकने में सम्भव होते हैं। यही हमारा लक्ष्य है, जिसके अनुरूप हम चाहते हैं, हर व्यक्ति के अन्दर महानता जागृत हो। हर व्यक्ति अपनी वैयक्तिक सुख-सुविधाओं की अपेक्षा सामाजिक जीवन के लिये कुछ अधिक त्याग-बलिदान करने की हिम्मत जुटाये। पुनर्गठन से हमारा यही मतलब है कि हम नया व्यक्ति बनायें, नया समाज बनायें, नया युग लायें। इसके लिये आवश्यकता है कि हम सब व्यक्ति निर्माण

करने के कार्य पे जुट जायें और व्यक्ति को श्रेष्ठ–समुन्नत बनाने के लिये भरसक प्रयत्न करें। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शान्तिः ॥

विचारक्रान्ति का एक छोटा मॉडल - शान्तिकुञ्ज

भव्य भवन बनाने से पहले इनके छोटे आकार के मॉडल आनुपातिक आधार पर खड़े, विनिर्मित कर लिए जाते हैं। ताजमहल आदि के मॉडल आसानी से देखे जा भी सकते हैं। बड़े-बड़े बाँध, बड़ी परियोजनाएँ अट्टालिकाएँ पहले आर्चीटेक्ट की दृष्टि से मॉडल रूप में ही विनिर्मित कर, फिर उन्हें विभिन्न चरणों में साकार रूप दिया जाता है। **शान्तिकुञ्ज ने इक्कीसवीं सदी के उपयुक्त उज्ज्वल भविष्य संरचना के स्वरूप के अनुसार अपने आपको छोटे मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया है।**

इस मॉडल में युग की सामयिक आवश्कताओं की पूर्ति हेतु युग मनीषा द्वारा किये जा सकने वाले तीन महत्त्वपूर्ण प्रयासों को अनिवार्य रूप से जोड़ा गया है।

1- युग चेतना को जनमानस के अन्तराल तक पहुँचाने वाली महाप्रज्ञा की पक्षधर लेखनी। 2- जन मानस को झकझोरने और उल्टे को सीधा करने में समर्थ परिमार्जित वाणी। 3- अपनी प्रतिभा, प्रखरता और प्रामाणिकता को पग-पग पर खरा सिद्ध करते रहने में समर्थ पुरोधाओं-अग्रदूतों का परिकर।

युग क्रान्तियों में सदा यही तीनों अपनी समर्थ भूमिका निभाते रहे हैं। अनीति अनाचार को आदर्शवादी प्रवाह में परिवर्तन कर सकने वाले महान कायाकल्प इन्हीं तीन अमोघ शक्तियों द्वारा सम्पन्न होते रहे हैं।

आज की परिस्थितियों में क्या ऐसा सम्भव है? इस पर सहज ही विश्वास नहीं होता। कारण कि इन दिनों आदर्शवादिता मात्र कहने की चीज रह गई है। वह व्यवहार में भी उतर सकती है, इस पर सहज ही विश्वास नहीं होता। इसीलिए यह उपाय सोचा गया है कि इतने महान प्रयोजन की पूर्ति एवं विशाल आयोजन के लिए एक विश्वस्त, परिचय देने वाला मॉडल खड़ा किया जाए कि प्रज्ञा अभियान की रूप रेखा का व्यावहारिक क्रियान्वयन किस प्रकार सम्भव है? **इसी के लिए एक छोटा, किन्तु आदर्श एवं आनुपातिक मॉडल शान्तिकुञ्ज के रूप में बनाकर खड़ा कर दिया गया है। इसे देख समझ कर सही कल्पना की जा सकती है कि भविष्य कैसे बदलेगा? नूतन सदी कैसे आएगी?**

विचार क्रान्ति में पुरानी लीक से हट कर नया उपयोगी मार्ग अपनाने के लिए कहा जाता है, किन्तु उससे पूर्वजों की हेठी होती मानी जाती है और पूर्वाग्रह के समर्थन में हजार बेतुके तर्क प्रस्तुत किये जाते हैं। ऐसी दशा में उस अति सामयिक एवं आवश्यक प्रयास से जन साधारण को सहमत कराने के लिए कुछ बड़े और कठिन उपाय अगले दिनों अपनाने होंगे। —इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य-भाग 1

एक विशेष समय

हममें से प्रत्येक परिजन को कुछ मान्यताएँ अपने मन में गहराई तक उतार लेनी चाहिए, इसलिये कि जिस समय में हम और आप जीवित रह रहे हैं, एक ऐसा समय है, जिसमें युग बदल रहा है और युग परिवर्तन की वेला है। हम में से प्रत्येक साधक को यह मानकर चलना चाहिए कि हमारा व्यक्तित्व विशेष है। हमको भगवान् ने किसी विशेष काम के लिये भेजा है। कीड़े-मकोड़े और दूसरे सामान्य तरह के प्राणी पेट भरने के लिये और औलाद पैदा करने के लिये पैदा होते हैं। मनुष्यों में से भी बहुत सारे ऐसे ही नर-पामर और नर-कीटक हैं, उनके जीवन का कोई लेखा-जोखा नहीं, पेट भरने के अलावा और औलाद पैदा करने के अलावा दूसरा कोई काम वो न कर सकेगा, लेकिन कुछ विशेष व्यक्तियों के ऊपर भगवान् विश्वास करते हैं और ये मानकर भेजते हैं कि ये हमारे भी कुछ काम आ सकते हैं अपने ही गोरख-धंधे में ही नहीं फँसे रहेंगे।

युग निर्माण परिवार के हर व्यक्ति को अपने बारे में ऐसी मान्यता बनानी चाहिए कि हमको भगवान् ने कोई विशेष काम के लिये भेजा है। ये कोई विशेष समय है और हममें से हर आदमी को यह अनुभव करना चाहिए कि युग की आवश्यकताओं को पूरा करने का उत्तरदायित्व हमारे कंधे पर है। अगर ये विश्वास कर सकें तो आपकी प्रगति का द्वार खुल सकता है और आप महामानवों के रास्ते पर चल सकते हैं और इस अपने परिवार के निर्माण का उद्देश्य आप सफलतापूर्वक पूरा कर सकते हैं। आपको विशिष्ट व्यक्तित्व मिलेगा, जो सामान्य मनुष्यों जैसा नहीं होगा।

ये विशेष समय है, सामान्य जैसे शान्ति के समय होते हैं, वैसा नहीं। ये आपत्तिकाल जैसा समय है और आपत्तिकाल में आपातकालीन उत्तरदायित्व होते हैं। हमारे ऊपर की जिम्मेदारियाँ, सामान्य जिम्मेदारियाँ नहीं हैं। पेट भरने मात्र की जिम्मेदारियाँ नहीं हैं। इस युग की भी जिम्मेदारियाँ हैं, ये मानकर हमको चलना चाहिए और ये मानकर के चलना चाहिए कि रीछ-वानर जिस तरीके से विशेष भूमिका निभाने के लिये आये थे और ग्वाल-बाल, श्रीकृष्ण भगवान् के साथ में

विशेष उत्तरदायित्व निभाने के लिये आये थे। आप लोग इस तरह का अनुभव और विश्वास कर सकें कि आप लोग उसी तरीके से जुड़े हुए हैं और विशेष उत्तरदायित्व महाकाल का सौंपा हुआ है, उसे पूरा करने के लिये हम लोग आये हुए हैं। अगर ये बात मान सके तो फिर आपके सामने नये प्रश्न उत्पन्न होंगे और नई समस्याएँ उत्पन्न होंगी और नये आधार और नये कारण उत्पन्न होंगे।

पहला कदम आपको जो बढ़ाना पड़ेगा, वो यह बढ़ाना पड़ेगा कि जिस तरीके से सामान्य मनुष्य जीते हैं, उसी तरीके से जीने से इन्कार कर दें और यह कहें—हम तो विशेष व्यक्ति और महामानवों के तरीके से जीयेंगे। पेट तो ऐसे ही भरना है। केवल मात्र पेट ही भरना रहा तो गन्दे तरीके से हम क्यों भरें? शेष तरीके से हम क्यों न भरें? हम जो बाकी पेट भरने के अलावा कार्य कर सकते हैं, वह क्यों न करें? यह प्रश्न हमारे सामने ज्वलंत रूप से आ खड़ा होगा और हमको यह आवश्यकता मालूम पड़ेगी कि हम अपनी मन:स्थिति में हेर-फेर कर डालें, अपनी मन:स्थिति को बदल डालें और हम लौकिक आकर्षणों की अपेक्षा ये देखें कि इन्हीं में भटकते रहने की अपेक्षा भगवान् का पल्ला पकड़ लेना ज्यादा लाभदायक है। भगवान् का सहयोगी बन जाना ज्यादा लाभदायक है। भगवान् को अपने जीवन में रमा देना ज्यादा लाभदायक है। संसार का इतिहास बताता है कि भगवान् का पल्ला पकड़ने वाले और भगवान् को अपना सहयोगी बनाने वाले कभी घाटे में नहीं रहे और न रहेंगे। ये विश्वास करें तो यह एक बहुत बड़ी बात है। जानना चाहिये, हमने एक बहुत बड़ा प्रकाश पा लिया।

अगर हम यह अनुभव कर सकें कि अब मन:स्थिति बदलनी है और सांसारिकता का पल्ला पकड़े रहने की अपेक्षा भगवान् की शरण में जाना है। ये हमारा दूसरा कदम होगा, ऊँचा उठने के लिये। तीसरा वाला कदम आत्मिक उत्थान के लिये हमारा ये होना चाहिये कि हमारी महत्त्वाकांक्षाएँ, हमारी कामनाएँ, हमारी इच्छाएँ बड़प्पन के केन्द्र से हटें और महानता के साथ जुड़ जायें। हमारी महत्त्वाकांक्षाएँ ये नहीं होनी चाहिए कि हम वासनाओं को पूरा करते रहेंगे जिन्दगी भर और हम तृष्णा के लिये अपने समय, बुद्धि को खर्च करते रहेंगे और हम अपनी अहंता को, ठाठ-बाट को, रौब को और बड़प्पन को लोगों के ऊपर रौब-गालिब करने के लिये तरह-तरह के ताने-बाने बुनते रहेंगे। अगर हमारा मन इस बात को मान जाये और हमारा अंत:करण स्वीकार कर ले कि ये बचकानी बातें हैं, छिछोरी बातें हैं, छोटी बातें हैं। छिछोरापन, बचकानापन और ये छोटापन, क्षुद्रता

का अगर हम त्याग कर सकें तो एक बात हमारे सामने खड़ी होगी कि अब हमको महानता ग्रहण करनी है।

महापुरुषों ने जिस तरीके से आचरण किये थे, महापुरुषों का चिंतन करने का जो तरीका था, वही तरीका हमारा होना चाहिये और हमारी गतिविधियाँ उसी तरीके से होनी चाहिये, जैसे कि श्रेष्ठ मनुष्यों की रही हैं और रहेंगी। ये विश्वास करने के बाद में हमको अपनी क्रियापद्धति में, दृष्टिकोण में ये मान्यताएँ ले आने के पश्चात्, इच्छाओं और आकांक्षाओं का केन्द्र बदल देने के बाद हमको व्यावहारिक जीवन में भी थोड़े से कदम उठाने चाहिये। साधकों के लिये यही मार्ग है। आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शान्तिः ॥

इस तथ्य को हजार बार समझा और लाख बार समझाया जाना चाहिए कि मनःस्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदात्री है। इसलिए यदि परिस्थितियों की विपन्नता को सचमुच ही सुधारना हो, तो जनसमुदाय की मनःस्थिति में दूरदर्शी विवेकशीलता को उगाया, उभारा और गहराई तक समाविष्ट किया जाए। यहाँ यह बात भी ध्यान रखने योग्य है कि मनःक्षेत्र एवं बुद्धि संस्थान भी स्वतन्त्र नहीं हैं। उन्हें भावनाओं, आकांक्षाओं, मान्यताओं के आधार पर अपनी दिशाधारा विनिर्मित करनी होती है। उनका आदर्शवादी उत्कृष्ट स्वरूप अन्तःकरण में भाव-संवेदना बनकर रहता है। यही है वह सूत्र, जिसके परिष्कृत होने पर कोई व्यक्ति ऋषिकल्प, देवमानव बन सकता है। यह एक ही तत्त्व इतना समर्थ है कि अन्यान्य असमर्थताएँ बने रहने पर भी मात्र इस अकेली विभूति के सहारे न केवल अपना वरन् समूचे संसार की शालीनता का पक्षधर कायाकल्प किया जा सकता है। इक्कीसवीं-सदी के साथ जुड़े उज्ज्वल भविष्य का यदि कोई सुनिश्चित आधार है तो वह एक ही है कि जन-जन की भाव-संवेदनाओं को उत्कृष्ट, आदर्श एवं उदात्त बनाया जाए। इस सदाशयता की अभिवृद्धि इस स्तर तक होनी चाहिए कि सब अपने और अपने को सबका मानने की आस्था उभरती और परिपक्व होती रहे।.....मात्र इतना भर सुझाया जा रहा है कि मनुष्य अपने आप में समग्र और समर्थ है। यदि उसका आत्मविश्वास एवं पुरुषार्थ जगाया जा सके, तो इतना कुछ बन सकता है जिसके रहते याचना का तो प्रश्न ही नहीं उठता, बल्कि इतना बचा रहता है, जिसे अभावों और अव्यवस्थाओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त मात्रा में लगाया जा सके।

— सतयुग की वापसी - (क्रान्तिधर्मी साहित्य पुस्तकमाला - 05)

युग परिवर्तन

देवियो, भाइयो!

थोड़ी सी बातें ऐसी, जो आपको गाँठ बाँध करके रखनी चाहिए और कभी भूलना नहीं चाहिये। इसको आप गाँठ बाँध करके रखना, कभी भूलना मत। एक बात मुझे आपसे ये कहनी थी, आप एक विशेष उद्देश्य को लेकर के, विशेष प्रयोजन के लिये, इस विशेष समय पर पैदा हुए हैं। ये युग के परिवर्तन की वेला है। आपको दिखाई तो नहीं पड़ता, पर मैं आपको कह सकता हूँ और मुझे कहना चाहिये। आप जिस समय में पैदा हुए हैं, ये साधारण समय नहीं है, असाधारण समय है। इस समय में युग तेजी के साथ में बदल रहा है। आपने देखा नहीं, किस तरीके से परिवर्तन विश्व की समस्याओं में बदलते हुए जा रहे हैं? विज्ञान की प्रगति को आप देख नहीं रहे क्या? ऐसी-ऐसी चीजें बनती हुई चली जा रही हैं। एक किरण एक्स-रे के तरीके से, एक्स-रे की किरण फेंकी जाती है। किरण फेंकी जाय, न गैस फेंकने की जरूरत है, न कुछ फेंकने की जरूरत है, सारे का सारा इलाका जो मनुष्य रह रहा है, वहाँ बैठे के बैठे रह जायेंगे, उठे के उठे रह जायेंगे, चलने-फिरने के लिये कोई मौका नहीं आयेगा। ऐसे-ऐसे वैज्ञानिक हथियार तैयार हो रहे हैं, जो दुनिया का सफाया करना हो तो बहुत जल्दी सफाया हो सकता है। विनाश की दिशा में विज्ञान के बढ़ते हुए चरण जिस तेजी से बढ़ रहे हैं, अगर चाहे तो एक खराब दिमाग का मनुष्य सारी दुनिया को इस सुन्दर वाले भूमण्डल को, जिसको बनाने में लाखों वर्षों तक मनुष्य को श्रम करना पड़ा, इसका सफाया किया जा सकता है। आज ऐसा वक्त है। इन्सान जितना घटिया होता चला जाता है, उतना घटिया आदमी पहले कभी नहीं हुआ था।

दुनिया के पर्दे में, इतिहास ये बताता है कि मनुष्य इतना घटिया आदमी कभी नहीं हुआ। आदमी समझदारी के हिसाब से बढ़ रहा है, विद्या उसके पास ज्यादा आ रही है, समझदारी उसके पास ज्यादा आ रही है, पैसा उसके पास ज्यादा

आ रहा है, अच्छे मकान ज्यादा आ रहे हैं, सब चीज ज्यादा आ रही है, पर ईमान के हिसाब से और दृष्टिकोण के हिसाब से आदमी इतना कमजोर, इतना घटिया, इतना स्वार्थी, इतना चालाक, इतना बेईमान, इतना कृपण, इतना ठग होता हुआ चला जा रहा है, कि मुझे शक है कि आदमी की यही ठगी, यही कृपणता और यही स्वार्थपरता, जो आज हमारे और आपके ऊपर हावी हो गई है। इसी हिसाब से, इसी क्रम से, चाल से चली तो एक आदमी, दूसरे आदमी को जिंदा निगल जायेगा। आदमी को अपनी छाया पर विश्वास नहीं रहेगा कि ये मेरी छाया है कि नहीं और ये मेरी छाया मेरी सहायता करेगी कि नहीं। आज ऐसी ही विचित्र स्थिति है बेटे! हम कुछ कह नहीं सकते। जैसी दुनिया की विचित्र स्थिति है, भयानकता, आज हमारे सामने खड़ी है। युग का एक पक्ष विनाश के लिये मुँह फाड़कर खड़ा है।

अगर इसी क्रम से, इसी राह पर जिस पर आज हम चल रहे हैं, वैज्ञानिक उन्नति, मनुष्यों के भीतर स्वार्थपरता की वृद्धि, मनुष्यों की सन्तानों पर नियंत्रण का अभाव यही क्रम चला तो दुनिया नष्ट हो जायेगी। आप ध्यान रखना सौ वर्ष बाद हम तो जिंदा नहीं रहेंगे, आपमें से कोई जिंदा रह जाये तो देखना दुनिया का क्या हाल होता है, अगर ये स्थिति बनी रही तो। एक और स्थिति है, जिसका हम ख्वाब देखते हैं। सपने हम देखते हैं। हमारे स्वप्नों की दुनियाँ बड़ी खूबसूरत दुनियाँ है, ऐसी दुनियाँ है, जिसमें प्यार भरा हुआ है, मोहब्बत भरी हुई है, विश्वास भरे हुए हैं, एक-दूसरे के प्रति सहकार भरे हुए हैं, एक-दूसरे की सेवा भरी हुई है, इतनी मीठी, इतनी मधुर दुनियाँ है, हमारे दिमाग में घूमती है। अगर हमारे सपने कदाचित् साकार हो गये तो ये भरा हुआ विज्ञान, ये भरा हुआ धन, ये भरी हुई विद्या, ये भरी हुई सुविधाएँ, आदमी के लिये मैं सोचता हूँ स्वर्ग के वातावरण को उतार करके जमीन पे ले आयेगी।

हजारों-लाखों वर्ष पूर्व न सड़कें थीं, न बिजली थी, न रोशनी थी, न टेलीफोन था, न डाकखाना था, न कुछ भी नहीं था। ऐसे अभाव के जमाने में स्वर्गीय जिन्दगी जीया करते थे। आज बेहतरीन परिस्थितियों में दुनिया में इतनी शान्ति, इतनी सरसता, इतना सौंदर्य, इतना सुख पैदा कर सकते हैं कि हम नहीं कह सकते। जिस चौराहे पर हम खड़े हुए हैं, एक विनाश का चौराहा और एक उन्नति का चौराहा है। उन्नति में क्या होने वाला है, इसके लिये आपको भूमिका निभानी पड़ेगी। 'काष्टींग' वोट आपका है। दो वोट बराबर होते हैं। एक वोट

प्रेसीडेन्ट का होता है। प्रेसीडेन्ट दोनों वोट बराबर वाले में से जिसको चाहे उसके पक्ष में अपना डाल सकता है, उसी को जिता सकता है। आप लोग, आप लोग 'बैलेंसिंग पॉवर' में हैं। आप चाहें तो अपना वोट उसकी ओर डाल सकते हैं, जो पक्ष विनाश की ओर जा रहा है। आप चाहें तो अपना वोट उसके पक्ष में डाल सकते हैं, जो सुख और शान्ति लाने के लिये जा रहा है।

मैं सोचता हूँ, आपको ऐसा ही करना चाहिये। सुख-शान्ति के लिये अपना वोट डालना चाहिये और आपको अपनी वर्तमान जिन्दगी, जानवरों के तरीके से नहीं जीनी चाहिये। आपको अपनी वर्तमान जिन्दगी मनुष्यों के तरीके से, विचारशीलों के तरीके से, समझदार के तरीके से खर्च करना चाहिये। ये विशेष समय है, ऐसा समय फिर आने वाला नहीं है। आज की बात समाप्त।

।। ॐ शान्तिः ।।

मनुष्य जाति आज जिस दिशा में चल पड़ी है, उससे उसकी महत्ता ही नहीं, सत्ता का भी समापन होते दीखता है। संचित बारूद के ढेर में यदि कोई पागल एक माचिस की तीली फेंक दे, तो समझना चाहिए कि यह अपना स्वर्गोपम धरालोक धूलि बनकर आकाश में न छितरा जाए। विज्ञान की बढ़ोत्तरी और ज्ञान की घटोत्तरी ऐसी ही विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न करने में बहुत विलम्ब भी नहीं लगने देंगी। ऐसा दीखता है।

—परिवर्तन के महान् क्षण - (क्रान्तिधर्मी साहित्य पुस्तकमाला - 06)

युग परिवर्तन के आधार को यदि एक शब्द में व्यक्त करना हो तो इतना कहने भर से भी काम चल सकता है कि अगले दिनों निष्ठुर स्वार्थपरता को निरस्त करके उसके स्थान पर उदार भाव-संवेदनाओं को अन्तःकरण की गहराई में प्रतिष्ठित करने की, उभारने की, खोद निकालने की अथवा बाहर से सराबोर कर देने की आवश्यकता पड़ेगी।

—सतयुग की वापसी - (क्रान्तिधर्मी साहित्य पुस्तकमाला - 05)

संकल्पवान्-व्रतशील बनें

आपको यहाँ से जाने के बाद में कई काम करने हैं, बड़े मजेदार काम करने हैं, बहुत अच्छे काम करने हैं। लेकिन ये चलेंगे नहीं, बस आपका मन बराबर ढीला होता चला जायेगा। मन की काट करने के लिये आप एक विचारों की सेना और विचारों की श्रृंखला बनाकर के तैयार रख लीजिए। विचारों से विचारों को काटते हैं, जहर को जहर से मारते हैं, काँटे को काँटे से निकालते हैं। कुविचार जो आपके मन में हर बार तंग करते रहते हैं, उसके सामने ऐसी सेना खड़ी कर लीजिए, जो आपके बुरे विचारों के सामने लड़ सकने में समर्थ हो। अच्छे विचारों की भी एक सेना होती है।

बुरे विचार आते हैं, लोभ के विचार आते हैं, लालच और बेईमानी के विचार आते हैं, आप ईमानदारों के समर्थन के लिये उनके इतिहास और वर्ण और स्वास्थ्य और आप्त–पुरुषों के वचन उन सबको मिलाकर के रखिए। हम ईमानदारी की कमाई खायेंगे, बेईमानी की कमाई हम नहीं खायेंगे। काम–वासना के विचार आते हैं, व्यभिचार के विचार आते हैं। आप ऐसा किया कीजिए, कि उसके मुकाबले की एक और सेना खड़ी कर लिया कीजिए। अच्छे विचारों वाली सेना। जिसमें आपको यह विचार करना पड़े, हनुमान् कितने सामर्थ्यवान् हो गये ब्रह्मचर्य की वजह से। भीष्म पितामह कितने समर्थ हो गये, ब्रह्मचर्य के कारण। आप शंकराचार्य से लेकर के और अनेक व्यक्तियों, संतों की बात याद कर सकते हैं। महापुरुषों की जिन्होंने अपने कुविचारों से लोहा लिया है।

कुविचारों से लोहा नहीं लिया होता तो बिचारे संकल्पों की क्या बिसात थी, चलते ही नहीं, टूट जाते। कुविचार हावी हो जाते और जो विचार किया गया था, वो कोने पे रखा रह जाता। ऐसे समय में विचारों की एक सेना तैयार खड़ी कर लीजिये तो आपके लिये स्वर्ग होगा। जब बेईमानी के विचार आयें, काम–वासना के विचार आयें, ईर्ष्या के विचार आयें, अध:पतन के विचार आयें तो आप उनकी रोकथाम के लिये अपनी सेना को तैयार कर दें और उनके सामने फिर लड़ा दें। लड़े बिना काम कैसे चलेगा, बताइये न? रावण से लड़े बिना कहीं

काम चला? दुर्योधन से लड़े बिना काम चला? कंस से लड़े बिना काम चला? लड़ाई मोहब्बत की है अथवा कैसी है, हिंसा की है, अहिंसा की है, ये मैं इस वक्त बात नहीं कह रहा हूँ। मैं तो यह कह रहा हूँ कि आपको अपनी बुराइयों, कमजोरियों से मुकाबला करने के लिये और समाज में फैले अनाचार से लोहा लेने के लिए भी, हर हालत में आपको ऐसे ऊँचे विचारों की सेना बनानी चाहिए जो आपको भी हिम्मत देने में समर्थ हो सके और आपके समीपवर्ती इस वातावरण में भी नया माहौल पैदा करने में समर्थ हो सके। ये संकल्प भरे विचार होते हैं।

हजारी किसान ने ये फैसला किया था कि ''मुझे हजार आम के बगीचे लगाने हैं।'' बस घर से निकल पड़ा तो उसकी बात लोगों ने मान ली। क्यों मान ली? वो संकल्पवान् था। संकल्पवान् नहीं होता, तब ऐसे ही व्याख्यान करता फिरता, ''साहब! पेड़ लगाइये, हरियाली बढ़ाइये।'' तब कोई लगाता क्या? संसार इतना प्रचार किया करती है, कोई सुनता है क्या? सुनने के लिये ये बहुत जरूरी है कि जो आदमी उस बात को कहने के लिये आया है, वो संकल्पवान् हो। संकल्पवान् होने का अर्थ है, ऊँचे सिद्धान्तों को अपनाने का निश्चय। अवश्य निश्चय में कोई, रास्ते में कोई व्यवधान न आये, इसीलिये थोड़े-थोड़े समय के लिये ऐसे अनुशासन जिससे कि स्मरण बना रहे, मनोबल बढ़ता रहे, मनोबल गिरने न पाये। संकल्प की याद करके आदमी अपनी गौरव-गरिमा को बनाये रह पाये। इसलिये आपको व्रतशील होना जरूरी है।

पीले कपड़े पहनने के लिये आपको कहा गया है, ये व्रतशील होने की निशानी है। दूसरे लोग पीले कपड़े नहीं पहनते, आपको पहनना चाहिए। इसका मतलब ये है, दुनिया का कोई दबाव आपके ऊपर नहीं है और दुनिया की नकल करने में और अनुकरण करने में आपकी कोई मर्जी नहीं है। ये क्या है, ये व्रतशील की निशानी है। भोजन जैसा भी हो, खराब है तो खराब से क्या करें? खराब से ही काम चलायें, लेकिन नहीं साहब! जायका अच्छा नहीं लगता, वहाँ कचौड़ी खायेंगे। मत कीजिए ऐसा। तरह-तरह के व्यंजन और तरह-तरह के स्वादिष्ट भोजन की बात मत चलाया कीजिए। फिर क्या होगा? खान-पान का जो लाभ होगा तो होगा ही, खान-पान के लाभों को मैं इतना महत्त्व देता नहीं, जितना कि इस बात को महत्त्व देता हूँ कि आपने अपने मन को कुचल डालने का, मन से लोहा लेने का, मन को बदल डालने के लिये आपने वो हथियार उठा लिया,

जिससे आपका दुश्मन, आपका दोस्त बन सकता है। आपका दुश्मन नम्बर एक-आपका मन और आपका दोस्त नम्बर एक-आपका मन। दुश्मन को दोस्त के रूप में बदलने के लिये जिस दबाव की जरूरत है, जिस आग की भट्ठी में नया औजार ढालने की जरूरत है, उस भट्ठी का नाम है—संकल्प, आत्मानुशासन। अपने आपका आत्मानुशासन स्थापित करने के लिये आपको व्रतशील होना चाहिए, संकल्पवान् होना चाहिए और संकल्पों में व्यवधान उत्पन्न न हो, इसलिये आपको कोई न कोई ऐसे नियम और व्रत समय-समय पर लेते रहना चाहिए। इसका अर्थ ये होता है कि जब तक अमुक काम न हो जायेगा, तब तक हम अमुक काम नहीं करेंगे।

संकल्पवान् बनिए। संकल्पवान् ही महापुरुष बने हैं, संकल्पवान् ही उन्नतिशील बने हैं, संकल्पवान् ही सफल हुए हैं और संकल्पवानों ने ही संसार की नाव को पार लगाया है। आपको संकल्पवान् और व्रतशील होना चाहिए। नेकी आपकी नीति होनी चाहिए। उदारता आपका फर्ज होना चाहिए। आपने अगर ऐसा कर लिया हो तब फिर आप दूसरा कदम ये उठाना कि हम ये काम नहीं किया करेंगे। समय-समय पर सोच लिया कीजिए कि गुरुवार के दिन, नमक न खाने की बात, ब्रह्मचर्य से रहने की बात, दो घण्टे मौन रहने की बात, आप भी ऐसे व्रतशील होकर के कुछ नियम पालन करते रहेंगे और उसके साथ में किसी श्रेष्ठ कर्तव्य और उत्तरदायित्व का ताना-बाना जोड़ के रखा करेंगे तो आपके विचार सफल होंगे, आपका व्यक्तित्व पैना होगा और आपकी प्रतिभा तीव्र होगी और आप एक अच्छे व्यक्ति के रूप में शुमार होंगे। अगर आप आत्मानुशासन और अपनी व्रतशीलता का महत्त्व समझें और उसे अपनाने की हिम्मत बढ़ायें। आज की बात समाप्त।

।। ॐ शान्तिः ।।

सही अध्यात्म क्या है?

बेटे! सही अध्यात्म कैसा होता है? सही अध्यात्म के लिए क्या करना चाहिए? सही भजन कैसे किया जा सकता है? कौन सा तरीका ऐसा है जिससे भगवान की कृपा मनुष्य पर बरस सकती है और भगवान के समीप आ करके आदमी फायदा उठा सकता है। मित्रो! मैंने यही प्रयोग अपने आप में अपने लिए किया और अपने लिए प्रयोग करने के पश्चात् लोगों को ये बताया, हमने ये प्रयोग किए हैं और आपको इस रास्ते पर चलना चाहिए। जब कभी भी आपको आस्तिकता और आध्यात्मिकता अपनाने के लिए जरूरत हो, तो आप इसी रास्ते पर चलें। इसी रास्ते पर चलेंगे तो मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आपको ये शिकायत नहीं करनी पड़ेगी कि आस्तिकता गलत है, भगवान् गलत है, उपासना से लाभ नहीं होता।

नये युग की आस्तिकता की शुरुआत अगर होगी तो कहाँ से होगी? तो वो चाइना से होगी और रसिया से होगी। नहीं साहब, वो तो कम्युनिस्ट हैं। हाँ बेटे! मैं कम्युनिस्टों को आप से ज्यादा ईमानदार मानता हूँ। आप बेईमान हैं। और वो, ईमानदार आदमी। क्यों? क्योंकि उनकी अकल ने ये कहा है कि ईश्वर नहीं है तो, उनने खुले आम कहा है; नहीं, कोई ईश्वर नहीं है। हमने कहा, सारी दुनिया ईश्वर को मानती है। सारी दुनिया मानती रह सकती है, हम नहीं मानते। ईमानदार आदमी। अगर आप उसको ये जिस दिन बता देंगे, साबित कर देंगे कि ईश्वर का वजूद है, है; तो मेरा अपना ऐसा विश्वास है कि वैज्ञानिक और बुद्धिजीवी होने के नाते, ईमानदार आदमी होने के नाते, सबसे पहले वो आस्तिकता को स्वीकार कर लेगा।

बेटा! हमको एक काम के लिए भेजा गया, कि हम आस्तिकता को जिंदा रखें और आस्तिकता को जीवित बनाए रखने के लिए हम काम करें। आस्तिकता के रास्ते पर चलने से, भगवान का रास्ता चलने से आपको लाभ होगा, फायदा होगा। भौतिक लाभ भी होगा और लौकिक लाभ भी होगा, आंतरिक लाभ भी होगा, सामाजिक लाभ भी होगा, सम्मान भी मिलेगा। ऐसे बहुत सारे आश्वासन दिये थे, जैसा कि मैं कल कह रहा था आपसे गायत्री मंत्र की महिमा के सम्बन्ध में। न केवल गायत्री मंत्र की महिमा के सम्बन्ध में बल्कि प्रत्येक उपासना के सम्बन्ध में। हमने एक काम किया कि हमने लोगों को एक नमूना पेश किया, एक किताब पेश की। कौन सी किताब और नमूना है? बेटे! हमने 55 पन्नों की

किताब लिखी है और उसका प्रत्येक पन्ना लोहे की कलम से और सोने के पत्रों पर लिखा हुआ है। उस 55 पन्ने की किताब का नाम क्या है? बेटे! हमारी जिन्दगी है। हमने पूरी जिन्दगी में एक ही बात लोगों के सामने की है पेश—आस्तिकता कैसे हो सकती है? उपासना कैसे की जानी चाहिए? और उपासना का स्वरूप क्या हो सकता है? उपासना का स्वरूप अगर आप सही रूप से करें, अगर आप उसके प्रोसीजर पर ठीक तरह से चलते हैं तो हम आपको प्रत्यक्ष उदाहरण देते हैं, परोक्ष नहीं। आस्तिकता को अपनाने वाला भौतिक दृष्टि से, आत्मिक दृष्टि से, सम्मान की दृष्टि से, श्रेय की दृष्टि से उतना ज्यादा नफा उठा सकता है जितना कि और किसी तिजारत में नहीं हो सकता। और कोई तिजारत नहीं है ऐसी। कितना? जितना कि आध्यात्मिकता के क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद मनुष्य जितना लाभ उठा सकता है। मैं ये कहता हूँ—इतना ज्यादा लाभदायक धन्धा कोई भी नहीं है। नहीं, महाराज जी! डकैती और चोरी का। नहीं बेटे! डकैती और चोरी का भी धन्धा इतना लाभदायक नहीं है। ये धन्धा इतना सेफ है, आप जंगल में रहिए, हिमालय पे चले जाइए, कहीं भी रहिए; कोई आपको छेड़ने वाला नहीं है, कोई चाकू दिखाने वाला नहीं है, कोई इनकम टैक्स वाला आपके पास आने वाला नहीं है, कोई चक्कर नहीं है, सब आपकी सहायता करने वाले हैं। मैं ये कहता हूँ आध्यात्मिकता का धन्धा बहुत पेईंग और बहुत फायदेमंद है। नहीं साहब! हमको आपकी बात पर विश्वास नहीं है। बेटे! विश्वास नहीं है, तो हम तेरे सामने गवाही के रूप में पेश होते हैं। गवाही के रूप में पेश होते हैं कि ये सब धन्धा फायदेमंद है। हमने कोई धन्धा नहीं किया है, हमने न आज तक व्यापार किया, न हमने खेती-बाड़ी की, न हमने किसी की नौकरी की। कुछ काम नहीं किया है, एक ही धन्धा किया है—उस तिजारत का नाम है भगवान की शरण पकड़ना।

भगवान की शरण किस तरीके से पकड़ी जा सकती है, यही हमारे जीवन का सारे-का-सारा सार है। हमने दो मोर्चों पर लड़ाई लड़ी है। प्रच्छन्न नास्तिकों को, धर्म का कलेवर ओढ़कर चलने वालों को, धर्म के प्रति बाहर से-जीभ से बात कहने वालों को और भीतर-ही-भीतर खोखले और कमजोर लोगों को हमने ये कहा है कि आस्तिकता अगर आप सही ढंग से करें, तो आपको समय न मिलने की फुर्सत का बहाना नहीं बनाना पड़ेगा। और आपको मन न लगने की शिकायत न करनी पड़ेगी क्योंकि आप उसके फायदे को जान जाएँगे। जब हम फायदे को नहीं जानते तो मन नहीं लगता। सीधी-सी बात है। हमने ये कहा लोगों से—ये फायदे का काम है।

।। ॐ शान्तिः ।।